NOTICE,

Registered under Section XVIII of act

XXV of 1867.

All rights reserved.

आवश्यक सूचना।

इस किताबकी रजिष्ट्री सन् १८६६ के ऐक्ट २५ सैक्शन १८ के मुताबिक़ सरकारमें हो गई है। कोई शख्स इसके फिरसे छापने, छपवाने या इसको उलट पुलटकर काम निकालनेका अधिकारी नहीं है। यदि कोई शख्स लोभ के वशीभूत होकर, ऐसा काम करेगा तो राज-दण्डसे दण्डित होगा।

देशकी बात क्या है। दुःखका विषय है कि—सम्पादके मौकेपर, परन्तु क़ानूनी झगड़ोंसे बचते हुए, ऐसा काम भी हिन्दी साहित्य सेवियोंने करना आरम्भ किया है; जिससे हृदयमें दुःख और क्षोभ होता है। साहित्यकी उन्नति, देशमें विद्याका प्रचार तथा भारतवासियोंका उपकार न होकर साहित्यकी अवनति, विद्याके प्रचारमें बाधा और भारतके नवजीवनोंका अपकार होता प्रत्यक्ष दिखाई देता है तथा पाठक ठगे जाते हैं। अब तो हिन्दीके ग्रन्थोंकी क्या दशा है; यह सभीको मालूम हो है। फिर जिनकी शिक्षाकी ओर रुचि हुई, उनकी रुचि बिगाड़कर हिन्दी-ग्रन्थ-प्रचारमें बाधा डालना कदापि उचित नहीं है ऐसा करनेसे सर्वसाधारणकी शिक्षामें क्षति हो सकती है अब, यही कारण है कि सावधान करनेके लिये इतना लिखना पड़ा—बात क्या है, कम नहीं लिख सकते। साहित्यकी बिना कारण अवनति होती देख दुःख हुआ, इसके इतना ही लिख दिया—हमारी बातें सत्य है या नहीं, निष्पक्ष और उदार हृदय समालोचकगण एवं पाठकगण ही, ध्यानसे पढ़कर तुलना करते हुए स्वयं विचार लें।

भवदीय —

हरिदास।

हिन्दी-बँगला शिक्षा

दूसरा भाग

प्रथम खण्ड।

बँगला व्याकरण।

जिस पुस्तकके पढ़नेसे बंगला भाषाका ठीक ठीक लिखना और बोलना आता है, उसका नाम "बंगला व्याकरण" है।

वर्ण-ज्ञान।

(१) [illegible]
[illegible]

पद मिलकर एक वाक्य बना है। इसमें "হরি" इस पदमें হ, রি ये दो छोटे टुकड़े या भाग हैं और হ+অ, র+ই ये चार छोटेसे छोटे (यानी जिससे छोटा टुकड़ा नहीं हो सकता ऐसे) टुकड़े या भाग हैं। इसीसे इन चारोंमें से प्रत्येक को वर्ण कहते हैं। इसी तरह "পড়িতেছে" इस पदमें প, ড়ি, তে, ছে ये चार छोटे भाग और প+অ, ড়+ই, ত+এ, ছ+এ ये आठ छोटेसे छोटे भाग हैं, इसलिये इनमें से प्रत्येक को वर्ण कहते हैं।

२। बँगला भाषामें सब लेकर उनचास वर्ण या अक्षर हैं। इन्हीं अक्षरोंके समुदाय को वर्णमाला कहते हैं।

३। वर्ण दो भागोंमें बँटे हैं,—स्वर और व्यञ्जन। इनमें १३ स्वर और ३६ व्यञ्जन वर्ण हैं।

स्वर वर्ण।

४। जो वर्ण बिना किसी दूसरे वर्णकी सहायता लिये ही (अपने आप) उच्चारित होते हैं, उनका नाम स्वरवर्ण है। स्वर वर्ण ये हैं,—অ, আ, ই, ঈ, উ, ঊ, ঋ, ঌ, এ, ঐ, ও, ঔ। *

---

* ঌ का प्रायः व्यवहार नहीं होता। केवल কৢ, ঌ, ৡ इत्यादि कुछ थोड़ोंसी धातुओंके सिद्धनेमें उनकी जरूरत होती है, इसलिये कोई कोई लोग, ঌ को छोड़कर स्वर वर्ण की संख्या बारह ही मानते हैं। बंगला भाषामें दीर्घ ৡ नहीं है किन्तु संस्कृत भाषामें उसका चलन है।

५। स्वर वर्ण दो प्रकारके हैं:—(१) ह्रस्व, और (२) दीर्घ। অ, ই, উ, ঋ, ঌ ये पांच ह्रस्व और আ, ঈ, ঊ, ৠ, ৡ, ঐ, ও, ঔ, ये आठ दीर्घ हैं।

অ, ই, উ, ঋ, ঌ इन पांचोंके उच्चारण में थोड़ा समय लगता है और আ, ঈ, ঊ, ৠ, ৡ, ঐ, ও, ঔ इन आठोंके उच्चारणमें उससे कुछ अधिक समयकी ज़रूरत होती है।

स्वर वर्ण जब व्यञ्जन वर्णसे मिलता है तब उसे "कार" (मात्रा) कहते हैं। অ और ঌ इन दोनोंको छोड़कर और और स्वर वर्णोंको व्यञ्जन वर्णोंके साथ मिलानेसे उनका रूप बदल जाता है। जैसे

আ=া, ই=ি, উ=ু, ঊ=ূ, ঋ=ৃ, ৠ=ৄ,
এ=ে, ঐ=ৈ; ও=ো, ঔ=ৌ।

व्यञ्जन या हल वर्ण।

६। स्वर वर्णोंकी सहायता बिना जो वर्ण साफ़ साफ़ उच्चारित नहीं हो (सके) उसे व्यञ्जनवर्ण या हलवर्ण कहते हैं। इसमें या ऐसे स्वर वर्णको मिलाकर न पढ़नेसे व्यञ्जन वर्णका उच्चारण नहीं हो सकता। याद रहे कि [illegible]

[illegible]

इन्हीं तीन वर्णोंके रूपान्तर हैं। ये वर्ण जब पदके बीचमें या अन्तमें रहते हैं तब ये ड़, ढ़, य, माने जाते हैं। जैसे—बड़, मूढ़, नयन इत्यादि।

जिस व्यञ्जन वर्णमें कोई स्वर नहीं रहता, उसके नीचे ( ) ऐसा चिह्न देना पड़ता है; इस चिह्न या निशानका नाम 'हसन्त चिह्न' है *। जैसे—सम्राट् इत्यादि।

७। क से म तक, पचीस वर्णोंको स्पर्शवर्ण कहते हैं। स्पर्श वर्ण पांच वर्गोंमें विभक्त हैं, आदि के या पहले वर्णको लेकर वर्गका नाम होता है। जैसे—क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग।

८। य, र, ल, व, इन चारोंका नाम अन्तःस्थ वर्ण है।

---

* व्यञ्जन वर्णके बाद, स्वर वर्ण रहनेसे वह स्वर वर्ण व्यञ्जन वर्णमें मिल जाता है। जैसे—कम = क् + अ + म् + अ। किन = क् + इ + न् + अ। बालिका = ब् + आ + ल् + ई + क् + आ। चन्द्र = च् + अ + न् + द् + र् + अ

हर एक पदमें दो या उससे अधिक वर्ण रहते हैं; इसी प्रकार वर्ण-विन्यास द्वारा यह साफ साफ मालूम हो जाता है कि कौन वर्ण पहिले और कौन वर्ण पीछे है।

– इसका नाम समास चिह्न है। + इसका नाम युक्त चिह्न है अर्थात् इसके द्वारा दो वर्णों का जोड़ या मेल समझा जाता है

श, ष, स, ह, इन चारों का नाम ऊष्म वर्ण है; (ং) और (ঁ) का नाम अनुनासिक वर्ण है और (ঃ) विसर्गका नाम अयोगवाह वर्ण है।*

८। उच्चारण-स्थानके भेदोंसे वर्णोंके नामोंमें भी भेद होता है। जैसे—

অ আ হ ক খ গ ঘ ঙ इनका उच्चारण-स्थान कण्ठ है; इसलिये इन्हें कण्ठ्य वर्ण कहते हैं।

ই ঈ চ ছ জ ঝ ঞ শ য় इनका उच्चारण-स्थान तालू है इसलिये इन्हें तालव्य वर्ण कहते हैं।†

ঋ ৠ ট ঠ ড ঢ ণ র ষ ড় ঢ় इनका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है इसलिये इन्हें मूर्द्धन्य वर्ण कहते हैं।‡

ঌ ত থ দ ধ ন ল স इनका उच्चारण-स्थान दन्त है इस लिये इन्हें दन्त्यवर्ण कहते हैं।

উ ঊ প ফ ব ভ ম इनका उच्चारण स्थान ओष्ठ है; इसीसे इन्हें ओष्ठ्यवर्ण कहते हैं।

---

* कोई कोई अनुस्वार और विसर्ग इन दोनोंको ही अयोगवाह कहते हैं।

† य यह वर्ण पदके बीचमें या अन्तमें लगाया जाता है। जैसे [illegible]।

‡ ड़ और ढ़ इन दोनों वर्णों का प्रयोग भी पदके बीचमें या अन्तमें होता है जैसे [illegible]।

ए ऐ, इन दो वर्णोंका उच्चारण-स्थान कण्ठ और तालू है इसलिये ये कण्ठ-तालव्य वर्ण हैं।

ओ औ इन दो वर्णोंका उच्चारण-स्थान कण्ठ और ओठ है इस वास्ते ये कण्ठोष्ठ वर्ण हैं।

अन्तःस्थ 'व' का उच्चारण स्थान दन्त और ओठ है; इस लिये यह दन्त्योष्ठ वर्ण है।

अनुस्वार और चन्द्रविन्दु नाकसे उच्चारित होते हैं, इस लिये ये अनुनासिक वर्ण हैं।

विसर्ग 'आश्रय स्थान' भागी है, अर्थात् जब जिस स्वरवर्ण के बाद रहता है, तब उसी स्वर वर्णका उच्चारण-स्थान विसर्गका उच्चारण-स्थान होता है। विसर्गका उच्चारण स्वर वर्णके बिना, 'ह' के उच्चारणकी तरह होता है। जैसे—पुनः = पुनह्।

विसर्ग जिस स्वर वर्णके बाद होता है वह दीर्घकी तरह उच्चारित होता है। जैसे—प्रातःकाल।

संयुक्त वर्ण।

१०। यदि एक व्यञ्जन वर्ण के बाद एक या उससे ज़ियादा व्यञ्जन वर्ण हों और बीचमें स्वर वर्ण न हो, तो वे सब व्यञ्जन वर्ण एक साथ मिल जाते हैं। इस तरह मिलकर, व्यञ्जन वर्ण जो रूप धारण करते हैं उनको युक्ताक्षर कहते हैं।

संयुक्त या मिले हुए वर्णके पहलेका वर्ण (पूर्व्ववर्ण) ऊपर और पीछेका वर्ण (परवर्ण) प्रायः नीचे लिखा जाता है। जैसे —ক্ + ক্ = ক্ক; গ্ + ন্ = গ্ন; ন্ + ত্ + র্ = ন্ত্র।

थोड़ेसे संयुक्त वर्णोंका रूप बदल जाता है। वे नीचे दिखाये गये हैं। जैसे—ঙ + গ = ঙ্গ, ক + ষ = ক্ষ, হ্ + ম = হ্ম, চ + ঞ = চ্ঞ, ট + ট = ট্ট, ত + ত = ত্ত, ক + ত = ক্ত, হ + ণ = হ্ণ, হ + ন = হ্ন, ষ্ + ণ = ষ্ণ, হ + ম = হ্ম, ত্ + র = ত্র, শ + র = শ্র, গ + র = গ্র इत्यादि।

র্ किसी व्यञ्जन वर्णके पहिले रहनेसे, बादके वर्णके माथे पर जाकर (´) ऐसा आकार धारण करता है। इसका नाम रेफ है। रेफ युक्त कोई कोई वर्णका द्वित्व हो जाता है अर्थात् वे वर्ण दो हो जाते हैं। जैसे—র্ + ক = র্ক। और; কার্য্য, চর্ম্ম, নির্দ্দয় इत्यादि।

'য' द्वित्व होनेसे 'য্য', 'ব' द्वित्व होनेसे 'ব্ব', 'ম' द्वित्व होनेसे 'ম্ম', और ত द्वित्व होनेसे 'ত্ত', ऐसा रूप धारण करता है। ক, জ और ন युक्त होनेसे 'ক'कार और 'জ'कार का उच्चारण 'গ'कार के समान होता है; जैसे—যজ্ঞ, রুক্মিণী, জ্ঞান इत्यादि। 'ম'कारके साथ ক या খ युक्त होनेसे वह 'ম'-कार 'ঙ'कार की तरह उच्चारित होता है। जैसे—সংস্কার, মরীচিকা। जब 'হ' के नीचे कोई वर्ण लगता है तब वह হ नीचेवाले वर्णके बाद उच्चारित होता है, जैसे [illegible]

[illegible] इत्यादि

जब 'य' किसी वर्ण से संयुक्त होता है तो उसका उच्चारण 'ईअ' और अन्तःस्थ 'व' किसी वर्णमें युक्त होनेसे उच्चारण 'उअ' ऐसा होता है; जैसे—विद्या=विद्+ईअ, विश्व=विश्+उअ इत्यादि।

सन्धि प्रकरण।

११। दो वर्ण पास पास होनेसे आपसमें एक दूसरेसे मिल जाते हैं, उस मिलनको सन्धि कहते हैं।

१२। सन्धि दो प्रकार की है:—स्वर सन्धि और व्यञ्जन सन्धि।

१३। एक स्वर वर्णके साथ दूसरे स्वर वर्णके मिलनको स्वर-सन्धि कहते हैं।

१४। व्यञ्जन वर्णके साथ व्यञ्जन वर्ण या व्यञ्जनवर्णके साथ स्वरवर्णके मिलनको व्यञ्जन-सन्धि कहते हैं।

स्वर-सन्धि।

१५। अ के बाद अ या आ रहनेसे, और दोनोंके मिलनेसे आ होता है और वह आ पूर्व्ववर्णमें मिल जाता है। जैसे शीत+अंशु=शीतांशु। यहांपर शीत शब्द के अन्तमें अ है और पीछे अंशु शब्दका अ है, इसलिये इन दोनोंके मिलनेसे आकार हुआ और वह आकार तकार में मिलकर "शीतांशु"

पद हुआ। इसी तरह पीत + अम्बर = पीताम्बर, कुम्भ + आकर = कुम्भाकर।

१६। अः के बाद अ रहता या अ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ओ होता है, और वह ओ पूर्व वर्णमें मिल जाता है। जैसे विद्यः + अभ्यास = विद्योऽभ्यास। यहांपर विद्या शब्द के अन्तमें अः है और उस अः के बाद अभ्यास शब्दका अ है, इसलिये अः और अ मिलकर ओ हुआ और वह ओ पूर्व वर्ण "द" में मिलकर "विद्योऽभ्यास" पद हुआ। इसी तरह [illegible] = [illegible], [illegible] = [illegible] इत्यादि।

१७। इ के बाद ई या इ रहनेसे, और दोनोंके मिलनेसे ई होती है, और वह ई पूर्व वर्णमें मिल जाती है। जैसे कवि + ईश = कवीश। यहांपर कवि के इकार के बाद ईश शब्द का ईकार है इसलिये दोनों इकारों के मिलनेसे ईकार हुआ और वहीं ईकार पूर्व वर्ण वकार में मिलकर "कवीश" पद हुआ। इसीतरह गिरि + ईश = गिरीश, [illegible] = [illegible] इत्यादि

१८ [illegible]

१८। उ के बाद उ या ऊ रहनेसे और दोनों के मिलनेसे ऊ होता है, यह ऊ पूर्व वर्ण में मिल जाता है। जैसे—विधु+उदय=विधूदय। इसी तरह साधु+उक्ति=साधूक्ति। तनु+ऊर्द्ध=तनूर्द्ध। विधु+उदय=विधूदय। यहाँपर विधु शब्दके ह्रस्व उ के बाद उदयका उ है; इसलिये ह्रस्व उ के बाद ह्रस्व उ रहनेके कारण और दोनोंके मिलनेसे दीर्घ ऊ हुआ। अब इसी दीर्घ ऊके पूर्ववर्ण ध में मिलनेसे विधूदय पद बन गया। साधूक्ति—साधु+उक्ति=साधूक्ति। यहाँ पर साधु इस शब्दके ह्रस्व उकारके बाद उक्ति शब्दका ह्रस्व उ है, इसीसे ह्रस्व उकार के बाद ह्रस्व उ रहनेके कारण और दोनोंके मिलनेसे दीर्घ ऊ हुआ और वह ऊ पूर्ववर्ण ध कारमें मिलकर "साधूक्ति" पद बना। तनूर्द्ध—तनु+ऊर्द्ध=तनूर्द्ध। यहाँ पर तनु शब्दके ह्रस्व उकारके बाद ऊर्द्ध शब्दका दीर्घ ऊ है इसलिये ह्रस्व उकारके बाद दीर्घ ऊ रहनेके कारण और दोनोंके मिलनेसे दीर्घ ऊ हुआ और वह दीर्घ ऊ पूर्ववर्ण न में मिलकर "तनूर्द्ध" पद बना।

२०। ऊ के बाद उ या ऊ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ऊ होता है, और ऊ पूर्ववर्णमें मिल जाता है। जैसे [illegible] + [illegible] = [illegible]। यहाँ पर [illegible] ऊ के बाद [illegible] का उ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ऊ [illegible] पूर्ववर्ण [illegible] में युक्त हुआ। इसी तरह [illegible] हुआ है।

२१। [illegible] या [illegible] के बाद [illegible] रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे [illegible] हो जाता है, और [illegible] पूर्ववर्णमें मिल जाता है जैसे [illegible]

=নগেন্দ্র, মহ+ইন্দ্র=মহেন্দ্র, রমা+ঈশ=রমেশ, ধন+ঈশ্বর =ধনেশ্বর, উমা+ঈশ=উমেশ। नग+इन्द्र=नगेन्द्र :—यहाँ पर नग शब्दके अ के बाद इन्द्रको इ है ; इसलिये अ के बाद इ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए हुआ और वह ए पूर्ववर्णमें मिलकर नगेन्द्र पद बना है। धन+ईश्वर=धनेश्वर:—यहाँ पर अ के बाद ई रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए हुआ है। रमा+ईश=रमेश ; यहाँ पर आ के बाद दीर्घ ई रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए हुआ है।

२२। अ या आ के बाद उ या ऊ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ও होता है, और वह ও पूर्ववर्ण में मिल जाता है। जैसे—সূর্য্য+উদয়=সূর্য্যোদয়, নল+উদয়=নলোদয়, তরঙ্গ+ঊর্ম্মি=তরঙ্গোর্ম্মি, মহা+উদধি=মহোদধি, গঙ্গা+ঊর্ম্মি গঙ্গোর্ম্মি। सूर्य्य+उदय=सूर्य्योदय :—यहाँ पर अकारके बाद ह्रस्व उ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ओकार हुआ और ओकार पूर्ववर्णमें मिलकर सूर्य्योदय पद बना। महा+उदधि= महोदधि :—यहाँ पर आकारके बाद उकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ओकार हुआ है। इसी तरह नलोदय, तरङ्गोर्म्मि, गङ्गोर्म्मि है

२३। [illegible] या [illegible] के बाद [illegible] रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे [illegible] होता है [illegible] पूर्ववर्णमें मिल जाता है और [illegible] अर्थात् [illegible] हो जाता है। जैसे [illegible]

जैसे—যদি + অপি = যদ্যপি, অতি + আহার = অত্যাহার, প্রতি + আশা = প্রত্যাশা, প্রতি + আদেশ = প্রত্যাদেশ, নদী + উদিত = নদ্যুদিত, কালী + আগার = কাল্যাগার, इत्यादि। यदि + अपि = यद्यपि ;—यहाँ पर यदि शब्दके इकारके बाद अपि शब्दका अकार है; इसीसे इ और ई के सिवाय और कोई स्वर वर्ण बादमें रहनेसे इकारके स्थानमें य हुआ और वही य परवर्ती स्वरवर्ण अपिके अकार और पूर्ववर्ण दकारमें संयुक्त होकर "यद्यपि" पद बना। इसी तरह अत्याहार, प्रत्याशा इत्यादि भी बने हैं।

२८। उ और ऊ के सिवाय और कोई स्वरवर्ण बादमें रहनेसे उ वा ऊ के स्थानमें व होता है, वह व पूर्ववर्णमें मिल जाता है और परवर्ती स्वर भी पूर्व वर्णमें मिल जाता है। जैसे—সু + আগত = স্বাগত, সাধু + ইচ্ছা = সাধ্বিচ্ছা, তনু + আচ্ছাদন = তন্বাচ্ছাদন, চক্ষু + আদি = চক্ষ্বাদি इत्यादि। सु + आगत = स्वागत ;—यहाँ पर सु शब्दके उकारके बाद आगत शब्दका आकार है; इसीसे उ ऊ के सिवाय अन्य स्वरवर्ण बादमें रहनेसे उकारके स्थानमें व हुआ। व और परवर्ती स्वर वर्ण आगतके आकारके पूर्ववर्ण सकारमें मिल जानेसे "स्वागत" पद बना. इसी तरह साध्विच्छा और तन्वाच्छादन बने हैं।

२८। ऋ के सिवाय और कोई स्वर वर्ण बादमें रहनेसे ऋ के स्थानमें र होता है वह र पूर्व वर्ण में मिल जाता

परवर्ती स्वर उसी रकारमें मिल जाता है। जैसे—पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा, इत्यादि। मातृ + आशा = मात्राशा ;—यहां पर मातृ शब्दके ऋकारके बाद आ ऐसा आकार है ; इसके भिन्न स्वर वर्ण होनेके कारण ऋकारके स्थानमें र हुआ और यह र और परवर्ती स्वर वर्ण आ ऐसा आकार पूर्व वर्ण तकारमें मिलकर "मात्राशा" पद बना।

१०। स्वरवर्ण परे रहनेसे पूर्ववर्ती ए, ऐ, ओ, औ के स्थानमें क्रम क्रमसे अय्, आय्, अव्, आव् होता है यानी ए की जगह पर अय्, ऐ की जगह पर आय्, ओ के स्थानमें अव्, और औ के स्थानमें आव् होता है ; अय्, आय्, अव्, आव् के य और व पूर्व वर्णमें मिल जाते हैं और परवर्ती स्वर अ, इ आदि य और व में मिल जाता है। जैसे—ने + अन = नयन, विनै + अक = विनायक, गै + अक = गायक, पो + अन = पवन, भो + अन = भवन, पौ + अक = पावक, नौ + इक = नाविक। ने + अन = नयन,—यहां पर एकारके बाद स्वरवर्ण रहनेसे एकार की जगह अय हुआ और अयका यकार पूर्ववर्ती नकार में मिलकर "नयन" पद बना। इसी तरह जैसे—विनै + अक = विनायक,—यहां पर ऐकारके बाद स्वरवर्ण है इसलिये ऐकारके स्थानमें आय हुआ और आयके यकार पूर्ववर्ती नकारमें मिलकर "विनायक" पद बना। इसी तरह से पो + अन = पवन,—यहां पर ओकारके बाद स्वरवर्ण रहनेसे ओकारके स्थानमें अव हुआ और अवके वकार पूर्व प-

कारसे मिलकर "पवन" पद बना; इसीतरह भवन भावन भी बने हैं। नौ+इक=नाविक:—यहाँ पर औकारके बाद स्वर वर्ण रहनेके कारण औकारके स्थानमें आव हुआ और आव का आकार पूर्ववर्ण नकारसे मिलकर "नाविक" बना।

व्यञ्जन सन्धि।

२१। स्वर वर्ण या वर्गका तीसरा चौथा वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह परे रहनेसे, वर्गके पहले वर्ण के स्थान में उस वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है। जैसे—वाक्+आडम्बर =वागाड़म्बर, वाक्+इन्द्रिय=वागिन्द्रिय, दिक्+अन्त=दिगन्त, त्वक्+इन्द्रिय=त्वगिन्द्रिय, दिक्+गज=दिग्गज, वाक्+जाल =वाग्जाल, वाक्+दान=वाग्दान, वाक्+देवी=वाग्देवी, दिक्+विदिक=दिग्विदिक, षट्+जल=षड्जल, उत्+घाटन उद्घाटन, सत्+विद्या=सद्विद्या, जगत्+बन्धु=जगद्बन्धु, अप्+ज=अब्ज इत्यादि।

२२। पञ्चम वर्ण परे रहनेसे वर्गके पहिले वर्ण के स्थानमें पञ्चम वर्ण होता है और अगर न के बाद न या म रहे तो उस न के स्थानमें ण हो जाता है। जैसे दिक्+नाग= दिङ्नाग, [illegible] षण्मुख, [illegible] अप्+मय [illegible] बाङ्मय, उत्+नयन=उन्नयन, [illegible]।

२३। চ या ছ परे रहनेसे पूर्ववर्त्ती ৎ या দ্ के स्थानमें চ होता है। जैसे—শরৎ+চন্দ্র=শরচ্চন্দ্র, উৎ+চারণ=উচ্চারণ, উৎ+ছেদ=উচ্ছেদ, তদ্+চরণ=তচ্চরণ, তদ্+ছাত্র=তচ্ছাত্র।

२४। জ अथवा ঝ परे रहने से पूर्ववर्त्ती ৎ या দ্ के स्थानमें জ होता है। जैसे—উৎ+জ্বল=উজ্জ্বল, তৎ+ঝটিকা=তজ্ঝটিকা।

२५। ট या ঠ परे रहने से पूर्ववर्त्ती ৎ और দ্ के स्थानमें ট होता है। जैसे—উৎ+টঙ্কন=উট্টঙ্কন, তদ্+টঙ্কার=তট্-টঙ্কার।

२६। ড या ঢ परे रहनेसे पूर्ववर्त्ती ৎ या দ্ के स्थानमें ড होता है। जैसे—উৎ+ডীন=উড্ডীন, তদ্+ঢক্কা=তড্ঢক্কা, বৃহৎ+ঢক্কা=বৃহড্ঢক্কা।

२७। यदि চ या জ के बाद ন रहे तो ন के स्थान में ঞ होता है। जैसे—যাচ্+না=যাচ্ঞা, রাজ্+নী=রাজ্ঞী।

२८। यदि ল परे हो तो पूर्ववर्त्ती ৎ, দ্ और ন্ के स्थानमें ল होता है, और ন के पूर्ववर्णमें चन्द्रबिन्दु लग जाता है। जैसे [illegible]

२९। [illegible]

स्थानमें च् और ज् के स्थानमें ज होता है। जैसे—उत्+छिन्न=उच्छिन्न, उत्+शृङ्खल=उच्छृङ्खल, जगत्+जननी=जगज्जननी, उत्+ज्वल=उज्ज्वल।

४०। त् या द् के बाद ह रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे द्ध होता है। जैसे—उत्+हार=उद्धार, उत्+हत=उद्धत, तत्+हित=तद्धित।

४१। ष् के बाद त या थ रहनेसे त के स्थानमें ट और थ के स्थानमें ठ होता है। जैसे—आकृष्+त=आकृष्ट, षष्+थ=षष्ठ।

४२। स्पर्श वर्ण परे रहनेसे पदके अन्तस्थित म् के स्थान में अनुस्वार होता है अथवा जिस वर्गका वर्ण परे रहता है म के स्थान में उसी वर्ग का पञ्चम वर्ण होता है। और अन्तस्थ और ऊष्मवर्ण परे रहनेसे म के स्थान में केवल अनुस्वार होता है। जैसे—सम्+कीर्ण=सङ्कीर्ण या संकीर्ण, किम्+कर=किङ्कर या किंकर, सम्+चित=सञ्चित या संचित, किम्+चित्=किञ्चित् या किंचित्, सम्+पूर्ण=सम्पूर्ण या संपूर्ण, सम्+तुष्ट=सन्तुष्ट या संतुष्ट, सम्+यम=संयम, [illegible]

४३। [illegible]

४४। स्वरवर्ण के बाद छ रहने से छ के स्थानमें च्छ होता है। जैसे—পরি+ছেদ=পরিচ্ছেদ, অব+ছেদ=অবচ্ছেদ, স+ছিদ্র=সচ্ছিদ্র, বৃক্ষ+ছায়া=বৃক্ষচ্ছায়া, গৃহ+ছায়া=গৃহচ্ছায়া।

४५। उत् शब्दके बाद स्था और स्तम्भ धातुके "स" का लोप होता है। जैसे—উৎ+স্থান=উত্থান, উৎ+স্তম্ভ=উত্তম্ভ।

४६। सम् और परि के बाद कृ धातुका पद रहनेसे वह कृ धातु निष्पन्न पदके पूर्व्व क्रमशः स् और ष् होता है अर्थात् सम्के बाद स और परि के बाद ष होता है। जैसे—সম্+করণ=সংস্করণ, সম্+কৃত=সংস্কৃত, সম্+কার=সংস্কার, পরি+কার=পরিষ্কার।

४७। च या छ बादमें रहने से विसर्ग के स्थान में श होता है। जैसे—মনঃ+চমৎকার=মনশ্চমৎকার, নিঃ+চয়=নিশ্চয়, শিরঃ+ছেদ=শিরশ্ছেদ, উরঃ+ছদ্=উরশ্ছদ্।

४८। ट या ठ परे रहने से विसर्ग के स्थानमें ष् होता है। जैसे धनुঃ+টঙ্কার ধনুষ্টঙ্কার

४९। [illegible] या [illegible] पर रहने से विसर्ग के स्थान में [illegible] होता है जैसे [illegible]

[illegible]

मिल जाता है और परे अकार रहनेसे उसका लोप होता है। जैसे—ততঃ+অধিক=ততোধিক, মনঃ+গত=মনোগত, অধঃ+গমন=অধোগমন, সদ্যঃ+জাত=সদ্যোজাত, পয়ঃ+নিধি=পয়োনিধি, যশঃ+ধন=যশোধন, মনঃ+যোগ=মনোযোগ, মনঃ+বেগ=মনোবেগ, इत्यादि।

५१। स्वरवर्ण, वर्गके तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण अथवा य व ल र ह के परे रहनेसे अकार के बादके र जात विसर्ग के स्थान में र् होता है। यदि स्वर वर्ण या গ, ঘ, ঙ, জ, ঝ, ঞ, ড, ঢ, ণ, দ, ধ, ন, ব, ভ, ম और য র ল ব হ के परे रहता है तो अकार के बादके र जात विसर्ग के स्थान में র होता है। पूर्व लक्षण के अनुसार ओकार नहीं होता। जैसे—অন্তঃ+গত=অন্তর্গত, প্রাতঃ+আশ=প্রাতরাশ, পুনঃ+জন্ম=পুনর্জন্ম, অন্তঃ+আত্মা=অন্তরাত্মা, অন্তঃ+ভেদ=অন্তর্ভেদ, পুনঃ+উক্তি=পুনরুক্তি।

५२। स्वरवर्ण, वर्गका तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण या य व ल र ह परे रहने से अ आ भिन्न स्वरवर्णके बाद के विसर्ग की जगह र् होता है। जैसे—নিঃ+ধন=নির্ধন, বহিঃ+গত=বহির্গত, দুঃ+আত্মা=দুরাত্মা, বিঃ+উক্তি=বিরুক্তি, দুঃ+লভ=দুর্লভ।

५३। र परे रहने से विसर्ग के स्थान में जो र होता है, उस र का लोप होता है और पूर्व स्वर दीर्घ हो जाता है।

जैसे—নিঃ+রোগ=নীরোগ, নিঃ+রস=নীরস, নিঃ+রব= নীরব, চক্ষুঃ+রাগ=চক্ষুরাগ।

५४। স্থ परे रहने से, पूर्ववर्ती विसर्ग का विकल्प में लोप होता है। जैसे—মনঃ+স্থ=মনস্থ या মনঃস্থ, দুঃ+স্থ= দুস্থ, इत्यादि।

५५। समास में क ख प फ परे रहनेसे विसर्ग के स्थान में विकल्प से স होता है; और वही स् अगर अ आ भिन्न स्वरवर्ण के बाद का होता है तो ष् हो जाता है। जैसे— নিঃ+কম্প=নিষ্কম্প या নিঃকম্প; ভাঃ+কর=ভাস্কর, ভাঃকর; দুঃ+কর=দুষ্কর, দুঃকর; তেজঃ+কর=তেজস্কর, তেজঃকর; ভাঃ+পতি=ভাস্পতি, ভাঃপতি; নিঃ+ফল=নিষ্ফল, নিঃফল।

५६। अकार भिन्न स्वरवर्ण परे रहनेसे अकार के बाद के विसर्ग का लोप होता है। लोप के बाद फिर सन्धि नहीं होती। जैसे—অতঃ+এব=অতএব, [illegible]।

५७ बंगला भाषाके पदके अन्तस्थित विसर्ग का विकल्पमें लोप होता है। यथा [illegible]

णत्व विधान।

"ण" के लगानेके स्थान।

५८ [illegible] के बादके दन्त्य न मूर्द्धन्य होता है। जैसे—[illegible]

५९। ऋ, र्, ष के बाद स्वरवर्ण, कवर्ग, पवर्ग, ह य व या अनुस्वार व्यवधान रहने पर भी दन्त्य न मूर्द्धन्य होता है। जैसे—কারণ, অর্পণ, প্রমাণ, নির্বাণ, রুক্মিণী, বৃংহণ, বিস্মরণ।

६०। उल्लिखित वर्णके सिवा और कोई वर्ण व्यवधान में नहीं होता। जैसे—অর্চনা, কীর্ত্তন, রসনা।

६१। पदके अन्तमें या दूसरे पदमें न रहनेसे वह मूर्द्धन्य नहीं होता जैसे—দুরপনেয়, দুর্নাম, দুর্নয়।

६२। क्रियाके अन्तमें का दन्त्य न मूर्द्धन्य नहीं होता। जैसे—করেন, ধরেন, মারেন।

६३। त, थ, द, ध, संयुक्त न "ण" नहीं होता। जैसे—প্রান্ত, ভ্রান্ত, রন্ধ্র।

येइसे स्वाभाविक मूर्द्धन्य ण विशिष्ट पद है। जैसे—বাণি, মণি, বেণী, গুণ, কঙ্কণ, গণ, বিপণি, পণ, আপণ, বীণা, স্থাণু, নিপুণ, লবণ, কণিকা, বাণ, মৎকুণ, শোণ, কোণ, কল্যাণ, কণা, অণু, কাণ, ঘুণ, বণিক इत्यादि।

६४। अ आ भिन्न स्वरवर्ण अथवा क और र इन वर्णोंके किसी भी परस्थित पदके बीचका दन्त्य स मूर्द्धन्य होता है। विसर्ग व्यवधान रहनेपर भी यह होता है। लेकिन सात् प्रत्ययका स मूर्द्धन्य नहीं होता। जैसे सुषम, বর্ষমান, [illegible], চিকীর্ষা, পরিষ্কার, নিষেধ, অনুষ্ঠান, আবিষ্কার इत्यादि।

कुछ शब्दोंका स स्वाभाविक ही मूर्द्धन्य होता है। सब

भाव, पाहाड़, कन्दर, आसङ्ग, कम्बार, दराइ, कच्छे कुम्भाद इत्यादि।

पद।

सारे पद पांच भागोंमें बांटे गये हैं। यथा; (१) विशेष्य (२) विशेषण, (३) सर्व्वनाम, (४) अव्यय (५) क्रिया।

विशेष्य।

कोई चीज, व्यक्ति, जाति, गुण और क्रिया वाचक शब्दको विशेष्य कहते हैं। जैसे;—रघु, कलिका; हाथ, पद; गाइ, मनुष्य; उत्तम, मधुर; गमन, भोजन इत्यादि।

विशेष्य पदमें लिङ्ग, वचन, पुरुष और कारक होते हैं। इनके जाननेसे वाक्यार्थ जाननेमें सुभीता होता है।

लिंग।

जिसके द्वारा पुरुष-स्त्री आदि जातिका ज्ञान होता है उसे लिङ्ग कहते हैं।

लिङ्ग तीन प्रकारके होते हैं, पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग और क्लीवलिङ्ग।

बंगला भाषामें क्लीवलिङ्ग का कोई विशेष रूप नहीं

होता। फल, जल, पत्थर प्रभृति क्लीवलिङ्ग शब्दोंका रूप पुंलिङ्ग जैसा होता है।

जिन शब्दोंमें पुरुष जातिका ज्ञान होता है, वे पुंलिङ्ग कहे जाते हैं। जैसे;—मनुष्य, बालक, सिंह, अश्व इत्यादि।

जिन शब्दोंमें स्त्री जातिका बोध होता है उन्हें स्त्रीलिङ्ग कहते हैं। जैसे;—स्त्री, कन्या, हरिणी, नारी, महिषी, हस्तिनी, घोटकी, कुक्कुरी इत्यादि।

विद्युत, रात्रि, लता, बुद्धि, पृथिवी, नदी, सन्ध्या, शोभा, एवं ज्योत्स्ना, इनके पर्य्यायमें जिन शब्दोंका प्रयोग होता है वे स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे,—सौदामिनी, वसुमती, यामिनी, इत्यादि।

याद रखना चाहिये कि विद्युत्, तृष्णा, वीणा, लता, रुचि, नाड़ी, वनिता, तारा, श्रेणी, शोभा, धूलि, नदी, नीति, सरित्, वेणी, सौदामिनी, लता, लज्जा, कथा, नौका, नासिका, ग्रीवा, विद्या, जाया, हरिद्रा, जिह्वा, गृहिणी इत्यादि थोड़े से शब्द सदा स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

सामान्य स्त्रीलिंग प्रत्यय।

(क) जिन शब्दोंके अन्तमें "अ" (अकार) होता है, स्त्रीलिङ्ग में "अ" के स्थानमें "आ" (आकार) हो जाता है। जैसे,—काक, [illegible] चञ्चल,

[illegible] ; [illegible] ; [illegible] ; [illegible] ; [illegible] इत्यादि।

(ख) जिन जातिवाचक शब्दोंके अन्तमें "अ" होता है, [illegible] "अ" के स्थानमें "ई" हो जाती है। जैसे : [illegible] इत्यादि।

(ग) जिन शब्दोंके अन्तमें [illegible] और [illegible] होते हैं उनका स्त्रीलिङ्ग प्रायः ईकारान्त होता है [illegible] "ई" लगा दी जाती है जैसे : [illegible] इत्यादि।

(घ) जिन [illegible]

[illegible]

(च) जिन शब्दोंके अन्तमें "अक" होता है उनके स्त्रीलिङ्गमें "अक" के स्थानमें "इका" हो जाता है। जैसे;— पाठक, पाठिका, नायक, नायिका, गायक, गायिका, बालक, बालिका, पावक, पाविका इत्यादि।

(छ) बहुवाचक शब्द, स्त्रीलिङ्गके विशेषणमें, प्रायः "ई" कारान्त हो जाते हैं। जैसे,—सुकेश, सुकेशी, सुमुख, सुमुखी इत्यादि।

(ज) प्रथम, द्वितीय और तृतीय शब्दोंके सिवा और सब पूरणवाचक शब्दोंके बाद स्त्रीलिङ्गमें "ई" होती है; किन्तु प्रथम, द्वितीय और तृतीयके बाद "आ" होता है। जैसे— चतुर्थी, पञ्चमी षष्ठी सप्तमी अष्टमी नवमी, दशमी इत्यादि और प्रथमा, द्वितीया, तृतीया।

(झ) गुणवाचक "उ"कारान्त शब्दोंके बाद स्त्रीलिङ्गमें विकल्पसे "ई" होती है और पहले "उ" के स्थानमें "व" होता है। जैसे,—गुरु गुर्वी, तनु, तन्वी, मृदु मृद्वी, इत्यादि।

(ञ) जिन शब्दोंके अन्तमें "ईयस्" प्रत्यय होता है उनके स्त्रीलिङ्ग रूपमें अन्तमें [illegible] हो जाता है। जैसे [illegible] [illegible] प्रेयसी इत्यादि।

[illegible] जिन शब्दोंके [illegible] उनके स्त्रीलिङ्गमें [illegible] इत्यादि।

(ठ) जिन शब्दोंके अन्तमें "वत्" और "मत्" होते हैं उनके स्त्रीलिङ्गके रूपोंमें अन्तमें "ई" हो जाती है। जैसे;—

शब्द	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
श्रीमत्	श्रीमान्	श्रीमती
[illegible]	[illegible]	[illegible]
ज्ञानवत्	ज्ञानवान्	ज्ञानवती

(ड) जिन शब्दोंके अन्तमें "त" और "ति" प्रत्यय होते हैं, वे शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे;—गति, मति, भक्ति, [illegible], [illegible] इत्यादि।

(ढ) [illegible] आदि कुछ शब्दोंको छोड़कर जिन शब्दोंके अन्तमें "अ" होता है उनके स्त्रीलिङ्गके रूपोंमें, शब्दके अन्तमें "ई" हो जाती है और "अ" के स्थानमें "ड़" हो जाता है। जैसे:—

शब्द	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]

लेकिन [illegible] और [illegible] इत्यादि होता है।

[illegible] प्रभृति शब्दोंके [illegible] लिङ्गमें [illegible]

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्मा	ब्रह्माणी
सूर्य्य	सूर्य्या	भव	भवानी
वरुण	वरुणानी	पापीयान्	पापीयसी
वैश्य	वैश्या	दास	दासी
शूद्र	शूद्रा	पौत्र	पौत्री
दौहित्र	दौहित्री	पुत्र	पुत्री

वचन ।

जिसके द्वारा वस्तुकी संख्या जानी जाती है उसे "वचन" कहते हैं ।

वचन दो प्रकारके होते हैं :—

(१) एकवचन ।

(२) बहुवचन ।

एकवचन के विभक्ति युक्त पदके द्वारा केवल एक पदार्थ जाना जाता है । जैसे ; बालक ।

बहुवचन के विभक्ति पदके द्वारा, एक भिन्न, अनेक वस्तुओं का ज्ञान होता है । जैसे ; बालकेरा ।

"बालक" कहनेसे केवल एक बालक और "बालकेरा" कहनेसे एकसे अधिक बालक समझे जाते हैं ।

बहुवचन के उच्चारण कहीं [illegible] युक्ति

होती है। जैसे; রাম পুস্তক পড়িতেছে, শিশু চাঁদ দেখিতেছে, রাজা আসিতেছেন ইত্যাদি।

यहाँ पर पढ़ितेछे क्रियाका "कर्त्ता" राम है; क्योंकि जो करता है उसीको कर्त्ता कहते है। राम पुस्तक पढ़ितेछे, यहाँ पर कौन पुस्तक पढ़ता है? राम। इसलिये "राम" कर्त्ता है। शिशु चांद देखितेछे, यहाँ पर चांद कौन देखता है? शिशु, इसलिये "शिशु" कर्त्ता है। "राजा" आसितेछेन, यहाँ पर आता है कौन? राजा; इसलिये "राजा" कर्त्ता है।

कर्म्म।

जो किया जाता है, जो सुना जाता है, जो देखा जाता है, जो खाया जाता है जो दिया जाता है, जो लिया जाता है, जो रक्खा जाता है, जो पकड़ा जाता है, जो मारा जाता है, उसे कर्म कहते है। कर्ममें द्वितीया विभक्ति होती है। कर्मकी विभक्तियां के चिन्ह ये है [illegible] अथवा ये। जैसे [illegible] पुस्तक [illegible] इत्यादि

क्रियामें क्या या किसको यह प्रश्न करनेसे जो पद मिलता है उसी को उस क्रियाका कर्म जानना। क्रिया में 'कौन' प्रश्न करनेसे कर्त्ता मिलता है।

<u>श्याम हरिके धरितेछे</u> : 'धरितेछे' क्रिया है-कौन धरितेछे ? इस प्रश्नके उत्तरमें श्याम मिलता है; इस लिये "श्याम" कर्त्ता है। श्याम क्या या किसको पकड़ता है ? इस प्रश्नसे <u>हरि</u> मिलता है; इसलिये "हरि" कर्म्म है। इसी तरह और उदाहरण समझ लो।

कुछ क्रियाओंके दो दो कर्म्म रहते हैं, अर्थात् जिज्ञास, चेओ इत्यादि कतिपय धातुओं तथा कथनार्थ और विकल्प धातुओंके दो दो कर्म्म रहते हैं। इन धातुओंका नाम द्विकर्म्मक है। जैसे—[illegible] [illegible] इत्यादि।

<u>माता शिशुके चन्द्र देखाइतेछेन</u>, यहाँ पर 'देखाइतेछेन' क्रिया है; कि देखाइतेछेन? चन्द्र, इसलिये 'चन्द्र' एक कर्म्म है और काहाके देखाइतेछेन? शिशुके; इस लिये 'शिशुके' और एक कर्म्म हुआ। अतएव देखाइतेछेन इस क्रियाके दो कर्म्म हुए। [illegible]

दियाछि ? टाका ; इसलिये "टाका" कर्म्म है। काहाके दियाछि ? तारकके ; इसलिये "तारकके" और एक कर्म्म हुआ ; अतएव दियाछि इस क्रियाके दो कर्म्म हुए। धीरेन्द्र सतीशके कथा बलिल, यहांपर "बलिल" क्रिया है। कि बलिल ? कथा ; इसलिये "कथा" एक कर्म्म हुआ। काहाके बलिल ? सतीशके ; इसलिये "सतीशके" यह पद भी एक कर्म्म हुआ। अतएव बलिल क्रियाके दो कर्म्म हुए।

करण कारक।

जिसके द्वारा काम पूरा किया जाता है उसको करण कारक कहते हैं। करण में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे, দায় দ্বারা কাঠ কাটিতেছে, চক্ষু দ্বারা চন্দ্র দেখিতেছে, জল দ্বারা ভূমি ভিজিতেছে इत्यादि।

दाय द्वारा काठ काटितेछे, यहां पर दाय (कुल्हाड़ी) द्वारा काटनेका काम पूरा जाता है इसलिये "दाय" करण कारक हुआ। चक्षु द्वारा चन्द्र देखितेछे, यहां पर चक्षु द्वारा देखनेका काम पूरा होता है इसलिये "चक्षु" करण कारक हुआ। जल द्वारा भूमि भिजितेछे, यहां पर जल द्वारा भूमि भींगनेका काम पूरा होता है इसलिये जल 'करण कारक' हुआ।

দ্বারা, দিয়া, করিয়া, তে इत्यादि विभक्ति चिन्हों के द्वारा करण कारक का निर्णय होता है, इस लिये ये करण कारक की विभक्तियाँ हैं। क्रियामें किसके द्वारा प्रश्न करनेसे जो मिलता है वही करण कारक होता है। जैसे—দন্ত দ্বারা চর্ব্বণ করে, নেত্র দিয়া দেখে, যষ্টি করিয়া, লাঠিতে इत्यादि।

यहांपर 'दन्त', 'नेत्र' और 'यष्टि', 'लाठि', करण कारक हैं। <u>द्वारा</u>, <u>दिया</u>, <u>करिया</u> और <u>ते</u> इन चारों विभक्तियों द्वारा करणकारक का निर्णय होता है।

सम्प्रदान कारक।

अपना अधिकार नष्ट करके जिसको कोई चीज़ दी जाती है उसको <u>सम्प्रदान कारक</u> कहते हैं। सम्प्रदान में <u>चतुर्थी विभक्ति</u> होती है। इसकी विभक्ति के चिन्ह <u>के</u> और <u>रे</u> हैं। जैसे—দরিদ্রকে ধন দাও, यहां पर "दरिद्रके" यह पद सम्प्रदान कारक हुआ। जिस दान में अधिकार रहता है अर्थात् जब दी हुई चीज़ फिर ले लेनेकी इच्छासे दी जाती है तब वह सम्प्रदान न होकर <u>कर्म</u> होती है। जैसे—রজককে বস্ত্র দাও यहां पर <u>रजक</u> कर्म कारक है।

अपादान कारक।

'जिससे कोई ... [illegible] ... [illegible]

रक्षित, प्रहीन, उत्पन्न, अन्तर्हित, निवारित, विरत, पराजित, आवृत या भेदित होता है, उसका नाम अपादान कारक है। अपादानमें पञ्चमी विभक्ति होती है। इस विभक्ति का चिन्ह है —हइते। जैसे—व्याघ्र हइते भीत हइतेछे; वृक्ष हइते पत्र पड़ितेछे, दस्यु हइते धन रक्षा करितेछे, मेघ हइते वृष्टि हइतेछे, पाप हइते विरत हइबे, दुष्ट लोक हइते अन्तर्हित हइतेछे, पुष्प हइते फल उत्पन्न हय इत्यादि।

व्याघ्र हइते भीत हइतेछे, यहाँपर व्याघ्रसे भीत होनेके कारण "व्याघ्र" अपादान कारक हुआ। वृक्ष हइते पत्र पड़ितेछे, वृक्षसे पत्रका गिराव होता है इसलिये "वृक्ष" अपादान कारक हुआ। दस्यु हइते धन रक्षा करितेछे, यहाँपर दस्युसे धन रक्षा करनेके कारण "दस्यु" अपादान कारक हुआ। मेघ हइते वृष्टि हइतेछे, यहाँपर मेघसे वृष्टि पैदा होती है, इसलिये "मेघ" अपादान कारक हुआ। पाप हइते विरत हइबे, यहां पर पापसे विरत होनेके कारण "पाप" अपादान कारक हुआ। दुष्ट लोक हइते अन्तर्हित हइतेछे यहाँपर दुष्टलोकसे अन्तर्हित होनेके कारण "दुष्ट लोक" अपादान कारक हुआ। पुष्प हइते फल उत्पन्न हय यहाँपर पुष्पसे फल पैदा होता है इसलिये पुष्प अपादान कारक हुआ।

[illegible] इत्यादि अपादान कारक की विभक्ति है। [illegible] भक्त

इहाते भय पाइतेछि। बाघो देखे जान, इत्यादि। यहांपर "चोर", "भल्लुक" और "बाघो" अपादान कारक हैं। इहते और देखे इन दो विभक्तियों द्वारा अपादान कारक जाना जाता है।

अधिकरण।

वस्तु वा क्रिया के आधारको अधिकरण कहते हैं जैसे—वायु सर्व्व स्थाने आछे, वृक्षे फल आछे, टेरे वन आछे, दुग्धे माखन आछे इत्यादि।

वायु सर्व्व स्थाने आछे, यहां पर "सर्व्व स्थाने" यह पद 'आछे' क्रिया का आधार है इसलिये "सर्व्व स्थाने" अधिकरण कारक हुआ। वृक्षे फल आछे, यहांपर 'आछे' क्रिया है; कोथाय आछे? वृक्षे, इस लिये "वृक्षे" अधिकरण कारक हुआ। टेरे वन आछे यहां पर 'आछे' क्रिया है, कोथाय आछे? टेरे इसलिये टेरे अधिकरण कारक हुआ। दुग्धे माखन आछे यहां पर दुग्ध माखनका आधार है इसलिये दुग्धे अधिकरण कारक हुआ।

[illegible] —ये सब अधिकरणकी विभक्तियां हैं जैसे [illegible] इत्यादि।

यहांपर जले [illegible] या [illegible] अधिकरण कारक है।

अधिकरण तीन प्रकारके होते हैं—आधाराधिकरण कालाधिकरण और भावाधिकरण।

वस्तु या क्रिया का आधार होने हो से उसको आधारा धिकरण कहते हैं। आधाराधिकरण चार प्रकार के हैं;— विषयाधार, व्याप्ताधार, सामीप्याधार और एक देशाधार।

कोई वस्तु, अधिकरण होने से अगर 'सविषये (उसमें) ऐसा अर्थ समझ पड़े, तो उसका नाम "विषयाधार अधिकरण" होता है। जैसे, শিল্পকারের শিল্পকর্মে নৈপুণ্য দেখায়, अर्थात् शिल्पकार्य्य में निपुणता है, শাস্ত্রে পার দর্শিতা আছে, यहांपर "शिल्पकर्मे" और "शास्त्रे" ये दो पद विषयाधार अधिकरण है।

जो सब आधार में व्याप्त होकर रहता है उसका नाम "व्याप्ताधार" है। जैसे—ইক্ষুতে রস আছে, अर्थात् ऊख में रस है। দুগ্ধে মাখন আছে, अर्थात् दूध में मक्खन है, इसलिये यहां पर "इक्षुते" और "दुग्धे" ये दोनों पद व्याप्ताधार अधिकरण हुए।

सामीप्य (नज़दीक, पास) यह अर्थ प्रकट होने से उसे "सामीप्याधार" कहते हैं। जैसे গঙ্গায় বাস কর, यहां पर गङ्गा के निकट रहता है ऐसा अर्थ प्रकट होता है इसलिये "गङ्गाय" पद सामीप्याधार अधिकरण है।

यदि एकाधार हो,तो उसे 'एक देशाधिकरण' कहते हैं। जैसे —বনে ব্যাঘ্র আছে यहांपर यह नहीं समझना होगा

कि सारे वन में बाघ है : बल्कि यह समझना होगा कि वन के किसी एक स्थान में बाघ है : इसलिये 'वने' यह एक देशाधार अधिकरण हुआ।

कालवाचक शब्द अधिकरण होने से उसको "कालाधिकरण" कहते हैं : अर्थात् दिन, रात्रि, मास, पक्ष, यखन, तखन, इत्यादि समय-वाचक शब्द अगर अधिकरण हों तो उसको कालाधिकरण कहते हैं। जैसे—प्रत्यूषे गात्रोत्थान करा उचित, मध्याह्ने सूर्य्येर किरण प्रखर हय, तिनि तखन छिलेन ना, यखन याइबे आमिओ याइब, वर्षाय वृष्टि हय इत्यादि।

प्रत्यूषे गात्रोत्थान करा उचित, यहाँपर प्रत्यूषे अर्थात प्रभात काले (सबेरे) समझा जाता है; इस लिये "प्रत्यूषे" यह पद कालाधिकरण है। मध्याह्ने सूर्य्येर किरण प्रखर हय, यहाँ पर मध्याह्ने कहनेसे मध्याह्नकाल समझा जाता है; तिनि तखन छिलेन ना, यहाँ पर तखन कहने से वही समय समझा जाता है। यहाँपर 'तखन' पद कालाधिकरण है। यखन याइबे आमिओ याइब, यहाँपर यखन शब्द द्वारा समय समझा जाता है, इसलिये 'यखन' पद कालाधिकरण हुआ। वर्षाय वृष्टि हय यहाँ वर्षा शब्द द्वारा वर्षा काल समझा जाता है इसलिये 'वर्षा' पद कालाधिकरण है

सकल उदय, भोजन स्नान इत्यादि क्रिया शब्द

विहित क्रिया पद किसी समापिका क्रिया की अपेक्षा करते हैं उनका नाम भावाधिकरण है। जैसे—হরির গমনে তিনি দুঃখিত হইবেন, চন্দ্রের দর্শনে আমি বড় সুখী হই, ব্রাহ্মণের ভোজনে সকলেই সন্তুষ্ট হয়, আত্মীয় বিয়োগে সকলেই শোকাকুল হয় ইত্যাদি।

हरिर गमने तिनि दुःखित हइबेन, यहाँ पर हरिर गमने इसका अर्थ 'हरिर गमन हइले', ऐसा कहनेसे किसी समापिका क्रिया की जरूरत होती है; नहीं तो वाक्य सम्पूर्ण नहीं होता, इसलिये "गमने" यह पद भावाधिकरण हुआ। ब्राह्मणेर भोजने सकलेइ सन्तुष्ट हय, यहांपर ब्राह्मणेर भोजने इसका अर्थ 'ब्राह्मणेर भोजन हइले', ऐसा कहनेसे कोई समापिका क्रिया चाहिये, नहीं तो वाक्य पूरा नहीं होता; इस लिये "भोजने" यह पद भावाधिकरण हुआ। चन्द्रेर दर्शने आमि बड़ सुखी हइ, यहांपर दर्शने इसका अर्थ 'दर्शन करिले', ऐसा कहने से एक समापिका क्रिया का प्रयोजन होता है नहीं तो वाक्य समाप्त नहीं होता, इस लिये दर्शने यह भावाधिकरण हुआ। आत्मीय वियोगे सकलेइ शोकाकुल हय, यहांपर 'वियोगे' इसका अर्थ वियोग हइले' ऐसा कहनेसे एक समापिका क्रिया आवश्यक है नहीं तो वाक्य अधूरा रहता है, इस लिये 'वियोगे' यह पद भावाधिकरण है।

सम्बन्ध पद।

क्रियाके साथ अन्वित नहीं होता,इसीसे सम्बन्धको कारक नहीं कहते। विशेष्य पद के साथ विशेष्य पदके सम्पर्कको ही "सम्बन्ध पद" कहते हैं। सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है। इसका रूप र या एर है। जैसे—रामेर बाड़ी, श्यामेर कापड़, भानुर नाक, चन्द्रेर किरण, मधुर स्वाद, सागरेर जल इत्यादि।

रामेर बाड़ी, यहां पर राम और बाड़ी दोनों विशेष्य पद हैं। बाड़ीके साथ रामका सम्बन्ध है; क्योंकि रामको छोड़ कर बाड़ी में दूसरेका अधिकार नहीं है; इसलिये "रामेर" यह पद सम्बन्ध पद हुआ और राम पद के आगे एर विभक्ति जोड़नेसे रामेर पद बना। इसी तरह श्यामेर, भानेर, चन्द्रेर, साधुर, सागरेर ये सब भी "सम्बन्ध पद" हैं।

सम्बोधन।

आह्वान करनेको सम्बोधन कहते हैं। सम्बोधन के समय जो पद प्रयोग किया जाता है उसे "सम्बोधन पद" कहते हैं। जैसे,—

[illegible]—भाई सुनो।

[illegible]—राम तुम आओ।

६

মাধব কোথা আছ ?—माधव कहाँ हो ?

ওহে হরি—ओ हरि।

ওরে চন্দ্র—अरे चन्द्र।

ऊपरके उदाहरणोंमें "भ्रात.", "राम", "माधव" "हरि" और "चन्द्र" सम्बोधन पद हैं।

नोट—सम्बोधन पदोंके आगे হে, ও, অয়ি, হা, অরে, ওরে प्रभृति कितने ही अव्यय शब्द प्रायः लगाये जाते हैं। लेकिन किसी किसी जगह सम्बोधन पद के पहले सम्बोधन-सूचक अव्यय शब्द नहीं लगाये जाते।

संस्कृत व्याकरण के नियमानुसार अकारान्त को छोड़ कर और तरह के शब्दों के सम्बोधन पद के एक वचन में रूपान्तर होता है, बहुवचन में नहीं होता।

जैसे

শব্দ	সম্বোধন পদ
শকুন্তলা	অয়ি শকুন্তলে
দুর্মতি	হে দুর্মতে
সখি	হে সখে
প্রমদা	হা প্রমদে
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

शब्द	सम्बोधन पद
भगवान्	हे भगवन्
ज्ञानी	हे ज्ञानिन्
मतिमान्	हे मतिमन्

ऊपर जो सम्बोधन के रूप दिखाये गये हैं, वह सब संस्कृत व्याकरण के नियमानुसार हैं और प्राय बँगला भाषामें संस्कृत के कायदे से ही रूपान्तर होकर सम्बोधन व्यवहार किये जाते हैं; लेकिन बहुत से बँगला व्याकरणवालों का मत है कि बँगला में सम्बोधन पद के रूप ठीक कर्त्ताकारक की तरह होते हैं। जैसे: हे पिता, रे दुर्म्मति, हे मित्र, ओ सखा, हा भगवान् इत्यादि; लेकिन अधिकांश लोगोंने संस्कृत का कायदा ही ठीक माना है।

"शकुन्तला" शब्द आकारान्त है यानी शकुन्तला का अन्तिम अक्षर "आ" है। आकारान्त सभी शब्दों का रूप सम्बोधन में शकुन्तला के समान होगा। जैसे: अयि शकुन्तले दुर्गे इत्यादि।

"दुर्म्मति" शब्द इकारान्त है यानी दुर्म्मति शब्दका अन्तिम अक्षर "इ" है। इकारान्त शब्दों के रूप सम्बोधन में दुर्म्मति के समान होंगे। जैसे: रे दुर्म्मते, हे कवे।

इसी तरह सम्बोधनमें ईकारान्त शब्दोंके रूप [illegible] इकारान्त शब्दोंके रूप "[illegible]" उकारान्त शब्दोंके रूप

'वधु", ऋकारान्त शब्दोंके रूप "मातः"; नकारान्त शब्दोंके रूप "राजन्" की तरह होंगे।

अर्थ विशेषमें विभक्ति निर्णय।

जहाँ बिना, ব্যতিরেকে, ব্যতীত, ঐ, ভিন্ন इत्यादि शब्द इस्तेमाल किये जाते हैं, वहाँ इनके पहिले का पद कर्मकारक के अनुरूप होता है। जैसे :—

ধন বিনা সুখ হয় না।

धन बिना सुख नहीं होता।

তাঁহাকে ভিন্ন কাজ হইবে না।

उसके सिवाय औरसे काम न होगा।

धिक् और नमस्कारार्थ शब्दोंका योग होने से, पहिलेके शब्द में कर्म की विभक्ति लगती है—यानी शब्द के बाद "কে" लगाना होता है। जैसे :

মূর্খকে ধিক্। তোমাকে নমস্কার।

मूर्खको धिक्कार। तुमको नमस्कार।

जिन शब्दों के साथ সহিত প্রভৃতি समान, तुल्य, ऊपरि, समान इत्यादि शब्दोंका योग होता है अथवा जिन शब्दों के साथ ये शब्द लगाये जाते हैं उन शब्दों में सम्बन्ध पदकी विभक्तियाँ लगती हैं। जैसे

[illegible] [illegible]

তাহার সঙ্গে।   রামের তুল্য।

আমার প্রতি।   তোমার সমান।

प्राधान्य-वाचक शब्दों का योग होने से भी "सम्बन्ध" की विभक्ति लगती है। जैसे ;

পর্ব্বতের প্রধান হিমালয়।

কবির শ্রেষ্ঠ কালিদাস।

ধার্ম্মিকের শিরোমণি নল।

अपेक्षार्थ शब्द के परे होने से, पहले के पदको "निर्द्धार" कहते हैं। जैसे ;

রাম অপেক্ষা শ্যাম সুশীল।

তৈল অপেক্ষা ঘৃত ভাল।

इन दोनों वाक्योंमें "राम" और "तैल" निर्द्धार पद हैं।

शब्दरूप।

विशेष्य पद के लिङ्ग, पुरुष, वचन प्रभृति निरूपित हो चुके हैं। अब विद्यार्थियोंके जानने के लिये शब्दरूप दिखा देते हैं।

पुंलिंग 'मानव' शब्द।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	মানব	মানবেরা
	मनुष्य मनुष्यने	मनुष्य मनुष्योंने

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्म	মানবকে	মানবদিগকে
	मनुष्यको	मनुष्योंको
करण	মানব দ্বারা	মানবদিগের দ্বারা
	मनुष्यसे	मनुष्योंसे
सम्प्रदान	মানবকে	মানবদিগকে
	मनुष्यको, के, लिये	मनुष्योंको, के, लिये
अपादान	মানব হইতে	মানব সকল হইতে
	मनुष्य से	मनुष्यों से
अधिकरण	মানবে	মানব সকলে
	मनुष्यमें, पर	मनुष्योंमें, पर
सम्बन्ध	মানবের	মানবদিগের
	मनुष्यका, के, की	मनुष्यों का, के, की
सम्बोधन	হে মানব	হে মানবেরা
	हे मनुष्य	हे मनुष्यो

फल शब्द।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	ফল	ফল সকল
कर्म	ফল	ফল সকল
करण	ফল দ্বারা	ফল সকল দ্বারা

इत्यादि।

पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शब्दोंके रूप प्राय ऊपर की तरह ही होते हैं। जिन शब्दों के कारक विशेष में विभक्तियों के भिन्न भिन्न रूप निरूपित किये गये हैं केवल उन्हीं शब्दोंमें कुछ भेद होता है। अर्थात् अकारान्त, इकारान्त ईकारान्त उकारान्त प्रभृति शब्दोंके किसी किसी कारक में भिन्न रूप होते हैं।

जो शब्द संस्कृत शब्दों से कुछ रूपान्तर होकर बंगला में बरते जाते हैं उनमें से कुछ शब्द उदाहरण के तौर पर नीचे दिये जाते हैं।

संस्कृत	बंगला	संस्कृत	बंगला
सखि	सखा	धनिन्	धनी
पितृ	पिता	तेजस्	तेज
वच	वच्	[illegible]	[illegible]
दण्डि	दण्डि	विद्वस्	विद्वान्
महत्	महान्	राजन्	राजा
पापीयस्	पापीयान्	दिश्	दिक्
मनस्	मन	यशस्	यश
गुणवत्	गुणवान्	बुद्धिमत्	बुद्धिमान्
[illegible]	[illegible]	ज्योतिस्	ज्योति
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]		

विशेषण।

जिस शब्द के प्रयोग करने से किसी का गुण व अवस्था प्रकाशित हो, उसे "विशेषण" या गुणवाचक शब्द कहते हैं। जैसे—

শীতল জল = ठण्ढा पानी।

মিষ্ট ফল = मीठा फल।

উত্তম বালক = अच्छा बालक।

বৃদ্ধ অশ্ব = बूढ़ा घोड़ा।

মনোহর পুষ্প = मनोहर फूल।

পুরাতন বৃক্ষ = पुराना पेड़।

লোহিত বসন = लाल कपड़ा।

সৎ লোক = भला आदमी।

বড় গাছ = बड़ा पेड़।

ছোট ছেলে = छोटा लड़का।

অলস বালক = सुस्त बालक।

পাকা আম = पक्का आम।

শুষ্ক ভূমি = सूखी धरती।

গরম দুগ্ধ = गरम दूध।

কাল পাথর = काला पत्थर।

বিশুদ্ধ বায়ু = शुद्ध हवा।

इस जगह "शीतल" शब्द विशेषण है। क्योंकि इस शब्द से ही जल की शीतलता प्रकाशित होती है। इसी भांति निह, हत प्रभृति शब्द भी विशेषण हैं। जिन शब्दों के नीचे काली काली रेखाएं खींची हैं, वे सब विशेषण हैं।

कारक, वचन और पुरुष के भेद से विशेषण के रूपमें भेद नहीं होता। क्योंकि उसमें कारक आदि नहीं होते। केवल स्त्रीलिङ्ग में रूप-भेद होता है। जैसे: नवीना युवती, सुन्दरी [illegible], [illegible] इत्यादि।

कुछ विशेषण पद, कभी कभी, विशेषण के विशेषण होते हैं। जैसे: अत्यन्त कठिन, बड़ नम्र, अति सुन्दर इत्यादि।

कितने ही विशेषण पद क्रिया के विशेषण हो जाते हैं। जैसे: शीघ्र [illegible], मन्द मन्द [illegible]।

सर्व्वनाम।

प्रसङ्ग क्रमसे एक व्यक्ति या एक वस्तुका ज़िक्र बारम्बार करना होता है; लेकिन बार बार एक ही व्यक्ति और एक ही वस्तुका ज़िक्र न करके उसके स्थानोंमें और बहुतसे पद इस्तेमाल करनेका क़ायदा है। इस तरह किसी पदकी जगह में जो पद आता है उसको 'सर्व्वनाम' कहते हैं।

রাম বনে গেলেন, তাঁহার শোকে রাজা মরিলেন।

रामके बन जानेपर, उनके शोकमें राजा मर गये।

इस जगह "राम" इस पदकी जगह "তাঁহার" पद आया है, अतएव "তাঁহার" पद सर्व्वनाम है।

जिस पदकी जगह सर्वनाम इस्तेमाल किया जाता है उस पदका जो लिङ्ग और वचन होता है, सर्वनामका भी वही लिङ्ग और वचन होता है; किन्तु स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग के भेदसे सर्वनाम में भेद नहीं होता। जैसे :

সীতা অত্যন্ত পতিব্রতা, তিনি পতিকে পরম দেবতা বলিয়া মানিতেন।

सीता अत्यन्त पतिव्रता (थी), वह पतिको परम देवता कह कर मानती थी।

(২) অশ্বগণ বলিষ্ঠ জন্তু, তাহারা ভারী ভারী বস্তু লইয়া দ্রুতবেগে চলিয়া যায়।

घोड़े बलवान् जानवर होते हैं, वे भारी भारी चीज़ लेकर तेज़ीसे चले जाते हैं।

यहाँ "সীতা" स्त्रीलिङ्ग एक वचनान्त पद है। सुतरां "তিনি" यह सर्व्वनाम भी स्त्रीलिङ्ग और एक वचनान्त पद है। "অশ্বগণ" पुंलिङ्ग और बहुवचनान्त पद है; इसी लिये "তাহারা" यह सर्व्वनाम भी पुंलिङ्ग और बहुवचनान्त पद है।

विशेष्य पद की भांति सर्व्वनाम पद के भी वचन पुरुष

और <u>कारक</u> होते हैं। विशेष्य पदका अर्थ देखकर ही वचन, पुरुष और कारक निर्णय किया जाता है।

सर्व्वनाम ये हैं—আমি, মুই, তুমি, তুই, আপনি, তিনি, সে, তাহা, তা, যিনি, যে, যাহা, ইনি, এ, ইহা, এই, উনি, ও, উহা, কে, সকল, সব, উভয়, অন্য, ইতর, পর, অপর, इत्यादि।

युष्मद्, अस्मद्, यद्, तद्, एतद्, इदम्, किम इत्यादि; ये सब संस्कृत सर्व्वनाम हैं। इन सब के अविकल रूप भाषा में काम नहीं आते। इन सब के स्थानमें आमि, तुमि, से, प्रभृति शब्द और उनके रूप भाषामें व्यवहार किये जाते हैं। संस्कृत सर्व्वनाम शब्द <u>कृत्</u>, <u>तद्धित</u> और <u>समासमें</u> व्यवहार होते हैं।

कितने ही सर्वनाम शब्द विभक्तियोंके लगाने से और ही तरह के हो जाते हैं। जैसे,—

मूलशब्द	चलित शब्द सम्भ्रान्तको	असम्भ्रान्तको
अस्मद्	আমি	
ভবৎ	আপনি	
युष्मद्	তুমি	তুই
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	
[illegible]		

अदस्	ऐ, उहा, उनि	ও
किम्	के, कि, कोन्	
सर्व्व	सब	

विभक्ति-योग के समय अन्य, पर, अमुक, इतर प्रभृति [illegible] शब्दों में कुछ रद् बदल नहीं होता अर्थात् वे ऐसे [illegible] ही रहते हैं।

सर्व्वनाम शब्दके रूप।

अस्मद् शब्द।

	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	आमि	आमरा
	मैं, मैंने	हम, हमने
कर्म	आमाके	आमादिगके
	मुझे, मुझको	हमें, हमको
करण	आमा द्वारा	आमादिगेर द्वारा
	मुझ से	हम से
सम्प्रदान	[illegible]	[illegible]
	मुझे, मुझको	हमें, हमको
अपादान	[illegible]	[illegible]
	मुझ से	हम से

अधिकरण	আমাতে	আমাদিগের মধ্যে
	मुझमें, मुझपर	हममें, हम पर
सम्बन्ध	আমার	আমাদিগের
	मेरा	हमारा

"যে" शब्द पुं॰ व स्त्री॰

	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	যে	যাহারা
	जिसने	जिन्होंने
कर्म	যাহাকে	যাহাদিগকে
	जिसे, जिसको	जिन्हें, जिनको
		इत्यादि।

"সে" शब्द पुं॰ व स्त्री॰

कर्त्ता	সে	তাহারা
	वह, उसने	वे, उन्होंने
कर्म	তাহাকে	তাহাদিগকে
	उसको	उनको

आदर प्रकाशनार्थ "সে" के स्थान में "তিনি"; "তাহারা" के स्थानमें "তাঁহারা", "যে" के स्थानमें "যিনি"; "যাহারা" के स्थानमें "যাঁহারা" इत्यादि व्यवहार किये जाते हैं।

और सब सर्व्वनामों के रूप भी ऐसे ही होते हैं। सर्व्वनाममें सम्बोधन नहीं होता, [illegible] एक होते हैं।

অব্যয়।

जिस शब्दके बाद कोई विभक्ति न हो, कारक-भेद से जिसके रूपमें भेद न हो, एवं जिसका लिङ्ग और वचन न हो, उसको "अव्यय" कहते हैं।

संयोजक, वियोजक आदि भेदोंसे अव्यय अनेक प्रकारके होते हैं। संयोजक अव्यय ये है—এবং, ও, আর, আরও, অপিচ, কিন্তু, অথচ, যদি, যদ্যপি, যেহেতু, যেন, বরং, সুতরাং, কেননা, কাজে, কাজেই इत्यादि।

वियोजक अव्यय ये हैं :—বা, কিংবা, অথবা, নতুবা, কি, তথাপি, তথাচ, না হয়, নয় ত, নহিলে, নচেৎ, অন্যথা इत्यादि।

शोक और विस्मय आदि सूचक अव्यय ये हैं—আঃ, উঃ, হায়, হা, উহু, ছিছি, রাম রাম, হরি হরি इत्यादि।

প্র, পরা, অপ, সম্, অব, অনু, নির্, দুর্, বি, অধি, সু, উৎ, পরি, প্রতি, অভি, অতি, অপি, উপ, আ, এই ২০ "उप-सर्ग" कहाते हैं।

उपरोक्त उपसर्ग जब क्रिया वाचक पदके पहले लग जाते हैं तब वह क्रिया-वाचक पद भिन्न भिन्न अर्थ प्रकाश करता है। जैसे,

প্রদান = देना	আদান = लेना
গমন = जाना	আগমন = आना
অপকার = बुराई	উপকার = भलाई

क्रिया प्रकरण।

होना, करना, प्रभृतिको "क्रिया" कहते हैं। जिन शब्दोंसे यह क्रिया समझी जाती है, उसको "क्रिया पद" कहते हैं। जैसे; हइतेछे, करितेछे इत्यादि।

भू, कृ, हस, गम, प्रभृतिको धातु कहते हैं। वे ही क्रिया की मूल होती हैं।

क्रिया दो तरह की होती है :—

(१) सकर्मक।

(२) अकर्मक।

जिन क्रियाओं के कर्म नहीं होते, वह सब क्रियाएं अर्थात् [illegible] प्रभृति धातुओंकी क्रियाएं अकर्मक होती हैं; क्योंकि इन सब क्रियाओं के कर्म नहीं होते। जैसे: हरि हसितेछे [illegible] इत्यादि। यहां हसतेछे, मरियाछे ये दो क्रिया हैं लेकिन इनके कर्म नहीं हैं इस वास्ते ये अकर्मक हैं।

जिन क्रियाओंके कर्म होते हैं वह सब क्रियाएं अर्थात् [illegible] प्रभृति धातुओंकी क्रियाएं सकर्मक होती हैं क्योंकि इन सब क्रियाओंके कर्म होते हैं जैसे

ঈশ্বর মঙ্গল করিতেছেন।

ईश्वर मंगल करता है।

সে পুস্তক পড়িতেছে।

वह पुस्तक पढ़ता है।

রাম আম ভক্ষণ করিল।

रामने आम खाया।

द्विकर्म्मक क्रिया।

বলা, দেখা, জিজ্ঞাসা, দেখান, শুনান प्रभृति क्रियाओंके दो कर्म होते हैं। इसी कारणसे इनको द्विकर्म्मक क्रिया कहते हैं। जैसे,

রাম শ্যামকে তোমার কথা বলিয়াছে।

रामने श्यामको तुम्हारी बात कही है।

আমি তোমাকে সে বিষয় জিজ্ঞাসা করিব।

मैं तुमसे यह विषय पूछूंगा।

পণ্ডিত শিষ্যকে শাস্ত্র দেখাইতেছেন

पण्डित शिष्यको शास्त्र दिखाता है।

ऊपरके उदाहरणमें "श्याम" और "बात" ये दो कर्म "कहि [illegible]" [illegible] हैं। [illegible] और "[illegible]" ये कर्म "[illegible]" [illegible] और [illegible] ये [illegible] [illegible] हैं

क्रियाके जिस रूप से काम के होनेका समय पाया जाय उसे "काल" कहते हैं।

काल तीन प्रकार के होते हैं :—

(१) वर्त्तमान।

(२) अतीत।

(३) भविष्यत्।

वर्त्तमान काल से यह पाया जाता है कि क्रिया का कार्य्य अभी हो रहा है। जैसे; শিশু খেলিতেছে। यहाँ खेलनेका काम आरम्भ हुआ है लेकिन समाप्त नहीं हुआ है। ऐसी दशामें 'खेलितेछे' इसी तरह के रूप प्रयोग किये जाते हैं। यही प्रकृत वर्त्तमान काल है।

अतीत काल से यह पाया जाता है कि क्रियाका काम हो चुका है। अतीतकाल को भूतकाल भी कहते हैं। अपेक्षाकृत पूर्व पूर्व कालकी अतीत क्रियाओं क्रमशः "अद्यतन" "अनद्यतन" और "परोक्ष" कहते हैं। जैसे: শিশু খেলিল, শিশু খেলিত, শিশু খেলিয়াছিল।

भविष्यत् काल से यह पाया जाता है कि क्रियाका कार्य्य आगे चलकर आरम्भ होनेवाला है। जैसे; শিশু খেলিবে।

विधि अनुज्ञा सम्भावना, इत्यादि क्रियायें और भी होती हैं

क्रिया [illegible]

की जाती है उसे "विधि" कहते हैं। ऐसी क्रिया से किसी काल का बोध नहीं होता। जैसे—

গুরুজনকে ভক্তি করিও।

बाप और गुरु में भक्ति रक्खो।

किसी विषय की आज्ञा या अनुमति देनेको "अनुज्ञा" कहते हैं। जैसे,

সে দেখুক = वह देखो।

তুমি যাও = तुम जाओ।

বাড়ী যাও = घर जाओ।

চুরি করিও না = चोरी मत करना।

কাহারো অন্যায় ব্যবহার করিও।

काम में न्याय से काम लो।

প্রতিবাসীকে আত্মবৎ প্রীতি কর।

पड़ोसी से अपने समान प्रीति कर।

অনুগ্রহ করিয়া আমাকে একখানি পুস্তক পড়িতে দিন।

कृपया मुझे एक पुस्तक पढ़ने को दीजिये।

यह जानने यह हो सकना इस तरह के ज्ञान को "सम्भावना" कहते हैं। जैसे

[illegible] = वह आ सकता है।

[illegible] = वह जा सकता है।

[illegible]

किस धातुका, कौन पुरुष, कौन कालमें, कैसा रूप होगा ;
…ी पद विन्यास को "धातुरूप" कहते हैं।

वर्त्तमान काल।

হওয়া ধাতু।

…त्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	प्रथम पुरुष
…তেছি	হইতেছ	হইতেছে

अतीत काल।

…त्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	प्रथम पुरुष
…লাম	হইলে	হইল
…য়াছি	হইয়াছ	হইয়াছে
…য়াছিলাম	হইয়াছিলে	হইয়াছিল

भविष्यत् काल।

…त्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	प्रथम पुरुष
…ইব	হইবে	হইবে

वर्त्तमान काल।

[illegible]

…त्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	प्रथम पुरुष
[illegible]	[illegible]	[illegible]

अतीत काल।

उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	प्रथम पुरुष
करिलाम	करिले	करिल
करितेछिलाम	करितेछिले	करितेछिल
करियाछिलाम	करियाछिले	करियाछिल

क्रियापदोंके रूप प्रयोगमें में कुछ कठिनता पड़ती है इस लिये हम नीचे कुछ उदाहरण और भी दे देते हैं।

सामान्य भूतकाल।

(Past Indefinite Tense)

	एक वचन	बहुवचन
उ० पु०	[illegible]	[illegible]
	मैं [illegible]	हम [illegible]
म० पु०	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]

आसन्न भूतकाल।

(Present Perfect Tense)

	एक वचन	बहुवचन
उ० पु०	আমি লিখিয়াছি	আমরা লিখিয়াছি
	मैं लिखा हूँ	हम लिखे हैं
म० पु०	তুমি লিখিয়াছ	তোমরা লিখিয়াছ
	तुम लिखे हो	तुम लोग लिखे हो
प्र० पु०	সে লিখিয়াছে	তাহারা লিখিয়াছে
	वह लिखा है	वे लिखे हैं

भविष्यत् काल।

Future Indefinite.

	एक वचन	बहुवचन
उ० पु०	আমি লিখিব	আমরা লিখিব
	मैं लिखूँगा	हम लिखेंगे
म० पु०	[illegible]	তোমরা লিখিবে
	[illegible]	[illegible]
प्र० पु०	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]

कभी कभी सकर्मक क्रिया से कर्मपद नहीं होता। जब अकर्मक क्रिया सकर्मक की तरह काम करती है। जैसे

[illegible] – [illegible] दिया।

[illegible] – [illegible] नहीं किया।

यहाँ "[illegible]" और "[illegible]" क्रियाओं से [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नहीं है।

[illegible] [illegible] क्रियाके [illegible] नहीं होता। जैसे;

[illegible] – मैं [illegible] हूँ।

[illegible] – तुम [illegible] हो।

[illegible] [illegible] क्रिया का [illegible] हुआ है [illegible] नहीं है। हिन्दीमें [illegible] [illegible] [illegible] है; जैसे; मैं [illegible] हूँ और तुम [illegible] हो। [illegible] [illegible] [illegible] "[illegible]" और "[illegible]" [illegible] [illegible] और "[illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] नहीं है। [illegible] [illegible] हूँ [illegible] "तुम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।

[illegible] [illegible] है।

[illegible] [illegible] [illegible]

है। "तुम" इस पद को क्रियाको मध्यम पुरुष को क्रिया कहते हैं। इन के सिवाय और पद की क्रिया को प्रथम पुरुष की क्रिया कहते हैं। जैसे :

আমি করিতেছি = मैं करता हूँ।
তুমি করিতেছ = तुम करते हो।
সে করিতেছে = वह करता है।

"आमि" उत्तम पुरुष है, उसकी क्रिया भी उत्तम पुरुष है। "तुमि" मध्यम पुरुष है, उस की क्रिया भी मध्यमपुरुष है। "से" प्रथम पुरुष है, उस की क्रिया भी प्रथमपुरुष है।

प्रथम पुरुष (3rd Person) के सम्भ्रान्त या माननीय होने से क्रियाके अन्तमें "न" और लगा दिया जाता है। जैसे :—

(१) তিনি করিয়াছেন = उन्होंने किया
(२) সে করিয়াছে = उसने किया

पहले उदाहरण में "तिनि" प्रथमपुरुष और आदरणीय है इसी से उसकी क्रिया "करियाछे" में "न" जोड़ दिया गया है; किन्तु "से" प्रथमपुरुष और साधारण मनुष्य है इससे उसकी क्रियामें "न" नहीं जोड़ा गया है।

कृदन्त ।

[illegible]

[illegible] और [illegible]
[illegible] हैं, जैसे, [illegible]
[illegible]

[illegible] क्रिया [illegible]
[illegible] क्रिया [illegible]
[illegible] हैं, जैसे

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] हैं, जैसे,

[illegible]

[illegible]

[illegible] हैं, जैसे

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] हैं [illegible]

[illegible] हैं जैसे

[illegible]

[illegible] हैं

ये प्रत्ययोंका नाम "कृत" और निष्पन्न पदोंका नाम "कृदन्त" है।

धातुके उत्तर "अन" और "ति" प्रत्यय होते हैं। "अन" और "ति" प्रत्ययान्त पद प्राय ही क्रिया-वाचक विशेष्य होते हैं। जिन पदोंके अन्तमें "ति" होती है वे स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे:

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
	অন, তি	শ্রবণ, শ্রুতি	শ্রবণ করা
।	अन, ति	श्रवण, श्रुति	श्रवण करनेका काम
	অন, তি	করণ, কৃতি	করা
	अन, ति	करण, कृति	करना, काम
र	অন, তি	গমন, গতি	যাওয়া
म	अन, ति	गमन, गति	जानेका काम
न	অন, তি	মনন, মতি	জানা
न	अन, ति	मनन, मति	जानना, मति
শ	অন, তি	দর্শন, দৃষ্টি	দেখা
श	अन, ति	दर्शन, दृष्टि	देखनेका काम
[illegible]	অন, তি	স্মরণ, স্মৃতি	স্মরণ করা
[illegible]	अन, ति	स्मरण, स्मृति	स्मरण करनेका काम
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]का काम

धातुके [illegible]

होता है। जिनके अन्तमें "त" प्रत्यय होता है वे पद प्राय ही कर्मके विशेषण होते हैं। जैसे;

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
কৃ	ত (ক্ত)	কৃত	जो किया गया है।
শ্রু	ত	শ্রুত	जो सुना गया है।
বি + স্তৃ	ত	বিস্তীর্ণ	जो व्याप्त है।
ভক্ষ	ত	ভক্ষিত	जो खाया गया है।
বচ	ত	উক্ত	जो कहा गया है।
যুজ	ত	যুক্ত	जो जोड़ा गया है।
দা	ত	দত্ত	जो दिया गया है।
গৈ	ত	গীত	जो गाया गया है।
জ্ঞা	ত	জ্ঞাত	जो जाना गया है।
বন্ধ	ত	বদ্ধ	जो बाँधा गया है।
ভজ	ত	ভক্ত	जो भजा गया है।
পা	ত	পীত	जो पिया गया है।
বি + ধা	ত	বিহিত	जो किया गया है।
ভুজ	ত	ভুক্ত	जो खाया गया है।
ছিদ	ত	ছিন্ন	जो काटा गया है।

धातुके उत्तर "তা" (তৃচ্), "ই" (ণিন্) "অক" (ণক), "অন" प्रभृति प्रत्यय लगाये जाते हैं। जिनके अन्तमें ये प्रत्यय होते हैं वे कर्त्ताके विशेषण होते हैं

अकर्मक धातुके कर्तृवाच्य अतीत कालमें "त" (क्त) लगाया जाता है। जैसे :

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
[illegible]	त (क्त)	[illegible]	जो [illegible]।
[illegible]	त	[illegible]	जो हुवे।
[illegible]	त	[illegible]	जो क्षय करे।
[illegible]	त	[illegible]	जो करे।
[illegible]	त	[illegible]	जो होवे।
[illegible]	त	[illegible]	जो खाय।
[illegible]	त	[illegible]	जो ग्रहण करे।
[illegible]	त	[illegible]	जो रहे।
[illegible]	[illegible]	[illegible]	जो स्थिर रहे।
[illegible]	[illegible]	[illegible]	जो [illegible]।
[illegible]	[illegible]	[illegible]	जो दान करे।
[illegible]	[illegible]	[illegible]	जो दोष करे।
[illegible]	[illegible]	[illegible]	जो [illegible] करे।
[illegible]	[illegible]	[illegible]	जो करे
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

धातु	प्रत्यय	शब्द	अर्थ
ग्रह	अक	ग्राहक	जो ग्रहण करे।
गै	अक	गायक	जो गान करे।
हन	अक	घातक	जो मारे।
दृश्	अक	दर्शक	जो देखे।
नृत्	अक	नर्तक	जो नाचे।
दा	अक	दायक	जो दान करे।
शी	अक	शायक	जो सोवे।
शुध्	अक	शोधक	जो शोध करे।
स्तु	अक	स्तावक	जो स्तव करे।
भू	अक	भावक	जो हो।
हृ	अक	हारक	जो हरण करे।
छिद्	अक	छेदक	जो काटे।
गम्	त (क्त)	गत	जो बीत गया।
श्रम्	त	श्रान्त	थका हुआ।
जन	त	जात	पैदा हुआ।
भू	त	भूत	जो हुआ है।
छिद्	त	छिन्न	छेदा हुआ।
मद्	त	मत्त	मतवाला।
	त	मृत	जो मर गया।

धातुके ऊपर "तव्य", "अनीय" और "य" प्रत्यय होता है। जिन धातुओंके बाद ये प्रत्यय लगते हैं वे सब धातु में कारक के विशेषण होते हैं और भविष्यत् कालका प्रकाश करते हैं। जैसे

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
শ্রু	তব্য, অনীয়, য	শ্রোতব্য, শ্রবণীয়, শ্রাব্য	যাহা শুনা যায়।
श्रु	तव्य, अनीय, य	श्रोतव्य, श्रवणीय, श्रव्य	जो सुना जाय।
গ্রহ	তব্য, অনীয়, য	গ্রহীতব্য, গ্রহণীয়, গ্রাহ্য	যাহা লওয়া যায়।
ग्रह	तव्य, अनीय, य	ग्रहीतव्य, ग्रहणीय, ग्राह्य	जो लिया जाय।
গম্	তব্য, অনীয়, য	গন্তব্য, গমনীয়, গম্য	যেখানে যাওয়া যায়।
गम्	तव्य, अनीय, य	गन्तव्य, गमनीय, गम्य	जाने योग्य, जहाँ जाया जाय।
ভুজ	তব্য, অনীয়, য	ভোক্তব্য, ভোজনীয়, ভোজ্য	যাহা খাওয়া যায়।
भुज	तव्य, अनीय, य	भोक्तव्य, भोजनीय, भोज्य	जो खाया जाय, खाने योग्य।
কৃ	তব্য, অনীয়, য	কর্তব্য, করণীয়, কার্য্য	যাহা করা যায়।
कृ	तव्य, अनीय, य	कर्त्तव्य, करणीय, कार्य्य	जो करा जाय, करने योग्य।
পা	তব্য, অনীয়, য	পাতব্য, পানীয়, পেয়	যাহা পান করা যায়।
पा	तव्य, अनीय, य	पातव्य, पानीय, पेय	जो पिया जाय, पीने योग्य।

तद्धित।

शब्दके पीछे अर्थ विशेषमें जिस प्रत्ययको जोड़नेसे शब्द बनता है, उसको "तद्धित प्रत्यय" कहते हैं।

हिन्दीमें भी पाँच प्रकारके तद्धित होते हैं।

(१) अपत्यवाचक। जिससे सम्बन्ध पाया जाय। इसके बनाने समय कहीं "अ" के स्थान में "आ" कर देते हैं। जैसे, "संसार" से सांसारिक।

कहीं "इ" के स्थान में "ऐ" कर देते हैं जैसे शिव से "शैव" "इतिहास" से "ऐतिहासिक"।

कहीं "उ" के स्थानमें "औ" कर देते हैं। जैसे, "पुलिन्द" से "पौलिन्देय" "कुन्ती" से "कौन्तेय", इत्यादि।

(२) कर्तृवाचक। ये "वाला" या "हारा" लगानेसे बनते हैं। जैसे, टोपी-वाला, पानीवाला, दूधवाला और लकड़हारा।

(३) भाववाचक। ये "ता" या "त्व" "आई" आदि लगाने से बनते हैं। जैसे, मूर्खता, मीठता, चतुरता, मूढ़ता, कौशल, शीतल, महत्व गुरुत्व, भलाई।

(४) गुणवाचक। ये "वान", "मान", "दायक" इत्यादि लगाने से बनते हैं। जैसे, बलवान, श्रद्धावान, सुखदायक, दुःखदायक, बुद्धिमान इत्यादि।

(५) ऊनवाचक। इससे लघुता पाई जाती है। खाटसे खटिया।

यहां हम हिन्दी व्याकरणकी रीतिसे तद्धित विषयको समझा चुके हैं। हिन्दी जाननेवालों को यही सूचना थी कि हिन्दी जाननेवाले अब परिश्रम से ढंगपर व्याकरणानुसार तद्धित को आसानी से समझ सकें।

शब्दके उत्तर अपत्यादि अर्थ में इ "एय" "य "आयन", "ईय", "इक", "य", "इन" और "क" प्रत्यय लगाये जाते हैं।

अपत्यार्थमें	विकारार्थमें	सम्बन्धार्थमें	भावार्थमें	कर्तृ वा कर्मार्थमें
दाशरथि	हैम	कैशोर	यौवन	धार्मिक
भागिनेय	राजत	[illegible]	शैशव	वैनायिक
कौन्तेय	दारव	सौर	लाघव	[illegible]
राघव		शारीर	कारुण्य	पैतृक
पाण्डव		[illegible]		

विशेषण शब्द के उत्तर भावार्थ में "त्व", "ता" और "इमन्" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे

शब्द	त्व	ता	इमन्
गुरु	गुरुत्व	गुरुता	गरिमा
महत्	महत्त्व	महत्ता	महिमा
नील	नीलत्व	नीलता	नीलिमा

शब्दके उत्तर "है"(आछे) इस अर्थ के प्रगट करनेके लिये "मत्", "वत्", "विन्" और "इन्" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे।

मत्	वत्	विन्	इन्
बुद्धिमान्	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पूर्णार्थ प्रत्यय युक्त पद :—

দ্বিতীয়	दूसरा	ঊনবিংশতিতম	उन्नीसवाँ
তৃতীয়	तीसरा	বিংশ	बीसवाँ
চতুর্থ	चौथा	একবিংশ	इक्कीसवाँ
পঞ্চম	पाँचवाँ	একবিংশতিতম	इक्कीसवाँ
ষষ্ঠ	छठा	ষষ্টিতম	साठवाँ
সপ্তম	सातवाँ	সপ্ততিতম	सत्तरवाँ
অষ্টম	आठवाँ	অশীতিতম	अस्सीवाँ
নবম	नवाँ	নবতিতম	नब्बेवाँ।
দশম	दसवाँ	শততম	सौवाँ।
একাদশ	ग्यारहवाँ	পঞ্চষষ্টিতম	पैंसठवाँ।
দ্বাদশ	बारहवाँ		
ত্রয়োদশ	तेरहवाँ		

गुणवाचक शब्दके उत्तर आधिक्य के अर्थके लिये "तर" "तम" "इष्ठ" और "ईयस" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे ;

शब्द	तर	तम	इष्ठ	ईयस्
গুরু	গুরুতর	গুরুতম	গরিষ্ঠ	গরীয়ান্
বহু	বহুতর	বহুতম	বহিষ্ঠ	বহীয়ান্
প্রশস্য	প্রশস্যতর	প্রশস্যতম	শ্রেষ্ঠ	শ্রেয়ান্
বৃদ্ধ	বৃদ্ধতর	বৃদ্ধতম	বর্ষিষ্ঠ	বর্ষীয়ান্

शब्दके बाद मत्वर्थ शब्द करनेके लिये 'वत्' और "मय" लगाते हैं जैसे

জনবৎ	जनके समान
গুরুবৎ	गुरुके समान
অধ্যাপকবৎ	अध्यापकके समान

संख्यावाचक शब्दके बाद प्रकार अर्थ में "धा" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे, দ্বিধা, ত্রিধা, শতধা, इत्यादि।

स्वरूपके अर्थ में शब्दके पीछे "मय" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे, স্বর্ণময়, তৃণময়, কাষ্ঠময় इत्यादि।

सर्व्वनाम शब्दके बाद कालके अर्थ में "दा" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे, সর্বদা, একদা, इत्यादि।

सर्व्वनाम शब्दके बाद आधार अर्थ में "त्र" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे ; সর্বত্র, অন্যত্র, একত্র इत्यादि।

कालवाचक शब्दके बाद उत्पन्न अर्थमें "तन" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे ; পূর্বতন, অধুনাতন इत्यादि।

किम् शब्द निष्पन्नपदके पीछे अनिश्चय अर्थ में "চিৎ" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे ; কিঞ্চিৎ, কদাচিৎ इत्यादि।

समास।

जब दो तीन अथवा अधिक पद अपने कारकों के चि[ह्न]
को त्याग कर आपस में मिल जाते हैं तब उनके योग
"समास" कहते हैं और इन के योग से जो शब्द बनता
उसे सामासिक शब्द कहते हैं जैसे ... ८ ...–

दो पृथक् पदोंको "गङ्गा जल" इस तरह एक पद बनाकर काम में ला सकते हैं। अग्नि, जल व वायु — इन तीनोंके एक पद बना कर "अग्नि जल वायु" इस तरह प्रयोग कर सकते हैं। "शाक व रोटी" इन दोनों पदों को "शाकरोटी" इस भांति एक करके प्रयोग कर सकते हैं। कई शब्दोंको इस भांति एक पद करने को ही समास कहते हैं।

समास तीन प्रकार का होता है द्वन्द्व, तत्पुरुष, कर्मधारय, बहुव्रीहि, और अव्ययीभाव।

किन्हींने समास छः प्रकार का माना है। इसमें इनके सिवाय 'द्विगु' समास और माना है।

द्वन्द्व।

इस पद मे जितने पद हैं सबके बीच "और" (व) के अर्थ रहते एक पद बना लिया जाय। जैसे,

[illegible]

तत्पुरुष।

[illegible]

कर्मपद के साथ जो समास होते हैं उन्हें द्वितीया तत्पुरुष कहते हैं। जैसे:

[illegible]

[illegible]

करण पद के साथ जो समास होते हैं उन्हें तृतीया तत्पुरुष कहते हैं। जैसे,

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सम्प्रदान पद के साथ जो समास होते हैं उन्हें चतुर्थी तत्पुरुष कहते हैं। जैसे,

[illegible]

[illegible]

अपादान पद के साथ जो समास होते हैं उन्हें पंचमी तत्पुरुष कहते हैं। जैसे

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सम्बन्ध पद के साथ जो समास होते हैं उन्हें षष्ठी तत्पुरुष कहते हैं। जैसे

स्वर्गे गत = स्वर्गगत।

हीन, शून प्रभृति कितने ही शब्दों के योग से तृतीया तत्पुरुष समास होती है। जैसे ;

ज्ञान द्वारा हीन = ज्ञानहीन।

विद्या द्वारा शून्य = विद्याशून्या।

कर्म्मधारय।

जिसमें विशेषण का विशेष्य के साथ सम्बन्ध हो उसे कर्म धारय समास कहते हैं। जैसे,

इस समास में विशेषण (Adjective) पद पहले और विशेष्यपद (Noun) पीछे रहता है और विशेष्यपद (Noun का अर्थ ही प्रधान रूप से प्रकाशित होता है। जैसे ;

परम + आत्मा = परमात्मा। महा + राज = महाराज

परम + ईश्वर = परमेश्वर। सत् + कर्म्म = सत्कर्म्म।

यहाँ परम और आत्मा इन दो पदों से समास हुई है परम पद विशेषण और आत्मा पद विशेष्य है। विशेषण प पहिले और विशेष्य पद पीछे है और उसके ही अर्थ ने प्रधा रूपमें प्रकाश पाया है इस इसी कारण से इसे "कर्मधारय समास कहते हैं

वहुव्रीहि।

वहुव्रीहि समास उसे कहते हैं जिस में दो तीन या अधिक पदोंका योग होकर जो शब्द बने उसका सम्बन्ध और किसी पद से हो। इस की परिभाषा इस भांति भी हो सकती है—विशेष्य विशेषण अथवा दो या उससे अधिक विशेष्य पदों में समास करने पर यदि उन शब्दोंका अर्थ प्रकाशित न होकर किसी और ही वस्तु या व्यक्ति का अर्थ प्रकाशित हो तो उसे वहुव्रीहि समास कहते हैं।

वहुव्रीहि समास करने पर सारे पद प्रायः विशेषण होते हैं; कभी कभी विशेष्य भी होते हैं। जैसे; क्षीण-काय, यहां क्षीण और काय इन दो पदों में समास हुई है। क्षीण विशेषण और काय विशेष्य है; किन्तु इन दोनों पदोंका अर्थ पृथक पृथक भाव से बोध नहीं होता, क्षीण-काय विशिष्ट कोई व्यक्ति बोध होता है; अतएव यहां वहुव्रीहि समास हुई।

क्षीणकाय इस पदसे यदि कृश शरीर यहो अर्थ समझा जाय और उससे कुछ व्याघात न हो, तो कर्मधारय समास हुई समझनी होगी, क्योंकि इस जगह विशेष्य पद का अर्थ हो प्रधान रूपसे प्रकाश पाता है।

[illegible] यहां भी [illegible] पद विशेष्य हैं। उसका अर्थ

चाका या पहिया है, পাণি पद भी विशेष्य है उसका अर्थ हाथ है। इन दोनों को समास होने से চক্রপাণি यह एक पद हुआ। इस से चक्र और हाथ, इन दोनों का कुछ अर्थ न निकलने के कारण नारायण रूप अर्थ का बोध होता है। अतएव यह बहुब्रीहि समास है और चक्रपाणि पद विशेष्य पद है।

इस समास में যার, যাতে, যা, যাহা इत्यादि पद व्यवहार किये जाते हैं। সে या যাহা प्रायः व्यवहृत नहीं होते। जैसे:

পীত অম্বর যার, সে পীতাম্বর অর্থাৎ কৃষ্ণ।
বৃহৎ কায় যার, সে বৃহৎকায়।
জিত ইন্দ্রিয় যাহা কর্তৃক, সে জিতেন্দ্রিয়।
স্বচ্ছ তোয় আছে যাতে, সে স্বচ্ছতোয়।
পাণিতে চক্র যার, সে চক্রপাণি।
নষ্ট মতি যার, সে নষ্টমতি।
মহৎ আশয় যার, সে মহাশয়।
ন অন্ত যার, সে অনন্ত।
ন আদি যার, সে অনাদি।

नोट (१) बहुब्रीहि और कर्मधारय समासमें महत् पहिले होनेसे "महत्' की जगह महा हो जाता जैसे,

२) बहुब्रीहि और कर्मधारय समास का पहला पद [illegible]ंग का विशेषण हो तो वह पुंलिङ्ग की भाँति [illegible]ता है। जैसे:

दीर्घा रात्रि = दीर्घ रात्रि।

छिन्ना [illegible] = छिन्न [illegible]।

[illegible] "रात्रि" शब्द स्त्रीलिङ्ग है और "दीर्घा" उसका [illegible] भी स्त्रीलिङ्ग है; किन्तु समास होने से विशेषण दीर्घा [illegible] होनेपर भी पुंलिङ्ग की भाँति "दीर्घ" हो गया। [illegible] भाँति "छिन्ना" का "छिन्न" हो गया।

३) समास में "न" इस अव्यय के बाद स्वरवर्ण होने [illegible] के स्थान में "अन्" हो जाता है लेकिन "न" के बाद [illegible] वर्ण होनेसे "न" के स्थानमें "अ" हो जाता है। जैसे:

न + अणु = अनणु।

न + [illegible] = [illegible]।

न + [illegible] = [illegible]।

न + [illegible] = [illegible]।

[illegible]

[illegible]

নিঃ নাই দয়া যার, সে নির্দয়।

নিঃ নাই লজ্জা যার, সে নির্লজ্জ।

पहिले उदाहरणमें "दया" शब्द के अन्तमें "आ" है लेकिन समास होने से "आ" का "अ" हो गया यानी "दया" का "दय" हो गया। इसी भांति और समझ लो।

(५) समास के पूर्वपद के "नकारान्त" होनेपर "नकार" का लोप हो जाता है। जैसे,

রাজন্-পুত্র = রাজপুত্র।

আত্মন্ কৃত = আত্মকৃত।

समास में युष्मद् और अस्मद् शब्द यदि पहले आवें, तो एक वचनमें उनके स्थानमें क्रमशः "त्वत्" और "मत्" हो जाते हैं। जैसे,

তোমার কৃত = ত্বৎকৃত।

আমার পুত্র = মৎপুত্র।

अव्ययीभाव।

अव्यय पद पहले बैठने पर जिसका समास हो उसको अव्ययीभाव कहते हैं। जैसे

কূলের সমীপ = উপকূল।

দিন দিন = প্রতিদিন।

শক্তির অনুসারে = যথাশক্তি।

রূপের সদৃশ = সরূপ।

বিধিকে অতিক্রম না করিয়া = যথাবিধি।

গ্রামের সমীপ = উপগ্রাম।

বনের সমীপ = উপবন।

वाक्य रचना।

जिस पद समूह के द्वारा सम्पूर्ण अभिप्राय प्रकाश होता है उसे "वाक्य" कहते हैं। जैसे,

(१) [illegible]

(२) [illegible]

(३) [illegible]

(४) [illegible]

वाक्य के अन्तर्गत जो शब्द होते हैं उनको रीतिमत यथास्थान स्थापित करनेको "वाक्यरचना" कहते हैं।

वाक्य रचना के समय पहले कर्त्ता और उसके बाद क्रिया रखा जाता है। जैसे,

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

(२) { तुमि याइतेछ
  { तोमरा याइतेछ

(३) { से याइतेछे
  { ताहारा याइतेछे

इनमें इस प्रकार "आमि" एकवचन और "आमरा" बहुवचन है, किन्तु दोनोंकी क्रिया एक ही है। इसीतरह "तुमि" एकवचन और "तोमरा" बहुवचन [illegible] दोनोंकी क्रिया एक ही है। "आमि" और "आमरा" उत्तम पुरुष हैं। [illegible] क्रिया "[illegible]" है और [illegible] और "तोमरा" मध्यम पुरुष हैं। इनकी [illegible] "[illegible]" है [illegible] पुरुष और [illegible] [illegible] करो।

नोट (२) जिन वाक्यमें उत्तम और मध्यमपुरुष किंवा प्रथम और उत्तम पुरुष अथवा प्रथम, मध्यम और उत्तम पुरुष एक क्रिया के कर्त्ता हों उस वाक्यमें उत्तम पुरुष की क्रिया ही व्यवहृत होगी। जैसे,

आमि ओ तुमि [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

नोट (३) [illegible] एक क्रिया के [illegible] <u>[illegible]</u> [illegible] करनी होगी। [illegible]

नोट (४) जैसे वाक्योंमें सब या कई पद एक ही प्रकार के वचन का व्यवहार करना चाहिये। আমি ও তোমরা যাইব, আমি ও তাহারা দেখিয়েছি, इस भाँति के वाक्य नहीं हो सकते। अगर ऐसा होगा तो अलग अलग क्रिया व्यवहार की जायगी।

क्रिया के सकर्मक या द्विकर्मक होनेसे क्रिया के ठीक पहले कर्मपद बैठेगा। जैसे,

আমি পুস্তক দেখিলাম।

রামচন্দ্র পুস্তক পড়িয়াছে।

মধু রামকে পুস্তক দান করিয়াছে।

[illegible]

असमापिका क्रिया समापिका क्रिया के पहले बैठेगी; असमापिका और समापिका क्रियाओंका कर्ता एक होगा और [illegible]

[illegible]

विशेषण पद विशेष्य के पहले बैठता है। जैसे ;

सुशीला बालिका।

बुद्धिमान बालक।

बहफली वृक्ष।

पहले उदाहरण में "सुशीला" विशेषण पद है और वह अपने विशेष्य "बालिका" के पहले बैठा है। इसी भांति और उदाहरण समझ लो।

नोट—अगर दो या दो से ज़ियादा विशेषण पद व्यवहार करने हों तो उन सब विशेषण पदोंके बीचमें संयोजक (जोड़नेवाला) अव्यय नहीं व्यवहार करना चाहिये। जैसे ;

महाराज हरिश्चन्द्र राय।

महात्मा धर्मात्मा राजा युधिष्ठिर।

यहां "राय" शब्द के "महाराज" और "हरिश्चन्द्र" दो विशेषण हैं। लेकिन दोनों विशेषणों के बीच में "और" या "व" इत्यादि संयोजक अव्यय नहीं रखे गये। इसी तरह दूसरे उदाहरण में भी समझ लो।

क्रिया का विशेषण क्रिया के पहले ही बैठता है; किन्तु क्रिया सकर्मक होने से प्रायः कर्म पद के पहले बैठता है। जैसे :

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] 'श्रत्' [illegible] है और "[illegible]" [illegible] है। [illegible]
[illegible] है [illegible] देता है।

[illegible] में [illegible] पद, [illegible] अथवा [illegible] में [illegible] शामिल [illegible] संयोजक अव्यय अर्थात् [illegible] [illegible] जाहिये। जैसे,

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] नियमानुसार [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] अव्यय का व्यवहार किया जाता है। जैसे,

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सम्बन्ध पद के बाद ही सम्बन्धी पद (जिसके साथ सम्बन्ध हो) बैठाया जाता है। जैसे :

ईश्वरेर महिमा।

कुबेरेर स्वर्ण कुटीर।

यहाँ "ईश्वरेर" पद सम्बन्धीपद है ; क्योंकि ईश्वर के साथ महिमा का सम्बन्ध है।

करण पद कर्तृपदके बाद और कर्म प्रभृति पदों के पहले बैठता है। जैसे .

तिनि स्वहस्ते एइ पुस्तकटि [illegible] करियाछेन।

हरि यष्टि द्वारा वृक्ष हइते फल पाड़िल।

यहाँ "[illegible]" यह करण पद है यह "तिनि" कर्तृपद के बाद और "पुस्तक" कर्मपद के पहले बैठा है इसीतरह दूसरे उदाहरण को समझ लो।

जिन सब अर्थों में अपादान कारक होता है उन सब अर्थ-बोधक पदोंके पहले अपादान पद बैठता है। जैसे ;

तिनि कुरुक्षेत्र हइते विरत हइयाछेन।

जो जिसका अधिकरण पद होता है, वह उसके पहले बैठता है कभी कभी बाद में बैठता है. जैसे

[illegible]

[illegible]

वक्तव्य।

इसमें सभी मात्र बंगला व्याकरण में प्रवेश मात्र करने की राह दिखाई है। इससे हिन्दी जाननेवालों को बंगला भाषा सीखने में सुगमता होगी। जिन्हें बंगला व्याकरण के अच्छाप्रकार सिखना चाहते हों, वे वृहत् बंगला व्याकरण देखें।

प्रथम भाग

समाप्त

हिन्दी बँगला शिक्षा ।

द्वितीय खण्ड ।

अनुवाद विषय ।

पहिला पाठ ।

দিন = था
সেখানকার = वहांका
রাজার = राजाका
তাঁর = उनका
তত = उतना
গৌরব = प्रतिष्ठा, महिमा
[illegible] = और
[illegible] = करते थे
[illegible] इतना
[illegible] [illegible]

সেই = उसी
যত = जितने
ছিলেন = थे
[illegible] [illegible] = [illegible]
পণ্ডিতেরা = पण्डितोंके
[illegible] = [illegible]
[illegible] = [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] = [illegible]

সীতা।

(১)

মিথিলা নামে এক রাজ্য ছিল। সেখানকার রাজার নাম ছিল জনক। তাঁর রাজ্য তত বড় ছিল না, বড় রাজা বলিয়াও তাঁর তত গৌরব ছিল না। সকল বড় বড় রাজারাই তাঁকে খুব মান্য করিতেন—খুব খাতির করিতেন। তাঁর এত মান হওয়ার অনেক কারণ ছিল।

সেই সময় কত বড় বড় রাজা ছিলেন, রাজা জনক সকলের চেয়ে বিদ্বান ছিলেন, সকলের চেয়ে জ্ঞানী ছিলেন। সকল শাস্ত্র তাঁর কণ্ঠস্থ ছিল। পণ্ডিতদের মধ্যে তর্ক হইলে, তিনি তার মীমাংসা করিতেন। তাঁর মীমাংসাই শেষ মীমাংসা,—[illegible] তাঁর উপর কথা বলিবার আর কেউ ছিল না।

সীতা।

[illegible]

अपेक्षा विद्वान् थे,—सबकी अपेक्षा ज्ञानी थे। सारे शास्त्र उनके कण्ठस्थ थे। पण्डित लोगोंके बीचमें वाद विवाद होनेपर, वे उसकी मीमांसा करते थे। उनकी मीमांसा ही अन्तिम मीमांसा थी,—उनका वाक्य ही वेदवाक्य था—उनके ऊपर बात कहने वाला और कोई नहीं था।

दूसरा पाठ।

তাই = वही.
শুধু = केवल
কি = क्या
যেমন = जैसा
তেমন = वैसा
কোন = किसी
পড়িলে = पढ़नेसे
বড় বড় = बड़े बड़े
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

কোন = कोई
উহাকে = उसको
হটাইতে = हटाते
পারেন = सकता
নাই = नहीं
নয় = नहीं
সেই কালে = उस समय
মত = अनुसार, समान
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

(২)

শুধু কি তাই—তিনি যেমন বিদ্বান্‌, তেমনি বুদ্ধিমান্‌ ছিলেন। কোন বিপদে আপদে পড়িলে অনেক বড় বড় রাজাও তাঁর পরামর্শ নিতেন। বীরত্বও তাঁর কম ছিল না। যুদ্ধ করিয়া কোন রাজাই তাঁকে হটাইতে পারেন নাই।

কেবল তাই নয়—সেকালে তাঁর মত ধার্ম্মিক মুনিঋষিও খুব কম ছিল। রাজা হইয়াও তিনি ভোগবিলাসী ছিলেন না। যখন রাজাসনে বসিতেন, কেবল তখন রাজপোষাক পরিতেন। আর সব সময় মুনিঋষির ন্যায় থাকিতেন। সর্ব্বদা জপ, তপ, ব্রত নিয়ম পালন করিতেন।

(२)

केवल इतना ही था—वे जैसे विद्वान्, वैसेही बुद्धिमान भी थे। किसी विपत्ति आफतमें पड़ने पर बहुतसे बड़े बड़े राजा भी उनका सलाह लेते थे। वीरता भी उनकी कम न थी। लड़कर कोई राजा भी उनको हटा नहीं सकता था।

केवल इतना ही नहीं उस समयमें उनके समान धार्मिक ऋषिमुनि भी बहुत कम थे। राजा होकर भी वे भोग विलासी नहीं थे। वे जब राज आसन पर बैठते थे सिर्फ उस समय राजाकी पोशाक पहिनते थे और सब समय ऋषिमुनिकी भांति रहते थे। सदा जप तप, व्रत, नियम, पालन करते थे।

तीसरा पाठ ।

উদ্দেশে = उद्देश में
কাজ = काम
কতই = कितना ही
আমোদ = प्रसन्नता
হইত = होती थी
তিনি = वे, वह
হইয়াও = होकर भी
বলিয়া = इससे, इस कारणसे
লোকে = मनुष्य, सर्वसाधारण लोग
বলিত = कहते थे
যুদ্ধে = युद्धस्थ
আবার = और, फिर, दूसरी बार
থাকিয়া = रहकर
তাহা = वह
করিয়াছিলেন = किया था
এবং = और भी
পাকা = पक्के
খেলোয়াড় = खिलाड़ी
তলোয়ার = तलवार
ঘুরাইয়া = घुमाकर

---

(৩)

ঈশ্বর উদ্দেশে কাজ করিয়া তাঁর কতই আমোদ হইত। তিনি রাজা হইয়াও যুধিষ্ঠির মত কাজ করিতেন বলিয়া, লোকে তাঁকে [illegible]

(२)

ईश्वरके लिये सब ही काम करनेसे उन्हें बड़ी प्रसन्नता होती थी। वे राजा होकर भी ऋषिमुनिकी भांति काम करते थे, इससे लोग उनको राजर्षि कहते थे। राजर्षि जनक राजके कामोंमें रहकर और धर्मके कामोंमें सन्यासी थे। उनमें एक बार सन्यास अवलम्बन करनेपर भी उन्होंने उसको ग्रहण किया था। वे सभी काम करते थे, परन्तु किसी कामसे लिप्त न थे। वे बहुत बड़े विज्ञानी थे, क्योंकि उन्होंने एक हाथसे धर्मकी और दूसरे हाथसे कर्मकी तलवार घुमाकर सभीको विस्मित किया था।

चौथा पाठ।

[illegible] = [illegible]	[illegible] = [illegible]
[illegible] = [illegible]	[illegible]
[illegible] = [illegible]	[illegible] = [illegible]
[illegible] = [illegible]	[illegible] = [illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

সেই = वही   কিছু = कुछ
কে = कौन   হইল = हुआ

(৪)

জনকের দয়ার সীমা ছিল না। বাড়ীতে বার মাসে তের পার্ব্বণ, উৎসব, আমোদ, আহ্লাদ। আর দান ধ্যান, রাতদিন খোলা অন্নসত্র—যে আসে, সেই খায়। তাঁর রাজ্যে আর দীন দুঃখী কে থাকিতে পারে?

এমন যে রাজর্ষি জনক তাঁর সন্তান নাই। প্রজা, জন-পরিজন ও রাজকর্ম্মচারী সকলেরই মুখ মলিন। রাণী সন্তানের জন্য আকুল। সকলের এই ভাব দেখিয়া, রাজা কোথাও শান্তি পান না। কি করেন—তাঁদের অনুরোধে যাগ যজ্ঞ করিলেন; কিন্তু কিছুতেই কিছু হইল না।

(४)

जनककी दयाकी सीमा न थी। घरमें बारह महीनेमें तेरह पर्व, उत्सव आमोद, आह्लाद (होता था)। और दान, दानध्यान रात दिन खुला अन्नक्षेत्र, जो आता वही खाता। उनके राज्यमें और दीन दुःखी कौन रह सकता (था)।

ऐसे जो राजर्षि जनक (थे) उनके लड़का बाला नहीं (था)। प्रजा, अपने पराये और राजकर्मचारी सभोंका मुँह मलिन रहता था। रानी सन्तानके लिये व्याकुल रहती थीं। सभोंका यह भाव देखकर, राजा कहीं भी शान्ति नहीं पाते थे। क्या करें—उनके अनुरोधसे होम यज्ञ किया परन्तु किससे भी कुछ न हुआ।

पाँचवाँ पाठ।

করিবেন = करेंगे	বাগানে = बाग़में
জায়গা = जगह	ফুটিল = खिले, फूटे
ঠিক = ठीक	অলি = भौंरा
হইল = हुई	তুলিবার = तोड़नेके लिये, चुननेके लिये
জিনিষ-পত্র = चीज़ वस्तु	গেলেন = गये
জোগাড় = जोगाड़, जुटाव	মাঝে = बीचमें
হইতে লাগিল = होने लगा	সরোবর = तालाब
পোহাইল = सबेरा होना, बीतना	তিন = तीन
কাক = कौआ	পাড়ে = धोर, किनारेपर
কোকিল = कोयल	মাঠ = मैदान, चरागाह
ডাকিয়া উঠিল = पुकार उठी, बोल उठी	আসিয়া পড়িলেন = आ पड़े

(৫)

আবার সকলে সন্তান লাভের জন্য যজ্ঞ করিতে অনুরোধ করিল। রাজর্ষি জনক আবার যজ্ঞ করিবেন। যজ্ঞের জায়গা ঠিক হইল, জিনিষ পত্র যোগাড় হইতে লাগিল।

একদিন রাত পোহাইল, কাক, কোকিল ডাকিয়া উঠিল, বাগানে ফুল ফুটিল, অলি গুন গুন করিল। ক্রমে ফুল তুলিবার সময় হইল, রাজর্ষি বাগানে গেলেন। বাগানের মাঝে সরোবর, [illegible] আকাশ

খানি লাল করিয়া সরোবরের জলে খেলিতেছে। সরোবরের তিন পাড়ে ফুলের বাগান, এক পাড়ে খোলা মাঠ। রাজর্ষি ফুল তুলিতে তুলিতে মাঠে আসিয়া পড়িলেন।

(५)

फिर सभोंने सन्तान लाभके लिये यज्ञ करनेका अनुरोध किया। राजर्षि उनके फिर यज्ञ करेंगे। यज्ञकी जगह ठीक हुई, चीज़ वस्तु जोगाड़ होने लगी।

एक दिन रात बीती (सवेरा हुआ), कौवे, कोयल बोल उठे, बागमें फूल खिले, भौंरे गुन गुन गाने लगे। धीरे धीरे फूल चुननेका समय हुआ, राजर्षि बागमें गये। बागके बीचमें तालाब (है) उसमें स्फटिकके समान जल (है)। सूर्यदेवकी सुनहरी किरनें आकाशको लाल करके तालाबके पानीमें खेल रही हैं। तालाबके तीन ओर फूलका बाग है एक ओर जानवरोंके चरनेका मैदान (है)। राजर्षि फूल चुनते चुनते उसी मैदानमें आ पड़े।

छठा पाठ।

[illegible] = पिठ — [illegible] — तुरत फटे हुए.
[illegible] = कंधा — तुरत खिले हुए
[illegible] = [illegible] — [illegible]
[illegible] — [illegible]
[illegible] — [illegible]
[illegible] — [illegible]

করা চাই = करना चाहिये	ছাড়িলেন = छोड़ दिया
লাঙ্গল = हल	তাড়াতাড়ি = जल्दीसे
আসিল = आया	ছুটিয়া গেলেন = दौड़कर गये
গরু = बैल	কোলে = गोदमें
যেন = जैसे, मानो	তুলিয়া নিলেন = उठा लिया
আলোকিত = रौशन	সাড়া পড়িল = कोलाहल मचा
উঠিল = उठा	অনায়াসে = बिना परिश्रम,
ফালে = फालमें	यत्नायत्न

---

(৬)

ঐ খোলা মাঠেই যজ্ঞ হইবে। মাঠের মাঝে মাঝে গাছ পালা, উহার কোন জায়গা উঁচু কোন জায়গা নীচু। সে সব চাষ করিয়া সমান করা চাই। লাঙ্গল আসিল, গরু আসিল, রাজা নিজেই চাষ করিতে আরম্ভ করিলেন। চাষ করিতে করিতে মাঠ যেন আলোকিত হইয়া উঠিল। দেখেন লাঙ্গলের ফালে মস্ত মোটা পদ্মফুলের মত এক মেয়ে! মেয়ে কি মেয়ে, যেন আকাশের চাঁদ! জোছনার মত রঙ, ননীর মত শরীর, মেয়ে দেখিয়াই রাজা লাঙ্গল ছাড়িলেন, তাড়াতাড়ি ছুটিয়া গেলেন, মেয়ে কোলে তুলিয়া নিলেন। চারিদিক হইতে লোক জন আসিল [illegible] সাড়া পড়িয়া গেল। [illegible] মত। [illegible]

(६)

एक खुले मैदानमें ही यज्ञ होगा। मैदानके बीच बीचमें पेड़ रहते (हैं), उसकी ज़मीन कहीं ऊँची कहीं नीची है। यह सब हल चलाकर बराबर करनी चाहिये। हल आया, बैल आया, राजाने स्वयं हल चलाना आरम्भ किया। हल चलाते चलाते मैदान मानो आलोकित हो उठा। देखा कि हलके फालमें तुरत फूटे हुए कमलके फूलके समान एक लड़की (है)! लड़की कैसी लड़की (है) मानो आकाशका चन्द्रमा! चाँदनीका रंग, मक्खन का शरीर। लड़की देखकर राजाने हल छोड़ दिया, जल्दी से दौड़कर गये, लड़कीको गोदमें उठा लिया। चारों ओरसे मनुष्य आये, जयजयकार मच गई। बाबुओंने बड़ा आनन्द का कोलाहल मचा। राजाने अनायास ही सन्तान पाकर ईश्वरके आगे कृतज्ञता प्रकाश की।

सातवाँ पाठ।

[illegible] = [illegible] हैं, [illegible] [illegible] = कहाँ गई
[illegible] = [illegible] [illegible] = [illegible]
[illegible] = [illegible] [illegible] = [illegible],
[illegible] = [illegible] [illegible]
[illegible] = [illegible] [illegible] = [illegible]
[illegible] = [illegible] [illegible] = [illegible] हुए
[illegible] [illegible]

লতা পাতা = तोरन बन्दनवार   সাজাইল = सजाया
ত্রুটি = कमी   ভূষিত রহিল = भूषित रहा

(৭)

সত্যই রাজর্ষির বড় আনন্দ হইল। আনন্দে মেয়ে নিয়ে রাজা অন্দরে গেলেন। "ভগবানের দান" এই বলিয়া মেয়েটি রাণীর কোলে দিলেন। মেয়ে পাইয়া রাণীর আহ্লাদের সীমা নাই, সে কি যত্ন! সে কি আদর! যত যত্ন করেন, যত আদর করেন, তবু মনে হয়, মেয়ের যত্নের বুঝি ত্রুটি রহিল।

রাজপুরী লতা পাতা পুষ্প পতাকায় সাজান হইল। ফটকের চূড়ায় চূড়ায় বাদ্য বাজিয়া উঠিল। রাজ্যময় উৎসবের ঘোষণা হইল। দেবালয়ে পূজা অর্চনার ধূম পড়িল। রাজপুরী আনন্দময়ী হইয়া উঠিল। রাজার সুখে প্রজার সুখ। প্রজারাও আমোদে মাতিল। আপন আপন ঘর বাড়ী সাজাইল। সাত রাত পর্য্যন্ত নগর আলোকমালায় ভূষিত হইল।

(७)

सचमुच राजर्षि को बड़ा आनन्द हुआ। आनन्द में लड़की को लेकर राजा अन्दर गये। "ईश्वरका दान" यह [illegible] लड़की [illegible]। लड़की पाकर [illegible] प्रसन्नता [illegible] रहा। यह कैसा [illegible] जितना [illegible], जितना ही आदर [illegible] मालूम [illegible]

राजपुरी तोरण बन्दनवार फूल पताकाओं से सजाई गई। फाटकोंके ऊपर ऊपर (नक्कारखानोंमें) बाजे बज रहे। राज्य-भरके प्रजाको [illegible] हुई। देवालयोंमें पूजा एवं नाना धूम मची। राजपुरी आनन्दमयी हो उठी। राजाके कुलके प्रकाश हुए (थे)। प्रजा भी आमोदमें मतवाली (हुई). घरमें घरमें [illegible] द्वार सजाये। नाच गान तक नगर [illegible] कहींसे मुदित हुआ।

सातवाँ पाठ।

[illegible] = दासी	[illegible] दान
[illegible] = हाथी	[illegible] = रही गई
[illegible] = [illegible]	[illegible] = दस हाजार
[illegible]	[illegible] = [illegible]
[illegible] = [illegible]	[illegible] = [illegible]
[illegible] = इच्छा	[illegible] = [illegible]
[illegible] = [illegible]	[illegible] = [illegible]
[illegible] = [illegible]	[illegible] = [illegible]
[illegible]	[illegible]

রাজ্যে রাজ্যে লোকের অভাব ঘুচিয়া গেল। আশার অধিক দান পাইয়া সকলেই যোড়হাতে ভগবানের নিকট রাজকন্যার দীর্ঘজীবন কামনা করিতে করিতে আপন আপন দেশে চলিয়া গেল। রাজর্ষি জনকের কন্যালাভের বিবরণ চারিদিকে প্রচারিত হইল। মেয়ের অসামান্য রূপলাবণ্যের কথাও দেশ বিদেশ রটনা হইল। এই অপূর্ব্ব মেয়ে দেখিবার জন্য দেশ বিদেশের লোক দলে দলে আসিতে লাগিল। শিষ্যগণসহ মুনি ঋষি আসিতে লাগিলেন, দলে দলে ব্রাহ্মণ পণ্ডিত আসিলেন, মেয়ে দেখিলেন, প্রাণ ভরিয়া আশীর্ব্বাদ করিয়া চলিয়া গেলেন। দলে দলে রাজগণ আসিলেন—মেয়ে দেখিলেন, যাঁর যাঁর যা আদরের জিনিষ ছিল, মেয়েকে উপহার দিলেন, চলিয়া গেলেন।

(৮)

राजाने लड़कीके मंगलके लिये बहुतसे मणि माणिक्य और बछड़े सहित सैकड़ों गायें दान कीं। नाना राज्यके दीन दुःखियोंको आशाके बाहर धन दिया। सात रात सात दिन लगातार दान चलता रहा। राज्य राज्यमें लोगोंका अभाव दूर हुआ। आशासे अधिक दान पाकर सभी हाथ जोड़कर ईश्वरके निकट राजकन्याके दीर्घजीवनकी कामना करते करते अपने अपने देशमें चले गये। राजर्षि जनकके कन्यालाभ का समाचार चारों ओर फैल गया। लड़कीके असामान्य रूपलावण्य की बातें देश विदेशमें रटी जाने लगीं। इस अपूर्व लड़कीको देखनेके लिये देश विदेशसे मनुष्य दलके दल

चले गये । जिन्होंने साथ आविकुलि भी चले गये । इसके इस ब्राह्मण पण्डित आदि, लड़की देखी, जो आकर आशीर्वा करके चले गये । इसके इस राजा आदि--लड़की देखी जिसको जिसको जो प्यारी चीज़ दी, लड़कीको उपहार दे चले गये ।

नवाँ पाठ ।

পর = बाद	পাওয়া যাইবে = पायी जायगी पाया जायगा
চাহিল = चाहा	কেন = क्यों
দিয়া = देकर	শোনে = सुने
মোটে = बिना कृपा	আগে = आगे
চোখ = आंख	ফুরায় = पूरा होना
না জানি = नहीं जानता	হইতে = से
আরও = और भी	আছেন = आती थीं
কত = कितना (बहुत)	না হইলে = नहीं तो, न होनेस
মানুষের = मनुष्यका	
ইনি = ये	

(৯)

তাহার পর প্রভাত। দলে দলে প্রজা আসিয়া মেয়ে [illegible] চাহিল মেয়েকে দিয়া আপন ঘরে চলিল [illegible] হইতে কত অন্তঃপুরে বাহিরে [illegible] [illegible] চলিল [illegible]

মেয়েরা শতে শতে আসে—মেয়ে দেখে—রূপের কত সুখ্যাতি করে। আহা,রূপ কি রূপ—যেন ফোটা পদ্মফুল, চাঁদের মত মুখ, পদ্মের মত চোখ, ননীর মত শরীর! আহা! এখনই এত রূপ,—বড় হইলে না জানি আরও কত সুন্দর হইবে। মানুষের কি এত রূপ কখনও হয়? নিশ্চয়ই ইনি কোন দেব কন্যা। না হইলে যজ্ঞক্ষেত্রেই বা পাওয়া যাইবে কেন? এত রূপের কথা যে শোনে সেই একবার দেখিতে আসে। একদল আসে, একদল যায়, রাজবাড়ীর লোক আর ফুরায় না।

(৫)

इसके बाद सुना। इसको इस प्रकारसे पाकर लड़की देखी; जिसके मनमें जो चाहा (मनमें जो आया) लड़कीको देकर अपने घर चला गया। राजसभामें लड़की भीतर रानीकी गोदमें गई, वहाँ मुनियोंकी स्त्री, ऋषियोंकी स्त्री, मुनिकी कन्याएँ, ऋषिकन्याएँ आईं (उन्होंने) लड़की देखी, आशीर्वाद दिया, चली गईं। राज्यकी सैकड़ों स्त्रियाँ आईं—लड़की देखी—रूपकी कितनी सुख्याति की। अहा! रूप कैसा रूप, मानो खिला कमलका फूल। चन्द्रमाके समान मुँह, कमलकी आँखें, मक्खन सा शरीर। आहा! अभी ही इतना रूप(है)बड़ी होने पर न जाने और भी कितनी सुन्दर होगी। मनुष्यका इतना रूप क्या कभी होता है? निश्चयही ये कोई देवकन्या हैं। नहीं तो यज्ञ-क्षेत्रमें क्योंकर पाई जातीं? इतने रूपकी बात जो सुनता था वही एकबार देखनेको आता था। एक दल आता

था, एक दम आता था, रात मतलबके भोग दम नहीं होते है।

दशवाँ पाठ।

[illegible] = क्रमाद   [illegible] = चकरकर
[illegible] — होते न होते   [illegible] = धीरे धीरे
[illegible] = वास्ते, कारणसे   [illegible] = ढेर ढेर
[illegible] = बचा   [illegible] = बढ़ता
[illegible] = कोई कोई   [illegible] = मछुके मछलियोंके साथ
[illegible] = दुबारते है
[illegible] = छिटकना छुटपन   [illegible] = खेलते
[illegible] = हँसती   बगला [illegible] = ढाप दिया।

---

(१०)

[illegible]

(१०)

यह उत्सव आमोद समाप्त होने न पाये थे कि फिर राज-कन्याके नामकरणका उत्सव आरम्भ हुआ। जनकने खेतमें पाई थी इसलिये लड़कीका नाम रखा सीता। जनककी कन्या होनेके कारण कोई कोई उनको जानकी कह कर पुकारता था। सीता दिनों दिन बड़ी होने लगी। मा बापकी गोद छोड़कर घुटनों चलने लगी। घुटना चलना छोड़कर, मा बापकी उँगली पकड़ धीरे धीरे पाँव पाँव (करते करते) चलना सीखा। छोटे छोटे लड़कों लड़कियोंके साथ खेलनेमें भी ध्यान देने लगी।

ग्यारहवाँ पाठ।

[illegible] = बहुत, बड़ा	[illegible] = सौभाग्य
[illegible] = वे	[illegible] = दिन
[illegible] = [illegible]	[illegible] = नाम धरना
[illegible] = दास	[illegible] = जिसका कोई बहुत कुछ
[illegible] = [illegible]	[illegible] = जाती थी।
[illegible] = कभी	[illegible] = [illegible]
[illegible] = बिलकुल पहला	[illegible] = [illegible]
[illegible] = [illegible]	[illegible]
[illegible] = [illegible]	

(১১)

রাজা আজকাল রাজকার্য্য বড় দেখেন না। তিনি মেয়ে নিয়েই ব্যস্ত। রাজা সভায় যান, মেয়েও তাঁর সঙ্গে যান। যখন রাজা বসেন—মেয়ে তাঁর কাছে বসে। তিনি কখনও মেয়ে নিয়ে খেলা করেন, কখনও মেয়েকে লেখা পড়া শিখান [illegible] কখনও বা সাংসারিক কাজকর্ম্ম দেখান—কখনও বা [illegible] [illegible] নানা প্রকারের [illegible], [illegible] করেন। [illegible] সহিত [illegible] [illegible] পান।

(११)

राजा आजकल राजके काम बहुत नहीं देखते थे। वह अपनी लड़की को लेकर ही व्यस्त रहते थे। राजा सभा में जाते (तो) उनकी लड़की भी उनके साथ जाती थी। होम यज्ञ करते (थे)—लड़की उनके पास ही बैठती। वे कभी लड़कीके साथ खेलते, कभी लड़कीको लिखना पढ़ना सिखाते। कभी संसारके काम धन्धे दिखाते और कभी धर्मका उपदेश देते थे। [illegible] इसके अतिरिक्त और सब शिक्षाके लिये जितनी [illegible] अवस्था करते [illegible]

[illegible]

বহু = বহুত

যখনই = জভী

তখনই = তভী

স্বেচ্ছাপ্রবৃত্ত = [illegible]

আদর্শ = আদর্শ

এই = যহী

ধর্মনিষ্ঠার = ধর্মনিষ্ঠাকী

কাহিনী = কহানী

বলেন = কহতে হৈঁ

মনে প্রাণে = জী প্রাণ লগাকে

এবং = ঔর

লজ্জা = লজ্জা

তাঁহাদিগকে ধরিয়া = উন্হেঁ [illegible]

মিটে = মিটনা

বাসনা = বাসনা

[illegible] = [illegible] রহতী থী

(১২)

পৃথু রাজ, নিজের দেশের ব্যবস্থা করিয়াই [illegible] না, যখনই সময় পান তখনই স্বেচ্ছাপ্রবৃত্ত [illegible] [illegible], অতএব, এই সব পুণ্যবতী আদর্শ নারী [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] এই সব লোকের এবং [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] দিয়া [illegible] [illegible]।

[illegible]

(१२)

केवल व्रत, नियम पालनको व्यवस्था करके ही राजर्षि शान्त नहीं होते थे, कभी समय पाते थे तभी स्नेहभरी भाषामें लड़कोंको सती, सावित्री, अरुन्धती, इन्हीं सब पुण्यवती आदर्श सती रमणियोंकी कहानी कहते थे। सीता मन प्राणसे वही सब सुनती थीं और उन्हीं सब देवी चरित्रोंका अनुकरण ही अपने जीवनका लक्ष्य बनाकर स्थिर करती थीं।

और सुनती थीं तपोवनकी बातें। तपोवनकी बात सुननेमें सीताका बड़ा ही आग्रह (था)। राजसभामें मुनि ऋषि आने पर, उन्हें बैठाकर तपोवनकी बात सुनती थीं। वहाँ सुनकर उनका जी न भरता था। फिर बहाना करके पिताके मुँह से सुना चाहती थीं। पिताके मुँहसे तपोवनकी पवित्र मीठी बातें सुनते सुनते बालिका सीता तन्मय हो जाती थीं।

तेरहवाँ पाठ।

ছাড়িয়া = छोड़कर	সেখানে = वहां
থাকিলে = रहने	ছানাটির = बच्चे का
পিছনে = पीछे	ধরিয়া = पकड़कर
সাজি - फूलका चँगेर	আদর করিলেন = प्यार किया
[illegible] चलती थी	দুটি - दो
[illegible] बैठते थे	[illegible] कोमल कण्ठ
[illegible] पढ़ते थे	[illegible] पत्ता
[illegible] [illegible]	[illegible] लाकर

খান = खाती थी	খাওয়াইলেন　खिलाया
ততক্ষণ = उतनी देर	কাছে = पास
বিশেষ = जरूरी	একটু = कुछ, थोड़ा
কাজে = काममें	

(১৩)

সীতা তাঁর বাবাকে ছাড়িয়া থাকিতে পারেন না। রাজর্ষি ফুল তুলিতে যান—সীতা তাঁর পিছনে সাজি নিয়ে চলেন। জনক পূজা করিতে বসেন—সীতাও ফুল, দূর্বা, চন্দন নিয়ে খেলার পূজায় বসিয়া যান। রাজর্ষি শাস্ত্র পড়েন—সীতাও তাঁর পুঁথি খুলিয়া পড়িতে বসেন। জনক পূজা না করিয়া জল খান না—সীতারও ততক্ষণ উপবাস। রাজা যখন বিশেষ কাজে ব্যস্ত থাকেন, সীতা কাছে থাকিতে পারেন না। তখন সীতা বাগানে যান—সেখানে হরিণ ছানাটির গলা ধরিয়া একটু আদর করিলেন, দুটি কচি পাতা আনিয়া তাকে খাওয়াইলেন।

(१३)

सीता अपने पिताको छोड़कर नहीं रह सकती थीं। राजर्षि फूल तोड़ने जाते थे—सीता उनके पीछे फूलका चँगेर लेकर चलती थीं। जनक पूजा करने बैठते थे सीता भी फूल, दूर्वा, चन्दन लेकर खेलकी पूजापर बैठ जाती थीं। राजर्षि शास्त्र पढ़ते थे सीता भी अपनी पोथी [illegible] पढ़ने बैठती थीं। जनक बिना पूजन किये खाते नहीं थे।
[illegible]

[illegible] बातमें [illegible] रहता है, मैना पास नहीं रहने सकती थी। इस प्रकार मैना बाहरमें भागी — बड़ी हरिनके [illegible] ताल धरकर प्यार करती थी [illegible] लाकर उसको सिखाती थी।

चौदहवाँ पाठ ।

[illegible] = हिरनके बिंद. हिरनोंमें	[illegible] = किसीके भी [illegible] (बहुवचन पदमें)
[illegible] = घबड़े रहते थे	[illegible]
[illegible] = दोहा.हुआ नाप	[illegible] वन
[illegible] — छिद	[illegible] — नहीं मिटती थी
[illegible] = कांटा	[illegible] जगह
[illegible] — गहने कपड़े	[illegible] = कष्ट जानेपर
[illegible] — खेलकर	[illegible] — फिरनेमें
[illegible] — बैठमें	[illegible] = आना किया. बाधा दिया
[illegible] — जिसका थी	
[illegible] = हरिनके बच्चों	[illegible] — सुखी

वहाँसे

(२६)

[illegible]

দেখিতে যাবেনই। জনক আর কি করেন—নিরুপায় চলিলেন। আহা, সীতা তপোবন দেখিয়া কতই খুসী। ঋষিবালিকাদের সঙ্গে খেলা করিয়া তাঁর আমোদ ধরে না। হরিণশিশুগুলিকে দু'হাতে কচি কচি ঘাস, পাখীগুলিকে ফোলা, ঋষিবালক বালিকাদিগকে ফল মূল খাওয়াইয়া যে তাঁর আশা মিটে না। তপোবনই যেন তাঁর সুখের জায়গা। সেখানে গেলে তাঁর আর রাজবাড়ী আসিতে ইচ্ছা করে না। জনক এক দিনের কথা বলিয়া গেলে সীতার জন্য তিন দিনেও ফিরিতে পারেন না।

(১৪)

রাজর্ষি জনক তপোবন দেখনে চলে—সীতানে ভী জিদ্ পকড় লী—'পিতা' মৈঁ আপকে সাথ চলুঁগী।' অভী জনক [illegible] ঋষি বালিকাওঁকে [illegible] নহীঁ। [illegible] সীতা তপোবন দেখনে আয়ী থী। [illegible] 'সীতা তপোবন দেখকর কিতনী খুশ (খুশী) ঋষি বালিকাওঁকে সাথ খেল করকে উসকা জী নহীঁ ভরতা থা। [illegible] পক্ষিয়োঁকো দানা ঔর বালক বালিকাওঁকো ফল ফূল দেকর [illegible]

पन्द्रहवाँ पाठ।

পাইবার = पानेके	কেউ = कोई भी
পর = बाद	কাকে = किसको
হয় = हुई	ফেলিয়া = छोड़कर, फेंककर
রাখেন = रखा, रखा था	ছায়ায় = छायामें, साथमें
বড়টির = बड़ीका	আবদার = ज़िद
ছোটটির = छोटीका	ভাব = प्रेम

(১৫)

সীতাকে পাইবার পর রাণীর একটি মেয়ে হয়, তাঁহার নাম রাখেন ঊর্ম্মিলা। কুশধ্বজ নামে জনকের এক ভাই ছিলেন, তাঁরও দুইটি মেয়ে—বড়টির নাম মাণ্ডবী, ছোটটির নাম শ্রুতকীর্ত্তি। তাঁরাও সীতার মত জনকের স্নেহের ভাগী। সীতার সঙ্গে তাঁদের বড়ই ভাব, কেউ কাকে ফেলিয়া থাকিতে পারেন না। সীতার ছায়ায় থাকিয়া তাঁরাও সীতার মত হইয়া উঠিলেন।

সীতার শিশুকাল গিয়াছে, বাল্যকালও যায় যায়। তাঁর শরীরের কান্তি দিন দিন বাড়িতে লাগিল। এখন আর সে চঞ্চলতা নাই, সে আবদার নাই, সে বায়না নাই। মধুর লজ্জা আসিয়া যেন সব মন ভরিয়া দিল

१५

सीताजीके पानेके बाद रानीके एक लड़की हुई, उनका नाम रखा—उर्मिला। कुशध्वज नामके जनकके एक भाई थे, उनके भी दो कन्याएं थीं—बड़ीका नाम मांडवी छोटीका

माता सुनती थीं (था)। ये भी सीताके साथ जंगलमें चली गयी थीं (थीं)। सीताके साथ उनका बड़ाही प्रेम था। कोई सिपीको छोड़कर नहीं रह सकती थीं। सीताके कारण रहकर ये भी सीताकी भांति चली गईं।

सीताका बचपन गया है, लड़कपन भी जाने वाला है। उनके शरीरकी कान्ति दिनों दिन बढ़ने लगी। अब और वह चञ्चलता नहीं है, वह जिद नहीं है, वह खेलना नहीं है। मधुर लज्जा ने आकर बाल्यभाव दूर कर दिया।

सोलहवां पाठ।

[illegible] = चालभरके	[illegible] = मुहूर्त भर भी
[illegible] = अधिकारी	[illegible] = पड़ोसी
[illegible] = प्यार करती थी	पड़ोसी सब
[illegible] = अपने परायेका	[illegible] = घेरे रहती थी।
[illegible] = जिला, जिनाव	[illegible] = सिर्फ़ भी
[illegible] = [illegible]	[illegible] = आंखमें
[illegible] = महीं सब	[illegible] = कंकड़
[illegible] = कंकड़	

[illegible]

[illegible] ছিলেন। [illegible] এবং [illegible] পারেন না। [illegible] করেন। [illegible] করেন, [illegible] করেন, [illegible] করেন। [illegible] না। [illegible] — এ কি? এ কি [illegible] ? [illegible]

(१६)

सीता इस समय भी सबसे ना बालकों जैसा बर्ताव करती थी, हरिणोंको जैसे प्यार करती थी, मोरपर मयूरियोंपर वैसे ही, अपने पराये पर दया करती थी। सीता मानो सभीके सुख दुःखकी चिन्ता करती थी। सखियाँ सीताको छोड़कर एक पल भी नहीं रह सकती थीं, इसीलिये सदा उनको घेरे रहती थीं। यह सखियाँ सबकी सीताकी सब कुछ थीं। सीता जिनको पालती थी, उनको ही वे सबसे प्यार करती थीं, [illegible] करती थीं, पालन करती थीं। [illegible] देखने से [illegible] नहीं [illegible] [illegible] देखकर [illegible]

राज्यमें हाटबाटमें प्रजा प्रजामें, घर घरमें, क्या रानी, क्या गृहस्थ, क्या भिखारिनी, सभी कहते हैं—यही सीताके रूप गुणकी बातें।

इस असाधारण कन्यारत्न मिलनेकी आशा, सब देशोंके राजकुमारोंके मनमें जाग उठी। सभी सीताको पानेके लिये जनकके पास आठ भेजने लगे। किसी किसी दुष्ट राजाने बलपूर्वक सीताहरणका भय भी दिखाया। राजर्षि जनककी नींद टूटी।

"ऐसी कन्याको बाद लड़की किसको दूंगा? कौन इसका यथार्थ आदर कर सकेगा? कौन इस रत्नका मूल्य समझेगा? सीताको ब्याहकर मैं ही किस तरह रह सकूंगा?" यही चिन्ता उनके मनमें नहीं। परन्तु चिन्ता करके क्या होगा?—"लड़की तो ब्याहनी ही होगी। एक विषम दाय है! कौन उपयुक्त वर है? किसे देखें लड़की सुखी होगी? जिस रत्नके लिये पृथिवी लालायित है, जिसका ऐसा रूप है भी पानेसे इसको (इस) रत्नकी रक्षा कर सकता। इस कन्याको ग्रहण भी किस तरह कर? [illegible]

अट्ठारहवाँ पाठ।

পণ = प्रण	যাইয়া = जाकर
সব চেয়ে = सबसे	রব পড়িয়া গেল = धूम मच गई
হরধনু = हरका धनुष	
ভাঙা = तोड़ना	

(১৮)

যেমন অপরূপ মেয়ে, পৃথিবীর সার রত্ন সীতা—তেমন তাঁহার বিবাহের পণও হইল সব চেয়ে কঠিন কাজ—হরধনু ভাঙা।

জনকরাজার প্রতিজ্ঞার কথা রাজ্যে রাজ্যে ঘোষিত হইল। যাঁহারা ভাট পাঠাইয়াছিলেন, তাঁহারা নিরাশ হইলেন। বীর বলিয়া যাঁহাদের গৌরব আছে, তাঁহারা আনন্দিত হইলেন।

আগে আগে কে ধনুক ধরিবে, কে আগে যাইয়া সীতা লাভ করিবে—এই জন্য সকল রাজারই সাজ সাজ রব পড়িয়া গেল।

(१८)

जैसी आश्चर्यमयी लड़की, पृथिवीकी सार रत्न सीता (है)—वैसा ही उसके विवाहका प्रण भी हुआ सबसे कठिन काम—हरका धनुष तोड़ना।

जनकराजाके प्रतिज्ञाकी बात राज्य राज्यमें घोषित हुई। जिन्होंने भाट भेजे थे वे निराश हुए। वीर रहनेके कारण जिनका गौरव है वे आनन्दित हुए।

किसे पहिले कौन धनुष उठायगा कौन आगे जाकर

सीता लाभ करेगा—इसके लिये सभी राज्योंमें तय्यारियोंकी धूम मच गई।

उन्नीसवाँ पाठ।

এ পর্য্যন্ত = अबतक	কেউবা = कोई भी
যত = जितनी	কাজেই = लाचार हो
হাতী = हाथी	একে একে = एक एक करके
সিপাই = सिपाही	জাঁকজমক = शानशौकत
সান্ত্রী = हथियारबन्द सिपाही, पहरेदार	আসরে = चला हो
	মহাভাবনায় = बड़ी चिन्तामें
লোক-লস্কর = मनुष्य फौज	এত সাধের = इतनी प्यारी
ধনুক = धनुष	এনে দাও = ला दो
পিঠ্টান্ = भागना	প্রভু = ईश्वर

(১৯)

দলে দলে যত রাজা রাজপুত্র সব আসিল। সঙ্গে হাতী, ঘোড়া, সিপাই-সান্ত্রী, লোক-লস্কর যে কত, তার সংখ্যা নাই। কার আগে কে ধনুক ধরিবে তা নিয়ে বিবাদ। কোন রাজা ধনুক দেখিয়াই পিঠটান দিলেন, কেহবা তুলিতে চেষ্টা করিলেন, কেউবা তুলিলেন, কিন্তু গুণ দিতে কেহ পারিলেন না। রাজা ও [illegible] [illegible] [illegible]

না হইলে ইংরাজের কিরূপ শিক্ষা হয়? রাজপুত্রের যেমন [illegible] হইয়া অমনই মত হইল।

তবুও [illegible] —আমার এই [illegible] হয় কিনা হইবে না? যদি কেহ এমন প্রতিজ্ঞা করিলেন। তবেই [illegible] —[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] 'প্রভু' [illegible]? [illegible] প্রভু।"

(১৮)

इसके बाद जितने राजा, राजकुमार (थे) सब आये। आपने अपने हाथी-घोड़े, सिपाही-नौकर-चाकर, [illegible] जितने (थे), उनकी गिनती नहीं (है)। [illegible] चाहिये कौन धनुष उठाकर चढ़ा सकता है। कोई राजा धनुष देखकर ही भागे, किसी ने उठाकर देखा और किसी ने उठाया, परन्तु कोई भी चिल्ला न चढ़ा सका — [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नहीं हुआ। किसी
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

करते थे। हाथ जोड़कर आँखोंमें आँसूभरे हुए ईश्वरको पुकारते और कहते थे—"प्रभु! सीताका वर कहाँ (है)? ला दो प्रभु।"

बीसवाँ पाठ।

ঠাট্টা = ठट्ठा
বর = [illegible]
সই = सखी
উঠা = चढ़
কপালে = भाग्यमें
অদৃষ্ট = भाग्य, कर्म
ছুটিবার = छुटनेका, मिलनेका
ফিরিয়া গেলেন = लौट गये
যা হয় = जो हो, जो भी चाहे

(२०)

সীতার মনে কোন চাঞ্চল্য নাই। কত রাজা আসিলেন, রাজপুত্র আসিলেন, ধনুকে ছিলা পরাইতে না পারিয়া ফিরিয়া গেলেন। কাহারও কথাই সীতার মনে উঠিল না। তা না উঠিলে কি? তবু তাঁহার বিপদ উপস্থিত—সখীদের কাছে আর তাঁর থাকিবার উপায় নাই। তারা তাঁকে কত ঠাট্টা করে। এক এক রাজা আসে, আর অমনি "সই, তোর 'বর এলো' 'বর এলো'" বলিয়া অস্থির করে। যেই চলিয়া যায় অমনি—"সই, তোর কপালে [illegible]" [illegible]।

[illegible] উদ্বেগ নাই। [illegible] বলেন, [illegible] অবশ্য [illegible] মরিয়া [illegible] যেমন

ছাড়া পণ তাতে যমরাজ ভিন্ন অপরের ছুটিবার উপায় নাই।"

সীতা বলেন "বাবা আমার ভালর জন্যই পণ করিয়াছেন। তোমরা আমাকে যা হয় বল—বাবার কথা কেন?—মা-বাপ যা করেন, সন্তানের মঙ্গলের জন্যই করেন। তাতে যদি সন্তান দুঃখ পায়, উহা তার অদৃষ্টের ফল।"

(२०)

सीताके मनमें कोई चाञ्चल्य नहीं है। कितने राजा आये, राजकुमार आये, धनुपर चाँप न चढ़ा सकनेके कारण लौट गये। किसीकी बात भी सीताके मनमें न उठी। उनके नहीं उठनेसे क्या (हुआ)? तब भी उनको विपद उपस्थित (है)—सखियोंके पास अब उनके रहनेका उपाय नहीं (है)। वे सब उनसे कितना ठट्ठा करती (हैं)। एक एक राजा आता है, इस तरह "सखी! तेरा "वर आया" "वर आया"" कहकर तङ्ग करती हैं। ज्योंही (वह) चला जाता है त्योंही "सखी,तेरे भाग्यमें विवाह नहीं है" कहकर दुःख करती हैं।

इससे सीताके मनमें कोई उद्वेग नहीं (है)। सीता कहती हैं—"भगवान्‌ने जिसको निर्देश किया है उनके आनेपर अवश्य प्रणकी रक्षा होगी। उनकी इच्छा न होनेपर, तुम सब जिसको चाहो (उसको) टेरनेसे तो न होगा।" सखी कहती हैं "तुम्हारे पिताकी जैसी दुनियासे बाहर प्रतिज्ञा है, उसमें यमराज भिन्न दूसरा वर मिलनेका उपाय नहीं है।"

सीता कहती थी — "पिताने मेरे भलेके लिये ही प्रण किया

कलेजा काँप उठा। सूखा पत्ता झड़कर गिरनेसे—सावित्री यह समझकर कि कोई सत्यवानको छीन लेनेके लिये आता है चिन्तित हुई।

तेईसवाँ पाठ।

হাত = हाथ	নেমে এস = उतर आओ
আপন = अपना	ফুরিয়ে গেল = बीत गया
চেপে ধরেন = दबा धरती है	আঁধার = अँधेरा
ভয় ভয় কর্‌চে = डर मालूम होता है	খসান যায় = काटी जाय
কাঠ = लकड़ी	ব্যথায় = दर्दसे
কেটে = काटकर	মাথার = माथेकी
চল = चलो	দারুণ = भयानक, जोरकी, कष्टकर
কাটতে = काटनेके लिये	ছটফট = छटपट
উঠ্‌লেন = उठे, चढ़े	ঢলে পড়লেন = ढलक पड़े
তলায় = नीचे	দেহ = शरीर
দাঁড়িয়ে = खड़ी होकर	কালি = काला
পানে = ओर	হয়ে গেছে = हो गया है
রইলেন = रहो	মুখ দিয়ে = मुँहसे
হয়েছে = हुआ है	ফেনা উঠছে = फेन निकलता है
ডেকে ডেকে = पुकार	আঁখির পাতা = आंखकी पलक

(২০)

অমনি তিনি দ্বিগুণ জোরে স্বামীর হাত আপন হাতে চেপে ধরেন। সাবিত্রী বল্‌লেন—আমার কেমন ভয় ভয় কর্‌চে, তুমি শীঘ্র কাঠ কেটে ঘরে চল। সত্যবান আর দেরি না ক'রে কাঠ কাটতে গাছের উপর উঠ্‌লেন। গাছের তলায় দাঁড়িয়ে সাবিত্রী স্বামীর মুখের পানে চেয়ে রইলেন। "আমি ডালের মুখ হয়েছে, কাঠের বোঝা ভারী হয়েছে—এখন নেমে এস!" সাবিত্রী গাছের তলা থেকে ডেকে ডেকে বলছেন—নেমে এস, এখন নেমে এস! বেলা যে ফুরিয়ে গেল, বনের পথ আঁধার হ'ল—এখন নেমে এস!

সত্যবান গাছের উপর থেকে এক-পা দু-পা ক'রে নীচে নেমে আস্‌ছেন, এমন সময়—বিধির লিপি না খণ্ডান যায়—অমনি মাথার যাতনায় ছট্‌ফট্‌ ক'রে তিনি গাছের তলায় ঢ'লে পড়্‌লেন। সাবিত্রী ছুটে এসে দেখেন—স্বামীর দেহ কালি হ'য়ে গেছে, মুখ দিয়ে ফেনা উঠ্‌ছে আঁখির পাতা নড়ে না—হায় হায়, এ কি হ'ল!

(২১)

[illegible]

(২৪)

একধারে কাঠের বোঝা, একধারে স্বামীর দেহ—কোনের বধূ সাবিত্রী এই আঁধার বনে একলা এখন কি করবেন! বুক ফেটে তাঁর কান্না উথলে উঠল—জোর করে, তিনি বুক চেপে স্বামীর দেহ কোলে তুলে বনের ভিতর বসে রহিলেন।

আঁধার পক্ষের আঁধার রাত। চারদিকে আঁধারের মাঝে শেয়াল ডাকছে, বাদুড় উড়ছে, গাছের পাতা খসে পড়ছে—সাবিত্রী স্বামীর দেহ বুকে চেপে স্বামীর মূর্তি ধ্যান করছেন। দেখতে দেখতে দুপুর রাত কেটে গেল, তবু তো তাঁর সাড়া নেই—কাঠের মত শক্ত হয়ে সাবিত্রী স্বামীর দেহ আগলে রহিলেন।

(२४)

एक ओर काठका बोझा, एक ओर स्वामीका शरीर—दुलहिन सावित्री इस अँधेरे वनमें अकेली इस समय क्या करेगी! कलेजा फटकर उसकी रुलाई आई—जोर करके, कलेजा दबाकर वह स्वामीके शरीरको गोदमें उठाकर वनमें बैठी रही।

अँधेरे पक्षकी अँधेरी रात (है)। चारों ओर अँधकारमें सियार बोलता है, चमगादड़ उड़ता है, पेड़का पत्ता खिसक पड़ता है—सावित्री स्वामीका शरीर कलेजेसे दबाकर स्वामीकी मूर्ति ध्यान करती है। देखते देखते दो पहर रात बीत गई [illegible] है।

काठकी भाँति कठोर होकर सावित्री स्वामीके शरीरकी रक्षा किये रहीं।

উমা।

पच्चीसवाँ पाठ।

ক্রমে ক্রমে = धीरे धीरे	দিন দিনই = दिनों दिन
শিশু = बच्चा	বাড়িতে লাগিল = बढ़ने लगा
একটু একটু করিয়া = थोड़ा थोड़ा करके	লয় = लेता था
	চাঁদপানা = चाँद सरीखा
একটুখানি = छोटा, थोड़ा	জোছ্না মাখা = ज्योति भरा
জ্যোৎস্না পরিপূর্ণ = ज्योति भरा, चाँदनी भरा	বিলাইতেই = बाँटनेके लिये
সেরূপ = उस तरह	

(২৫)

ক্রমে ক্রমে শিশু কন্যাটী বড় হইয়া উঠিল। প্রতিপদের চন্দ্র যেমন প্রথম একটুখানি থাকে, আর প্রতিদিনই একটু একটু করিয়া বড় হইয়া জ্যোৎস্না-পরিপূর্ণ ও মনোহর হইয়া উঠে, হিমালয়ের শিশু মেয়েটিও সেরূপ ক্রমে ক্রমে বড় হইয়া উঠিল। দিন দিনই উহার সৌন্দর্য্য বাড়িতে লাগিল। মেয়েটীকে যে দেখে, সেই আদর করে, যে দেখে, সেই কোলে লয়। যেমন চাঁদপানা মুখ, তেমনি জোছ্নামাখা শরীর; তা আবার ননীর মত কোমল, এমন মেয়ে কি আর হয়! মনে হয় যেন পৃথি-

যেন সমস্ত হিমালয়েই তাহার সৌন্দর্য্যে আনন্দধাম হইয়ে পড়িয়া গিয়াছিল। হিমালয়ের বাড়ীতে রোজ বহু অভ্যাগত আসিতে লাগিল। তাহারা ঐ মেয়ের রূপ দেখিয়া অবাক। পর্ব্বতের মেয়ে ছিল, তাই সকলে আদর করিয়া উহাকে "পার্ব্বতী" বলিয়া ডাকিত।

পার্ব্বতীর মা বাপের কথা আর কি বলিব। পার্ব্বতীকে পেয়ে তাঁহারা যেন হাতে চাঁদ পেয়েছেন। মেয়ের দিকে চাহিলে, তাঁহাদের আর ক্ষুধা তৃষ্ণা থাকে না। এক মিনিট মেয়েটি চোখের আড়াল হইলে মা বাপ যেন অস্থির হইয়া পড়েন।

उमा।

(२५)

धीरे धीरे उमा कन्या बड़ी हो गई। प्रतिपदाका चन्द्र जिस तरह पहले छोटासा रहता है और रोज़ रोज़ थोड़ा थोड़ा बड़ा होकर ज्योति भरा और मनोहर हो जाता है, हिमालयकी वही कन्या भी उसी तरह धीरे धीरे बड़ी हो गई। दिनों दिन उसका सौन्दर्य बढ़ने लगा। लड़कीको जो देखता (है), वही प्यार करता (है), जो देखता है, वह छोड़ने नहीं (चाहता)। जिस तरह चांदसरीखा मुँह, वैसा ही ज्योतिर्मय शरीर (है)। वह फिर मक्खनसा कोमल है) ऐसी लड़की का दुनियामें [illegible] है। मनमें आता है मानो पृथिवीमें आनन्द [illegible] लिये ही आनने लड़कीको आनन्दधामसे भेज दिया है। हिमालयका

[illegible] हैं। [illegible]

[illegible] है। [illegible] है। [illegible]

[illegible] पाठ १

[illegible]

হীরার ঝিনুক এনে দিলেন। পার্ব্বতী যখন আধ আধ স্বরে মা" বলিত, তখন মেনকার আনন্দ দেখে কে। ক্রমে পার্ব্বতীর বয়স ৩।৪ বৎসর হইল। এখন ত পুতুল খেলার সময়। পার্ব্বতীর পুতুলের অভাব কি ? কত সোণার পুতুল, রূপার পুতুল, স্ফটিকের পুতুল,আর তাদের কত রকমের জামা। সাটিনের জামা, মখমলের জামা ; লাল,নীল, বেগুনে, কত রঙের জামা, আর তাতে হীরা, মাণিক, ঝক্ ঝক্ করে। পার্ব্বতী খেলার সাথীদের সঙ্গে পুতুল খেলা করে। পুতুলের বিয়ে হয়, আর কত আমোদ প্রমোদই না হয়। রাজবাড়ীর পাশ দিয়াই গঙ্গা নদী বহিয়া যাইতেছে। উহার তীরে সাদা সাদা বালিগুলি রূপার মত চিক্ চিক্ করে। পার্ব্বতী সখিগণ লইয়া সেই বালিরাশিতে খেলা করিতে যায়। সোণার হাঁড়িতে বালি দিয়া ভাত রাঁধে, আর পুতুলের বিয়ের সময় সকলকে নিমন্ত্রণ করে খাওয়ায়। বরের বাড়ী হইতে কত লোকজন আসে, পার্ব্বতী সোণার থালে বালির ভাত ও পাতার তরকারী পরিবেশন করে।

(२६)

बालेने प्यार करके महलोंके भिते सोनेकी दूधकी कटोरी और हीरेका खलल ला दिया। पार्वती जब तोतले स्वरमें माँ कहती (थी)तब मेनकाका आनन्द कौन देखे। धीरे धीरे पार्वतीकी अवस्था तीन चार बरसकी हुई। अब तो गुड़िया खेलनेका समय है। पार्वतीको गुड़ियोंका क्या अभाव • कितनी ही सोनेकी गुड़ियाँ चाँदीकी गुड़ियाँ स्फटिककी

पुतली और उनकी किसमें रंगकी पोशाक ; साटनकी पोशाक, रेशमकी पोशाक लाल,नीली,बैंगनी किसमें रङ्गकी पोशाक और उसके बीचमें हीरा,माणिक,झिलमिल करता है। पार्वती सखियोंके साथ गुड़िया खेलती है। गुड़ियेका ब्याह होता है और कितनी ही हंसी खुशी होती है। राजमहलके पास ही गंगाजी बह रही है। उसके किनारेपर सफेद सफेद बालू चाँदीकी तरह झिलमिल करती है। पार्वती सखियोंको लेकर कभी बालूकी ढेरमें खेलने जाती है। सोनेकी हाँड़ीमें बालू डालकर भात सिभाती है और गुड़ियेके ब्याहके समय सभीको निमन्त्रण करके खिलाती है। घरके सजानमें कितनेही मनुष्य आते हैं, पार्वती सोनेकी थालमें बालूका भात और पत्तेकी तरकारी परोसती है।

छब्बीसवाँ पाठ।

[illegible] बाड़ी = [illegible] घर	छबिर = तसवीरकी, तसवीरदार
काच = शीशा	बई = किताब
[illegible] = [illegible]	[illegible] दिलेन = ला दी
शिखिबार = सीखनेका	से गुलि = वह सब
पुतुल = गुड़िया	[illegible] = [illegible] थी
[illegible] = [illegible]	[illegible] = [illegible]
[illegible] = [illegible]	[illegible] है
[illegible] = [illegible]	

(২৯)

যার সেই পুতুলটিকে জামাই-বাড়ী নিয়ে গেল, পার্ব্বতী কান্না আরম্ভ করে। সে দিন রাত্রিতে আর ভাত খায় না। এমনি ভাবে খেলাধূলায় পার্ব্বতীর দিন চলিতে লাগিল। এসব দেখিয়া বাপ মায়ের মনে আর আনন্দ ধরে না। তখন পার্ব্বতীর লেখাপড়া শিখিবার সময় হইল। সে রাজকন্যা, তার ত আর স্কুলে গিয়া পড়িতে হইবে না। পর্ব্বতরাজ বাড়ীতেই গুরুমা রাখিয়া দিলেন। পার্ব্বতী সোনার পাতে হীরার কলম দিয়া 'ক' 'খ' লিখিতে লাগিল। দুই মাসের মধ্যেই পড়া, বানান, শেষ হইয়া গেল। এখন ছবির বই পড়িবার সময়। বাপ আদর করিয়া কত সুন্দর সুন্দর ছবির বই আনিয়া দিলেন পার্ব্বতী সেগুলি দেখে আর হাসে। কি সুন্দর ছবি! একটা বেঙ ছিল. একটা হাতী গিলিতে চায়। বেঙের কি সাহস। পার্ব্বতী ছবি দেখিয়া হাসে, আর মনে মনে ভাবে, বেঙ কি কখনও হাতী গিলিতে পারিবে?

(৩০)

और कन्या गुड़ियेको ससुरके घर ले जानेपर पार्वती रोना आरम्भ करती है। उस दिन रातको फिर भात नहीं खाती। इसी भावसे खेलकूदमें पार्वतीका दिन बीतने लगा। यह सब देखकर बाप माईके मनमें आनन्द नहीं समाता। इसके पार्वतीका लिखना पढ़ना सीखनेका समय हुआ। वह राजकन्या (है). उन्हें तो स्कूल जाकर पढ़ना न

होगा। पर्वतराजने घरमें ही गुरुआनी रख दी। पार्वती थोमेसे पतोपर चौरेको कलमसे 'क' 'ख' लिखने लगी। छः महीनेमें बोलमें ही संयुक्त अक्षर और वर्ण-विचार समाप्त हो गया। अब तो तस्वीरदार किताब पढ़नेका समय (है)। पिताने प्यार करके कितनी ही सुन्दर सुन्दर तस्वीरवाली किताब ला दी। पार्वती वह सब देखती और हँसती थी। कैसी सुन्दर तस्वीर है! एक बैल, एक हाथी निगलना चाहता है। बैलका कैसा मालूम है! पार्वती तस्वीर देखकर हँसती (है) और मन ही मन विचारती (है), बैल क्या कभी हाथी निगल सकेगा।

अट्ठाईसवाँ पाठ।

নানা = बहुतसे	[illegible] = मगर
[illegible] = तरहके	[illegible] = पेड़
[illegible] = घड़ा	[illegible] = [illegible]
[illegible] = तोता	[illegible] = जो भागता है
[illegible] = पक्षी	[illegible] = पहाड़
[illegible] = छोटी [illegible]	[illegible] = बकरी
[illegible] = [illegible]	[illegible] = प्यार करे

(২৮)

[illegible]

রাজার গল্প, শীত বসন্তের গল্প, কত গল্পই বা পার্ব্বতী শিখিয়া ফেলিল। পার্ব্বতী খুব মনোযোগ দিয়া লেখা পড়া করিত। রাজ-কন্যা হইলে কি হবে, তার একটুকুও দেমাক ছিল না। সে গুরুমাকে খুব ভক্তি করিত। গুরুমা যাহা বলিতেন, সে তাহাই করিত। পড়ার সময় একটুকুও দুষ্টামি করিত না। কাহারও নিকট মিথ্যা কথা কহিত না। এমন মেয়েকে কে না ভাল বাসে? তোমরাও যদি মন দিয়া লেখাপড়া কর এবং সর্ব্বদা সত্য কথা বল, সকলেই তোমাদিগকে ভালবাসিবে।

(২৮)

तस्वीरवाली किताबोंमें कितनी तरहकी कविता और कहानी है। तोता पक्षीकी कविता, छोटी लड़कीके ब्याहपर कविता, कितनी ही तरहकी कविता (है)। और कहानियां? सियार और मगरकी कहानी· टेंग बेंगीकी कहानी, नकट राजाकी कहानी, शीत वसन्तकी कहानी, कितनी ही कहानियां पार्वतीने सीख डालीं। पार्वती खूब जी लगा कर लिखना पढ़ना करती थी। राजकन्या होनेसे क्या होगा, उनको कुछ भी अहङ्कार न था। वह गुरुआनीकी खूब भक्ति करती थी। गुरुआनी जो कहती थीं वही करती थी। पढ़नेके समय कुछ भी बदमाशी नहीं करती थी। किसीसे झूठ नहीं बोलती थी। ऐसी लड़कीको कौन नहीं प्यार करता! तुमलोग भी यदि जी लगाकर लिखना पढ़ना करो और सदा सच बात बोलो, (तो)सभी तुमलोगोंको प्यार करेंगे।

उन्नीसवाँ पाठ।

[illegible] = [illegible] भी	স্বামীকে = पतिको
রাঁধিতে = रसोई बनाना	ছুটাছুটি = दौड़-धूप
[illegible] = [illegible]	লুকোচুরী = लुकाचोरी
ছোঁড়া = छोकड़ा, [illegible]	বাল্যকাল = लड़कपन
[illegible] = [illegible] था	যৌবন = जवानी
[illegible] = [illegible]	চলিয়া গেল = बीत गया
কাটাইতে = काटने	

(২০)

[illegible]

(२८)

पार्वतीने केवल लिखना पढ़ना सीखा था, यही नहीं। गुरुआनीने उसको गाना भी सीखाया था। सन्ध्याके समय पार्वती जब गुरुआनीके पास गाती (थी) उस समय उसका मीठा स्वर सुनकर सभी मुग्ध हो जाते थे। देवता भी ऐसा सुन्दर गाना नहीं गा सकते थे। गानेके अलावे पार्वतीने (भोजन) पकाना भी सीखा था। उस समयकी राजकन्याएँ केवल बाबुआनी करके दिन नहीं काटती थीं। विवाहके बाद वे अपने हाथसे पकाकर स्वामीको खिलाती (थीं)। पार्वती केवल गुड़िया खेलती थी सो नहीं। बहुत बार सखियोंके संग दौड़-धूप करती, लुका-चोरी खेलती, और भी नाना प्रकारके खेल खेलती थी। इससे उसके शरीरमें जैसी शक्ति हुई थी, वैसा सौन्दर्य भी बढ़ गया था। इसी तरहसे पार्वतीका लड़कपन बीत गया और जवानी आ पहुँची।

तीसवाँ पाठ।

বাড়িয়া উঠিল = बढ़ उठा
বিকসিত হইয়া উঠে = खिल उठता है
চেহারা = चेहरा
চিত্রকর = चित्रकार तस्वीर [illegible]

আঁকিয়া রাখিয়াছে = अङ्कित कर रखी है
পায়ের = पैरकी
অঙ্গুলিতে = उँगलीमें
ফাটিয়া যাইত = फट जाती
[illegible]

আলতার রস = মহাবরকা রস হাঁটু = ঘুটনে
বাহির হইতেছে = নিকল রহা হৈ সরু = পতলা
শিরীষ = শিরীস
মাটিতে = মিট্টীমেঁ কুসুম = ফুল
স্থলপদ্ম = ভূমিকমল

(৩০)

পার্ব্বতীর শরীর স্বভাবতঃই সুন্দর। এখন যৌবনকাল—তাহার শরীরের লাবণ্য যেন আরও বাড়িয়া উঠিল। সূর্য্যের কিরণে পদ্ম যেমন বিকসিত হইয়া উঠে, নবযৌবনের উদয়ে পার্ব্বতীর শরীরও তেমনি অপূর্ব্ব শোভা ধারণ করিল। তখন তাহার চেহারা দেখিলে মনে হইত যে, কোন চিত্রকর যেন এক খানা ছবি আঁকিয়া রাখিয়াছে। পার্ব্বতীর পায়ের অঙ্গুলিতে যে নখ আছে তাহা এমন লাল এবং এমনই উজ্জ্বল যে, সে যখন হাঁটিয়া যাইত, তখন বোধ হইত যেন নখ হইতে আলতার রস বাহির হইতেছে। আর মাটিতে উহার এমনই জ্যোতিঃ হইত যে, লোকে মনে করিত, মাটিতে বুঝি স্থলপদ্ম ফুটিয়াছে। পার্ব্বতীর হাঁটু দুটি কেমন সুঠী, উপরে গোল এবং পরে ক্রমশঃ সরু হইয়া আসিয়াছে। উহাদের লাবণ্যই বা কত! লোকে কথায় বলে যে শিরীষ ফুলের মত কোমল জিনিষ আর কিছুই নাই। কিন্তু পার্ব্বতীর বাহু দুটি শিরীষ কুসুম অপেক্ষাও কোমল।

(১০)

পার্ব্বতীকা শরীর স্বভাবসে হী সুন্দর হৈ। অব যৌব-

नया समय (है)—उनके शरीरका लावण्य मानो और भी बढ़ उठा! सूर्यकी किरणसे कमल जैसे खिल उठता है, नये यौवनके उदयसे पार्वतीके शरीरने भी वैसी ही अपूर्व शोभा धारण की। उस समय उनका चेहरा देखनेसे जान पड़ता था कि किसी चित्रकारने मानो एक तस्वीर अंकित कर रखी है। पार्वतीके पैरकी उंगलियोंमें जो नख है वह ऐसा लाल और ऐसा ही उज्ज्वल है कि वह जिस समय चलती थी, उस समय मालूम होता था मानो नखसे अल्तेका रस निकल रहा है। और मिट्टीमें उसकी ऐसी ज्योति होती थी कि मनुष्य समझते थे कि मिट्टीमें मालूम होता है स्थलपद्म खिला है। पार्वतीके घुटने दोनों कैसे सुन्दर हैं। ऊपर गोल और फिर क्रमशः पतले होते आये हैं। उसमें लावण्य भी कितना (है)! लोग बातोंमें कहते हैं कि सिरीस फूलके समान कोमल पदार्थ और कुछ नहीं (है) परन्तु पार्वतीकी दोनों बाहें सिरीस फूलसे भी अधिक कोमल (हैं)।

इकतीसवाँ पाठ

[illegible] = मन्दिरमें
[illegible] = सीढ़ियाँ
[illegible] = तुलना, उपमा
[illegible] = मोड़

[illegible] = पीछेसे और
[illegible] = घूमते फिरते थे
[illegible] = घूमते घूमते
[illegible]

চুলের = কেশকী	ফলিত = ঝলতা
ঘন = ঘনা	ফোঁটা = বুঁদ

(৩১)

পার্ব্বতীর গলায় মুক্তার মালা। শিশিরের ফোঁটার মত সাদা সাদা মুক্তাগুলি তাহার বুকের উপর ঝক্ ঝক্ করিত। সুন্দর মুখের সহিত লোকে পদ্মের অথবা চন্দ্রের তুলনা দিয়া থাকে। কিন্তু পার্ব্বতীর মুখশ্রীর নিকট চন্দ্র ও পদ্ম উভয়েই পরাজিত। সেই অবধি দিনে চাঁদ উঠে না, আর রাত্রিতে পদ্ম ফোটে না। পার্ব্বতীর চক্ষু দুটি যেমন বিস্তৃত, নাসিকা তেমন উচ্চ এবং ভ্রূদুটি তেমন লম্বা। আর চুলের কথা কি বলিব। ঘন কৃষ্ণ কেশ, তাহা পেছনদিক দিয়া হাঁটু পর্য্যন্ত পড়িয়াছে। যৌবনকালে পার্ব্বতী এইরূপ সুন্দরী হইয়া উঠিল।

দেবতাদের দেশে নারদ নামে একজন বিখ্যাত মহর্ষি আছেন। তিনি সর্ব্বদা ইচ্ছামত এদিক ওদিক ঘুরিয়া বেড়ান। এক দিন হাটিতে হাটিতে তিনি পর্ব্বতরাজ হিমালয়ের বাড়ীতে উপস্থিত হইলেন। হিমালয় খুব সমাদরে তাঁহার অভ্যর্থনা করিলেন। তখনকার মুনিঋষিদিগের ভারী ক্ষমতা ছিল। তাঁহারা যাহা বলিতেন, তাহাই ফলিত। হিমালয়ের আদেশে পার্ব্বতী আসিয়া ঋষি নারদকে প্রণাম করিল। মহর্ষি পার্ব্বতীকে আশীর্ব্বাদ করিয়া বলিলেন, "দেব-দেব মহাদেব তোমাকে বিবাহ করিবেন, আর তুমি স্বামীর খুব সোহাগিনী হইবে"। মহর্ষির কথা মৃষা হইবার নয়। পর্ব্বতরাজ তখন মহাদেবকে জামাতারূপে

पाइबेन भाविया खुब खुसी हइलेन। विवाहेर वयस हइलेओ पर्वतराज पार्वतीर विवाहेर कोन आयोजन करिलेन ना। तिनि जानितेन महेश्वर इहारइ सती हइबे। ताइतेइ तिनि निश्चिन्त रहिलेन।

(३१)

पार्वतीके गलेमें मुक्ताकी माला (है)। शिशिरके बूँदकी तरह सफेद सफेद मोतियाँ उसके कलेजे पर चमकती हैं। सुन्दर मुखके साथ मनुष्य कमलकी अथवा चन्द्रकी तुलना दिया करते हैं। परन्तु पार्वतीकी मुखश्रीके सामने चन्द्र और कमल दोनो ही पराजित (हैं)। इसी समयसे दिनमें चन्द्रमा नहीं निकलता और रातमें कमल नहीं खिलता है। पार्वतीकी आँखें दोनो जैसी बड़ी, नाक वैसी ही ऊँची और भौंहें दोनो वैसी ही लम्बी (हैं)। और केशकी बात क्या कहूँगा। घने काले केश, वे चोटीसे घुटनेतक गिरे हैं। यौवनके समय पार्वती इतनी ही सुन्दरी हो गई।

देवताओंके देशमें नारद नामके एक विख्यात महर्षि हैं। वे सदा इच्छानुसार इधर उधर घूमते फिरते (हैं)। एक दिन घूमते घूमते वे पर्वतराज हिमालयके मकानपर उपस्थित हुए। हिमालयने बड़े आदरसे उनकी अभ्यर्थना की। इस समयके मुनि ऋषियोंका सारा सम्मान था। वे जो कहते थे, वहीं फलता था। हिमालयके आदेशसे पार्वतीने आकर महर्षि नारदको प्रणाम किया। महर्षिने पार्वतीको आशी

पाँट देकर कहा—"देव-देव महादेव तुम्हें विवाह करेंगे, और तुम स्वामीकी बड़ी ही सोहागिनी होओगी।" महर्षिकी बात झूठी होनेकी नहीं। पर्वतराज भगवान महादेवको जामाताद्भपमें पानेके विचारसे बड़े प्रसन्न हुए। विवाहकी अवस्था हो जानेपर भी पर्वतराजने पार्वतीके विवाहकी कोई तैयारी न की। वे जानते थे, (कि) महर्षिकी बात ही सच होगी। इससे वे निश्चेष्ट रहे।

बत्तीसवाँ पाठ ।

পূর্ব্বে = पहिले	মাখিলেন = लगाया, मला
একদা = एक समय	বাঘছাল = बघछल
দূরে থাকুক = दूर रहे	পরিধান = पहिरनेका वस्त्र
বরং = वरन्	পাগল সাজিয়া = पागल सजकर
ঝাঁপ দিয়া = कूदकर	সেই অবধি = तबसे
রাখিলেন = रखी	[illegible] = लगाईं

(৩২)

ভগবান মহাদেব পূর্ব্বে দক্ষরাজের কন্যা সতীকে বিবাহ করিয়াছিলেন। একদা দক্ষরাজ এক যজ্ঞ আরম্ভ করেন। তাহাতে সকলের নিমন্ত্রণ করা হয় কিন্তু দক্ষরাজ নিজকন্যা সতী এবং জামাতা মহাদেবকে নিমন্ত্রণ করিলেন না। সতী বিনা নিমন্ত্রণেই পিতার যজ্ঞে উপস্থিত হইলেন। দক্ষ সতীকে অভ্যর্থনা করা দূরে থাকুক বরং তাঁহার নিকটেই মহাদেবের নিন্দা আরম্ভ করেন। পতিনিন্দা শ্রবণে নিতান্ত দুঃখিত হইয়া সতী

অগ্নিকুণ্ডে ঝাঁপ দিয়া প্রাণত্যাগ করিলেন। সেই অবধি মহাদেব সংসার বাসনা পরিত্যাগ করিয়া সন্ন্যাসীর মত দেশ বিদেশে ভ্রমণ করিতে থাকেন। তিনি মাথায় জটা রাখিলেন, শরীরে ভস্ম মাখিলেন, আর বাঘছাল পরিধান করিলেন। এইরূপে পাগল সাজিয়া, তিনি নানাস্থানে ঘুরিতে লাগিলেন। প্রিয়তমা পত্নী সতীর বিরহে তিনি বড়ই কাতর হইয়া পড়িলেন। অবশেষে নানাস্থান পর্যটন করিয়া, তিনি হিমালয়ের পাদদেশে আসিয়া উপস্থিত হইলেন। সে স্থানটি অতিশয় নির্জন এবং তপস্যার পক্ষে বেশ উপযুক্ত; সেখানে এক কুটীর বাঁধিয়া তিনি উপাসনা আরম্ভ করিলেন। তাঁহার সঙ্গে অনেকগুলি অনুচর আসিয়াছিল, তাহারাও সেখানে রহিয়া গেল। মহাদেব কি কঠোর তপস্যাই আরম্ভ করিলেন!

(৪২)

भगवान् महादेवने पहिले दक्षराजकी कन्या सतीसे विवाह किया था। एक समय दक्षराजने एक यज्ञ आरम्भ किया। उसमें सभीका निमन्त्रण किया गया, परन्तु दक्षराजने अपनी कन्या सती और जामाता महादेवको निमन्त्रण नहीं किया। सती बिना निमन्त्रणके ही पिताके यज्ञमें उपस्थित हुईं। दक्षने सतीका अभ्यर्थना करना तो दूर रहा, वरन् उनके पास ही महादेवकी निन्दा आरम्भ की। पति-निन्दा सुननेसे अत्यन्त दुःखित हो सतीने अग्निकुण्डमें कूद कर प्राणत्याग किया। तबसे महादेव संसारवासना छोड़

[illegible]

तेतीसवाँ पाठ।

[illegible]

(३३)

[illegible]

দের মতন বিধান করেন। তিনি যে কি জন্য ধ্যান করিতে বসিলেন, তাহা তুমি আমি বুঝিতে পারিব না। দেবতারা যে সকল কার্য্য করেন, তাহা কি তুমি আমি বুঝিতে পারি? মানুষের জ্ঞান বুদ্ধি খুব কম। এই জ্ঞান দ্বারা ভগবানের কার্য্য কলাপের কারণ নির্দ্দেশ করা যায় না।

পর্ব্বতরাজ হিমালয় যখন শুনিতে পাইলেন যে, ভগবান মহাদেব নিজরাজ্যে আসিয়া উপস্থিত হইয়াছেন, তখন তাঁহার আর আনন্দের সীমা রহিল না। তিনি পশুপতির নিকট উপস্থিত হইয়া বিনীতবচনে তাঁহার অভ্যর্থনা করিলেন। বাড়ীতে ফিরিয়া আসিয়া তিনি পার্ব্বতী ও তাহার জয়া-বিজয়া নামক দুই সখীকে বলিলেন "তোমরা প্রত্যহ যাইয়া দেব-দেব পশুপতির সেবা কর।" পরদিন হইতে পার্ব্বতী পশুপতির সেবায় নিযুক্ত হইল। পার্ব্বতী উৎসাহ, রূপসী, এবং যুবতী; তপস্যাকালে নিকট থাকিলে তপস্যার বিঘ্ন হইতে পারে ইহা বুঝিয়াও মহাদেব পার্ব্বতীকে নিষেধ করিলেন না। কারণ মহাদেব অতি জিতেন্দ্রিয় পুরুষ ছিলেন। মহাপুরুষদের মন সাধারণের মত চঞ্চল নহে। যে সকল কারণে সাধারণ লোকে চঞ্চল হইয়া উঠে, মহাপুরুষগণ তাহাতে ভ্রূক্ষেপও করেন না। মহাপুরুষ-প্রকৃতির লক্ষণই এই। পার্ব্বতী প্রতিদিন শিবের পূজার জন্য ফুল স্নানের জন্য জল আনিয়া দিত, যজ্ঞের স্থান পরিষ্কার করিয়া রাখিত।

(২২)

मुनी जयदेनि हैहफर मानने एक पन्निका बुप

जलाता। ऊपर प्रचण्ड सूर्य, चारों ओर जलती हुई आग! दूसरा मनुष्य जानेसे अग्निकी गर्मीसे ही जल जाता! ऐसी प्रकार अवस्थामें इन्होंने ध्यान आरम्भ किया।

महादेव स्वयं ही भगवान (हैं), उनका ध्यान करके कितने ही मनुष्य कृतार्थ हो जाते हैं। महादेव स्वयं मङ्गलमय (हैं), वे सबोंका मङ्गल विधान करते हैं। वे किस लिये ध्यान करते बैठे (हैं), यह हम तुम नहीं समझ सकते। ईश्वरगण जो सब काम करते हैं, वह क्या तुम हम समझ सकते (हैं)? मनुष्यका ज्ञान बुद्धि बहुत कम (है)। इसी ज्ञान द्वारा ईश्वरके कार्य्यकलापका कारण नहीं निर्द्देश किया जाता।

पर्व्वतराज हिमालयने जिस समय सुना था कि भगवान महादेव उनके राज्यमें आ पहुंचे हैं, उस समय उनके आनन्दकी और सीमा न रही। इन्होंने वस्त्रादिके साथ जाकर विनीत भावमें उनकी अभ्यर्थना की। तदनन्तर गौरवसे इन्होंने पार्व्वती और उनकी सखी विजया नामकी दोनों सखियोंसे कहा 'तुम सब रोज जाकर देव देव महादेवकी सेवा करो।' दूसरे दिनसे पार्व्वती महादेवकी सेवा करने लगीं। पार्व्वती और (हैं), कुमारि (हैं) ऐसी अवस्थामें स्त्रियोंके सामने जानेसे स्त्रियोंके चित्त को चञ्चल, तब क्षणभर भी सदा ऐसे पार्व्वतीका ध्यान नहीं किया; क्योंकि महादेव बहुं जितेन्द्रिय पुरुष है। अनुपयुक्तकालमें जिस प्रकार मनुष्योंकी [illegible] नहीं (है)। जिस समय कन्दर्पने

साधारण मनुष्य चंचल हो उठते हैं, महापुरुषगण उनपर भ्रूक्षेप भी नहीं करते। महापुरुष प्रकृतिका लक्षण यही है। पार्वती प्रतिदिन शिवजी पूजाके लिये फूल और खानेके लिये जल ला देती और उनका स्थान साफ़ कर रखती (थी)।

चौंतीसवाँ पाठ।

ভার্য্যা = स्त्री	মনোনীত করা = चुनना
অনুসন্ধান = खोज	সুতরাং = इसलिये
কোথাও = कहीं भी	মিলিয়া = मिलकर
প্রলয় ঘটাইয়া ফেলিতে পারেন = प्रलय मचा सकते हैं	ঠিক = ठीक
	পুনরায় = फिर

(৮৪)

সতীর দেহত্যাগের পর হইতেই দেবগণ মহাদেবের জন্য একটি উপযুক্ত ভার্য্যার অনুসন্ধান করিতেছেন। সতী যেরূপ গুণবতী ও রূপবতী ছিলেন, ঠিক ঐরূপ একটি কন্যা পাইবার জন্য দেবগণ বহু পরিশ্রম করিয়াছেন বহু দেশ বিদেশ ঘুরিয়াছেন কিন্তু কোথাও ঐরূপ একটি কন্যা পাওয়া যাইতেছে না। মহাদেব ও সতীবিয়োগের পর হইতে সংসার বন্ধন ত্যাগ করিয়া সন্ন্যাসী সাজিয়াছেন। তাঁহাকে আবার গার্হস্থ্যে মনোনীত করা দেবগণের প্রধান উদ্দেশ্য হইলেও, তাঁহারা সাহস করিয়া মহাদেবের নিকটে সে কথা বলিতে পারেন না। তাঁহারা জানেন যে মহাদেব ক্রুদ্ধ হইলে সংসারে প্রলয় ঘটাইয়া ফেলিতে পারেন। সুতরাং তাঁহারা মহাদেব

মিলিয়া ঠিক করিলেন যে, একটি সুন্দরী কন্যার সহিত মহাদেবের বিবাহ সংঘটিত হইলে, পশুপতি নিজেই সন্ন্যাস ত্যাগ করিয়া পুনরায় গৃহস্থ হইবেন। এমন সময় এক দিন নারদ মুনি আসিয়া সংবাদ দিলেন যে, শিবের উপযুক্ত পাত্রী এত দিনে পাওয়া গিয়াছে। পর্ব্বতরাজ হিমালয়ের কন্যা পার্ব্বতীর ন্যায় গুণবতী ও রূপবতী রমণী স্বর্গে, মর্ত্ত্যে, কোথাও আর নাই। সুতরাং ইহার সহিতই মহাদেবের বিবাহ দিতে হইবে। মহর্ষির কথা শুনিয়া দেবগণ খুব আনন্দিত হইলেন। কিন্তু তাঁহাদের মধ্যে কেহই সাহস করিয়া শিবের নিকট বিবাহের প্রস্তাব করিতে সম্মত হইলেন না।

(३४)

सतीके देहत्यागके बादसे ही देवगण महादेवके लिये एक उपयुक्त पात्रीकी खोज करते हैं। सती जैसी गुणवती और रूपवती थीं, ठीक उसी तरहकी एक कन्या पानेके लिये देवतागण कितना परिश्रम करते हैं, कितने देश विदेशमें घूमते हैं, परन्तु कहीं भी ऐसी एक कन्या नहीं पाई जाती है। महादेव तो सतीवियोगके बादसे गार्हस्थ्याश्रमको त्याग करके सन्यासी बने हैं। उनको फिर गार्हस्थ्यधर्ममें लाना देवताओंका प्रधान उद्देश्य होनेपर भी वे साहस करके महादेवके पास यह बात कह नहीं सकते। वे जानते हैं कि महादेव क्रुद्ध होनेपर संसारमें प्रलय मचा दे सकते हैं। इसलिये उन सभोंने मिलकर ठीक किया कि एक सुन्दरी कन्याके

द महादेवका विवाह होजानेके पश्चात् स्वयं ही सन्तान ाकर फिर गृहस्थ होंगे। ऐसे ही समय एक दिन नारद ुनिने आकर समाचार दिया कि शिवको उपयुक्त पात्री ाली दिनोंसे पाई गई है। पर्वतराज हिमालयकी कन्या र्वतीकी भांति सुन्दरी और चतुरा रमणी धरतीमें, स्वर्गमें ीं भी और नहीं है। इसलिये उसके साथ ही महादेवका वाह करना होगा। महर्षिकी बात सुनकर देवगण बहुत ानन्दित हुए, परन्तु उनमेंसे कोई भी साहस करके शिवके ास विवाहका प्रस्ताव करनेमें समर्थ न हुए।

समाप्त

कामिनीरंजन तैल।

यह केश तैलोंका राजा, माथेकी बीमारियों का नाश, केशोंकी कान्ति, बालोंको घने और मनोहर बनानेमें सुखद कारी-गर और सुगन्धमें फूलदार बगलाके समान है। इस तैलको लगाते ही दिमाग तर हो जाता है, मस्तिष्कमें शक्ति मालूम होने लगती है, आंखोंमें तरावट आती है और पास बैठे हुए मनुष्य इसकी सुवास सुगन्धसे मस्त हो जाते हैं। इसकी सुगन्ध बाज़ारू तैलोंके समान क्षणिक नहीं बल्कि स्थायी है। इसमें वैद्यक शास्त्रमें कही उपयोगी दवाएँ मिलायी गई हैं जिनसे बालोंका झड़ना, [illegible], माथेकी दर्द, दिमागकी कमज़ोरी, स्मरण शक्तिकी कमी, आंखोंके आगे अंधेरा आ जाना, अधिक परिश्रम करनेपर मस्तिष्कका शून्य मालूम होने लगना, मस्तिष्क चक्कर खाना आदि बीमारियां बहुत जल्द आराम होता है। इसमें अन्य बाज़ारू तैलोंके समान [illegible] पाकेटोंक फिर भी इसमें [illegible]

[illegible]

[illegible] कम्पनी

[illegible]

नरसिंह प्रेस

कलकत्ते की छपी हुई मनुष्यमात्रके देखने योग्य अपूर्व्व और सर्व्वोत्तम पुस्तकें।

पाठक! नीचे उन पुस्तकोंका विज्ञापन दिया गया है जो हिन्दी संसारमें बड़ाभारी नाम कर रही हैं। जिनमें से कुछ एक दो दो तीन तीन संस्करण निकल चुके और होते जाते हैं। यह कारखाना और कम्पनी केवल पैसा कमानेके लिये नहीं बल्कि संसारमें विद्या फैलाने और सर्वसाधारणको लाभ पहुँचानेके लिये खोले गये हैं। ध्यान रहे कि इस प्रेसकी छपाईकी सफाई, पुस्तकोंकी उपयोगिता और दाम-कमीकी बड़ाई सबलोग मुक्तकण्ठसे कर रहे हैं। आशा है- [illegible]।

स्वास्थ्यरक्षा या तन्दुरुस्तीका बीमा।

संसारमें धनसे बढ़कर तन्दुरुस्तीकी कदर और कहीं नहीं है। संसारमें जितने काम हैं सबोंके लिये तन्दुरुस्त

रहनेकी सब से अधिक ज़रूरत है, हमारी स्वास्थ्य रक्षा उन्हीं भेदोंको बताती है, जिससे मनुष्य तन्दुरुस्त रहकर संसारके सब काम कर सकता है। इसमें कोकशास्त्रके वे भेद जिनके लिये लोग कितने ही रुपये खर्च किया करते हैं, बड़ी सरलतासे समझा दिये गये हैं। साथ ही आजमाए हुए नुसखे, चुटकुले, किफायती, मजेदार दवाएँ, बहुतसी ज़रूरी रङ्गीन बातें जिनसे गृहस्थको ज्यादा लाभ और सुख मिलकर इच्छा पूरी होती है इसमें साफ साफ लिख दी गई हैं। सच तो यह है कि यदि संसारके सभी सुख लूटने हों, यदि अपनी प्राणवल्लभाके प्रियतम बनना हो, यदि मोटी ताज़ी बलिष्ठ सन्तान की इच्छा हो और यदि डाक्टरोंको व्यर्थ पैसा न देना हो तो सारे रुपयोंका यह ग्रन्थ थोड़े ही दाममें एकदम ज़रूर मँगाकर पढ़िये। इसमें वे सभी बातें मालूम हो जायँगी जो हजारों रुपये खर्च करने पर भी नहीं मालूम हो सकती हैं। दाम १॥) डाकखर्च ।) सुन्दर मनमोहनी जिल्दवालीका दाम २) डाकखर्च ।)

देखिये 'आमृत' क्या लिखता है:—

"कोकशास्त्रकी इन बातोंके लिये आजकल लोग पैसा और समय खोकर डरे डरे टोलते हैं, उनके फायदेकी और उनके हितकी बातोंको इस पुस्तकने लिखकर इसबातमें बड़ा काम किया है।"

देखिये "भारतजीवन" बनारससे लिखता है:—

"[illegible]"

अंगरेजी शिक्षा।

प्रथम भाग।

(तीसरी आवृत्ति)

आजकल बिना अङ्गरेजीके काम नहीं चलता। यह वही किताब है जो थोड़ीसी हिन्दी जाननेवालोंको बिना उस्तादके थोड़े ही दिनोंमें अङ्गरेज़ी सिखा देती है। केवल इसके पहिले भागको पढ़ लेनेसेही तार लिखना, चिट्ठियोंपर पता लिखना, रसीद हुंडियां तथा मामूली अर्ज़ी लिखना और साधारण अङ्गरेज़ी बोलना, महीने दो महीनेमें ही आ जाता है। इस पुस्तकको पढ़कर व्यापारी, रेलमें, तारमें, डाकघरमें तथा छोटे छोटे कारखानोंमें काम करनेवाले बहुत ही ज़ियादा नफ़ा उठा सकते हैं। छपाई सफाई मनमोहनी है। १५० सफोंकी पुस्तकका दाम ।) डाकखर्च /)

देखिये "हिन्दी-बंगवासी" लिखता है:—

"[illegible]"

है जिसमें सहायता लेनेकी आवश्यकता नहीं, अस्तु शिक्षकका प्रयोजन नहीं जिस समय आपको फुरसत मिले उसी समय यह पुस्तक पढ़िये, थोड़े ही समयमें आपको अंगरेजीका ज्ञान हो जायगा।

देखिये "नारद" लिखता है :—

जो एक अक्षर भी अंगरेजी नहीं जानते हैं वो इस किताब से थोड़े ही दिनोंमें अंगरेजी बोल सकते हैं।

दूसरा भाग।

व्याकरण वह विद्या है, जिसके बिना भाषा कभी शुद्ध नहीं होती और न भाषाका पूरा पूरा ज्ञान ही होता है। इसलिये जो महाशय अंगरेजी-शिक्षाका पहिला भाग पढ़ चुके हों उन्हें यह दूसरा भाग अवश्यही पढ़ना चाहिये। यह उनकी भाषाको शुद्ध कर देगा, अंगरेजीकी लियाकतको बढ़ा देगा और अंगरेजी व्याकरण (English Grammar) के भेद अच्छी तरह समझा देगा। इस भागके पढ़जाने वालोंके लिये चिट्ठियाँ लिखना, पढ़ना, अंगरेजी अखबार पढ़ना और बोलना बिल्कुल आसान होजायगा। दाम १) डाकखर्च ।)

देखिये 'ब्राह्मण सर्वस्व" लिखता है :—

अंगरेजी सीखनेवालोंके लिये यह पुस्तक विशेष आवश्यक है, क्योंकि अंगरेजी व्याकरण अच्छी रीतिसे इसमें समझाया गया है। इस भागको दूसरी पुस्तक इसके देखनेमें नहीं आई।

देखिये "आत्मविद" लिखता है :—

[illegible]

देखिये "हितवार्त्ता" लिखते हैं :—

[illegible]

तीसरा भाग।

[illegible]

गहमरका "जासूस" लिखता है :

"इसी सिलसिलेमें यह तीसरा भाग बना है, इस भागमें शेष रही बहुत सी जरूरी और काममें आने वाली बातें दी गयी हैं।"

देखिये 'हितवार्त्ता' लिखती है :—

पुस्तक बहुत कामकी है यदि कोई इसका ध्यानसे अभ्यास करे तो अंगरेजी भाषा में उसका प्रवेश हो जा सकता है। आशा है पहले ही भागोंके समान ही इसका आदर होगा।

चौथा भाग।

इस भागमें अंगरेजी व्याकरण समाप्त करके और भी जितनी जरूरी बातें, चिट्ठी पत्रीके कायदे, वगैरह जो कुछ बाकी रह गया था सभी दे दिया गया है। कितने ही उपयोगी विषयोंसे यह भाग भरा है। हम दावेके साथ कह सकते हैं कि अंगरेजी शिक्षा चारों भागोंका ध्यानमें पढ़कर याद कर लेनेवाला अगर अंगरेजीकी चिट्ठियां, अखबार, किताबें, पढ़ना न कर सके तो दूना दाम वापिस देंगे। दाम १) डाक महसूल ≠)।

देखिये "हितवार्त्ता" लिखती है :—

"इन चारों भागोंका अभ्यास यदि मन लगाकर किया जाय तो अंगरेजी भाषाका बहुत कुछ ज्ञान अवश्य हो जायगा।"

हिन्दी बंगला शिक्षा।

प्रथम भाग।

(दूसरी आवृत्ति)

बंगला भाषाके बहुमूल्य और उत्तमोत्तम ग्रन्थोंका हिन्दी जाननेवालोंको मजा दिलानेके लिये ही यह ग्रन्थ बड़े परिश्रम और खर्च से तय्यार किया गया है। इससे हिन्दी जाननेवाला बंगला और बंगला जाननेवाला हिन्दी बहुत ही आसानीसे सीख सकता है और अच्छा ज्ञान पैदा कर सकता है। यह एकदम नये ढंगका ग्रन्थ है। जिन हिन्दुस्तानियोंको बंगभाषा के ग्रंथ पढ़नेका शौक हो अथवा बंगालमें रोजगार, व्यापार आदि करना हो उन्हें यह पुस्तक अवश्य २ पढ़नी चाहिये। दाम ॥) डाकव्यय ।)

"भारतमित्र" लिखता है :—

[illegible]

"[illegible]" लिखता है —

[illegible]

दूसरा भाग।

पूरा पूरा बंगला व्याकरण इस भागमें समझाया गया है। इसमें बंगलाकी छोटी छोटी कहानियों और उनके सरल अनुवाद भी दिया गया है। इसे पढ़कर बंगलाके प्रायः सभी ग्रन्थोंका भी अच्छा ज्ञान हो सकता है। बस, इससे इस बंगला सिखानेके दोनों भाग मनुष्यको बंगला का पण्डित कर देनेके लिये पर्याप्त हैं। दूसरे भागका दाम ॥) डाकखर्च ⁄)

चाणक्यमन्त्रीका ख़ज़ाना।

नीति ही मनुष्यको बुद्धि सिखलानेवाली चीज है। बिना नीति पढ़े मनुष्यको सभा चातुरी नहीं आ सकती और न ज्ञान ही हो सकता है। इसीलिये इस ग्रन्थमें विदुर, कणिक, चाणक्य, शुक्राचार्य, शेखसादी, भोजके आलकर [illegible] आदि सभा नीतिकारोंकी अनमोल को बातें खोज खोजकर भर दी गई हैं। यह वह ग्रन्थ है जो मनुष्यको हाज़िर जवाब, महाबुद्धिमान और नीतिज्ञ बना सकता है। यदि अपनी सन्तानको अक्लका पुतला बनाना हो तो यह ग्रन्थ अवश्य अवश्य पढ़ाइये। दाम १) डाकखर्च ⁄)

देखिये "बनवासी" लिखता है

"पुस्तक बड़ी [illegible] है [illegible]

[illegible] और इसको शोभा बढ़ानी चाहिये।

रामायण रहस्य (प्रथम भाग)

मातृ-भक्ति, पितृ-भक्ति, स्त्री-धर्म, मित्र-धर्म, राजनीति युद्धशिक्षा, गृह-नीति आदिका जैसा सुन्दर खाका रामायणमें खींचा है वैसा किसी ग्रंथमें भी नहीं। रामायण सरीखा भावमय, सुमधुर, नीतिभरा, उपदेशपूर्ण, शिक्षाप्रद, भक्तिमय ग्रंथ कोई भी नहीं हुआ। उसी रामायणका सरल, बालबोध हिन्दीमें यह उपन्यासों सरीखा अनुवाद है। साथही वाल्मीकि, अध्यात्म, अद्भुद, मयङ्क, तुलसीकृत सभी रामायणोंकी बातें भी इसमें ले ली गई हैं। ग्रंथ हाथमें लीजिये, छोड़नेका जी न चाहेगा। बाल और अयोध्याकाण्ड की सभी बातें इसमें आ गई हैं। यदि सब रामायणोंका स्वाद लेना हो तो इसे अवश्य पढ़िये। दाम ॥) डाकखर्च ≠)

देखिये "बंगवासी" लिखता है :—

पुस्तक [illegible] उपन्यासोंकी सी है, पढ़नेमें भी [illegible]

नरसिंह प्रेस २०१ हरीसन रोड, कलकत्ता।

भारतमें पोर्चुगीज़। (इतिहास)

यह वही पुराना इतिहास है जो अब तक हिन्दीमें छिपा हुआ था। इतिहास ही मनुष्यको अतीत शिक्षा और भविष्य उज्वलकी शिक्षा देता है। फिरंगियोंने भारत पर किस तरह अपने पैर जमाये, भारतसे किस तरह अथाह धन-रत्न ले गये, किन किन अत्याचारोंसे उन्होंने दुर्बल भारतवासियोंको सताया, फिर अंगरेजोंने किस तरह उनसे उद्धार किया आदि सभी बातें सन् सम्वत, तारीख़ तथा बड़े बड़े लोगोंके नक़्शे साथ इसमें लिखी गई हैं। इतिहास प्रेमी अवश्य इस पुराने इतिहासको पढ़ें और पढ़ायें। इससे बहुतसी नयी नयी बातें मालूम होंगी। दाम ॥) डाकखर्च ॥)

गुलिस्ताँ।

यह गुलिस्ताँ एक फूलोंका गुलदस्ता है। पर यह फूल वह है जो कभी मुर्झाता नहीं। इस ग्रन्थका क़रीब क़रीब सब भाषाओंमें अनुवाद होकर सभी देशोंमें गुलदस्ता सजा दिया गया है, पर बिचारी हिन्दी को यह गुलदस्ता अब नसीब हुआ है। गुलिस्ताँ के बनानेवाले शेखसादीने इस ग्रंथमें वह काम किया है कि जिससे अभी तक यह इन्ट्रेन्ससे बी० ए० तकमें पढ़ाया जाता है। यह मोतिका

प्रद है, इसको पढ़नेवाला सदा सुखी रह सकता है। लाख लाख रुपयोंकी एक एक बात अगर जाननी हो तो गुलिस्तां का सरल हिन्दी अनुवाद अवश्य पढ़िये। दाम १) महसूल ≡)

कलकत्ता "जासूस" लिखता है :—

यह पुस्तक हिन्दी साहित्यमें [illegible] हुआ है। इसकी सुरुचिपूर्ण [illegible] हिन्दी [illegible] हुई है। [illegible] और [illegible] [illegible] हो जाता।

राजसिंह या चंचलकुमारी।

(उपन्यास)

राजसिंह ऐतिहासिक उपन्यासोंका राजा है। राजसिंहकी वीरता, धीरता, अपूर्व-प्रतिभा, चंचलकुमारीका अनुपमेय प्रेम, एक तस्वीर देखकर मोहित होना, औरंगजेबकी कूट नीति, कुटिल औरंगजेबको राजसिंहका तीन तीनबार पराजित करना और बारबार नीचा दिखाना; राजपूतानी अबलाओंका धर्मकी रक्षा करना, और जेबुन्निसाका गुप्त प्रेम, घोर भयानक गुप्त घटनायें, आदि बातें राजसिंहके आदर्श [illegible] ऊँचा कर रही हैं। उपन्यास [illegible] है। ऐसा उपन्यास कम देखनेमें [illegible] महसूल ≡)

देखिये कलकत्तेका प्रसिद्ध "बंगवासी" क्या लिखता है:—

"इस पुस्तकमें लिखी [illegible] महाराणा राजसिंहको [illegible] [illegible] बाधा पर मनको अपूर्व आनन्द प्राप्त होता है।"

मानसिंह वा कमलादेवी।

(मनोरञ्जन सम्पादक लिखित।)

यह उपन्यास नहीं बल्कि मुसल्मानी अमलदारीका बायस्कोप है। महाराणा मानसिंहकी वीर-कार्यावलीसे यह ग्रंथ भरा है। वाह! अकबरके दाहिने हाथ मानसिंहके माथे कलङ्क! अपनी बहन को अकबरसे ब्याह देना! हेमलताका प्रेम! महाराणा प्रताप का साहस भरा उद्गार! कपटी बहराम! विचित्र बाजीगर! नूरजहाँ और शेरशाहका प्रेम! सलीम का क्रोध! सन्यासी की कूट-बुद्धि! मानसिंहके दुराचार! भयानक युद्ध! मानसिंहकी वीरता! ओह!! कैसा आश्चर्यजनक, कौतूहल वर्द्धक और शिक्षाप्रद उपन्यास है। विचित्र बात है! अद्भुद ग्रंथ है। दाम ॥) डाकखर्च ।)

देखिये "बङ्गवासी" क्या कहता है —

[illegible] शिक्षाप्रद भी है।

नरसिंह प्रेस २०१ हरीसन रोड, कलकत्ता।

राधाकान्त ।

(उपन्यास)

सामाजिक उपन्यासोंका यह महाराजा है। यदि धन-मद मतवाले अमीरोंका चरित्र, बुरी संगतिका भयानक फल, खुशामदियोंकी विचित्र चालें, रण्डियोंका स्वार्थभरा प्रेम, दरिद्रोंकी सच्ची प्रीति, मित्रकी सच्ची मित्रता आदिका पूरा पूरा स्वाद लेना हो तो इसे पढ़िये : मालूम हो जायगा संसार कितने रसोंसे भरा है। कैसी कैसी चालें होती हैं। सभी घटनायें विचित्र, अद्भुत और रसपूर्ण हैं। दाम १) डाकखर्च ।)

देखिये "बङ्गवासी" क्या कहता है :—

यह बड़ा ही सुन्दर उपन्यास है। [illegible]

गल्पमाला ।

उपदेश भरी तथा मनोमोहनी दस कहानियोंका यह एक कुंज है। सभी कहानियां सुगन्धित फूलोंकी तरह मनको मस्त किये देती हैं। कभी करुणा, कभी प्रेम, कभी पुरुषका मद और पापका पराजय, कहीं लोभ, कहीं

निर्लोभ आदि विषय पढ़ते पढ़ते पुस्तक छोड़नेको जी नहीं चाहता। इस उपन्यासोंका आनन्द एकमें मिलता है। दाम ।) डाक खर्च)

देखिये "हितवार्ता" क्या लिखती है :—

"बहुत ही अच्छा उपन्यास है।

बाल-गल्पमाला।

यह पुस्तक बालक-बालिकाओंको उन्नति पर पहुँचानेवाली एक कल है। जिसमें रामचन्द्रकी पितृभक्ति, भीष्म पितामहका प्रतिज्ञापालन, लक्ष्मण और भरतका भ्रातृप्रेम, श्रीकृष्णकी विनय, युधिष्ठिरका सत्य, वशिष्ठकी क्षमा, हरिश्चन्द्रका सत्य आदि और भी कितने ही गुण ऐसे भरे हुए हैं जो बालक बालिकाओंके हृदय पर चलते ही उन्हें उन्नतिकी शिखरपर ले जा सकते हैं। पुस्तक अत्यन्त पूजनीय है। दाम ।) डाकखर्च)

खूनी मामला।

(जासूसी उपन्यास)

खूनी मामला जासूसी उपन्यासोंका मुकुट है। भयानक ?ही, भीषण डकैती, खून, जासूसकी विचित्र कार्रवाई, डाकुओंकी चोट, जासूसका खूनीके फिराकमें जाना, साथ फँसना

सिर कटना, चोरोंका उपद्रव, भूतोंकी धामाकी, जादूगरका रहस्य-भेद करना, भूतोंको पकड़ना आदि विषय पढ़ते पढ़ते कभी पाठकोंको रोमांच हो जायगा, कभी क्रोधसे आंखें लाल होंगी और कभी दांतों उंगलियां काटनी पड़ेंगी। दाम ।) महसूल ।)

अलिफलैला (पहला भाग)

यह वही पुस्तक है जिसका संसारमें करीब करीब सब देशोंकी भाषाओंमें अनुवाद हो चुका है। यह हिन्दी अनुवाद भी सरल और बहुत उत्तम हुआ है। इस पहिले भागमें केवल "अलाउद्दीन और चिराग" का यह किस्सा है जो पाठकोंको पागल जैसा बना देगा। वाह! अलिफलैला भी एक अजायब भरा घर है। चोरोंकी लड़ाई, देव, दानव, राक्षसके भयानक काम, फिर चोरोंका उनको भी हराना आदि ऐसे विषय हैं कि जिनका ध्यान देनेसे अद्भुतसी बातें सीखनेमें आती हैं और चित्त भी प्रसन्न होता है दाम ॥) डाकव्यय ।)

प्रेम।

प्रेम मनुष्यकी देन-रत्न है [illegible] यह छोटीसी दुनिया [illegible] है

निस्वार्थ प्रेमका ऐसा सच्चा नमूना बहुत कम दिखाई देगा। प्रेमियोंको प्रेमका अवश्य आदर करना चाहिये। दाम ।) डाकखर्च ।)

बीरबलकी हाज़िर जवाबी और चतुराई।

दो भाग।

बीरबलकी हाज़िर जवाबी संसारमें प्रसिद्ध है। ग्रंथमें ऐसे अनूठे सवाल हैं जिनको सुनकर मनुष्य घबरा जाय, परन्तु बीरबलने सभीका जवाब दिया है। यह पुस्तक है जिसको पढ़ते पढ़ते मारे हँसीके लोट पोट हो जाना पड़ता है। पर मज़ा यह है कि इन किस्सोंमें उपदेश भरा है। अवश्य देखिये। दूसरा भी तय्यार हो चला। दो भागोंका दाम ।) डाकखर्च

कालज्ञान।

कालज्ञान सचमुच कालज्ञान है। यह वह पुस्तक है जिसके सहारे वैद्य अथवा हकीम यह सहजमें ही जान सकते हैं कि किस समय कौन सा काम करनेसे रोगी अच्छा हो जायगा। वैद्योंके लिये यह बड़े कामकी चीज़ है। दाम ।) डाकखर्च ।)

देखिये "हितवार्त्ता" क्या लिखती है :—

"...रोगियोंके लिये इस ग्रन्थकी अधिक आवश्यकता है। हर एक वैद्य और हकीमके काम की है।"

नरसिंह प्रेस, २०१ हरीसन रोड कलकत्ता।